प्रकाशक :

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

मुद्रक :

रेफिल आर्ट प्रेस

३१, बडतल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारभ से ही मिलता रहा है ।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षो से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबध मे विभिन्न स्रोतो से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का संकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लबे समय से प्रारभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं । यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी संतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारंभ करना सभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है । अनुमानत पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते है । हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काग्र

इमके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायरा, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ वरस गाठ, मौलिक कहानी सग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षो से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप मे इसका प्रकाशन सम्भव नही हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड का सचित्र और वृहत् विशेपाक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाए हमे प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत: सग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त सस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यो की ओर से निरतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अ श 'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निवध राजस्थान भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाऐं सग्रहीत की गई है। राजस्थानी कहावतो के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिहजी के सचिव कविवर उदयचद भडारी की ४० रचनाओ का अनुसधान किया गया है और महाराजा मानसिहजी की काव्य-साधना के सबध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रथावली के नाम मे एक ग्रथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का सग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६ बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिओ-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, विसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, डूंडलोद, थे ।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की वाधाओ के वावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरतर चलता रहे । यह ठीक है कि सस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय हैं, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश मे आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही वढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अत्यल्प अश ही प्रकाश मे आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नो को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हे सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अव तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नही हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एव सास्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस सस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तको का प्रकाशन किया जा रहा है।

१ राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमाजलि—	श्री भवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भड्डली—	श्री अगरचन्द नाहटा म: विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२६ हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन सग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके । सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोडे समय मे इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय वीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट वडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भंडार वीकानेर, मोतीचद खजाञ्ची ग्रंथालय वीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार वीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी वंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभडार वडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरदत्तजी गोविद व्य.स जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओं और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का सपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सवके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छत: स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादत:, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादवति साधव:।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन: मां भारती के चरण कमलो में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुन: उपस्थित होने का साहस वटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

वीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं० २०१७
दिसम्बर ३,१९६०.

रानी पद्मिनी — एक विवेचन

भारतीय इतिहास के अनेक व्यक्ति भावना विशेष के प्रतीक बन चुके हैं। भगवान् राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं तो कृष्ण तत्त्ववेत्ता और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ। पृथ्वीराज विलासप्रिय क्षत्रिय हैं तो जयचन्द्र मत्सरयुक्त देशद्रोही। एक ओर महाराणा प्रताप हैं तो दूसरी ओर राजा मानसिंह। इसमे भामाशाह है तो माधव और राघव चैतन्य भी। जहाँ दानवावतार अलाउद्दीन है, वहाँ पातिव्रत्य की रक्षा मे सहायक और जीव-दानी गोरा भी। सयोगिता सामान्य जन मानस मे महाभारत रचयित्री द्रौपदी का अवतार है। पद्मिनी अनुपम सौन्दर्य का ही नहीं, बुद्धियुक्त धैर्य, असीम साहस और पातिव्रत्य का भी प्रतीक बन चुकी है, और उसकी गाथा को अनेक रूप मे कवियों ने प्रस्तुत किया है। किन्तु किसी आदर्श-विशेष का प्रतीक बनना या अनेकशः वर्णित होना ही, किसी व्यक्ति की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। सम्भावना अवश्य हो सकती है कि ऐसे व्यक्ति रहे होंगे, किन्तु यह सम्भावना यदि इतिहास से ज्ञात तथ्यों के विरुद्ध हो तो उसे छोड़ने में भी कोई दोष नहीं है। पद्मिनी की ऐतिहासिकता

भी इसी कसौटी पर परख कर सिद्ध या असिद्ध की जा सकती है।

पद्मिनी का सबसे प्रसिद्ध वर्णन सन् १५४० ई० मे रचित जायसी के 'पद्मावत' काव्य मे है। उसके अनुसार पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा गधर्वसेन की पुत्री थी और रतनसेन चित्तौड का राजा था। हीरामन तोते के मुख से पद्मिनी के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रतनसेन योगी बनकर सिंहल पहुँचा और अन्ततः पद्मिनी से विवाह करने मे सफल हुआ। चित्तौड की राज्य सभा मे राघवचेतन नाम का एक तान्त्रिक ब्राह्मण था। राज्य से निर्वासित होने पर वह दिल्ली पहुँचा। उसने अलाउद्दीन के सामने पद्मिनी के सौन्दर्य की इतनी प्रशसा की कि सुलतान ने पद्मिनी की प्राप्ति के लिए चित्तौड पर घेरा डाल दिया। जब बल से काम न चला तो अलाउद्दीन ने छल से काम लिया। वह अतिथि रूप मे चित्तौड पहुँचा और दर्पण मे पद्मिनी का प्रतिबिंब देखकर मुग्ध हो गया। जब राजा उसे पहुँचाने के लिए सातव द्वार तक पहुँचा तो अलाउद्दीन ने उसे सहसा पकड़ लिया और कैदी बनाकर दिल्ली ले गया। कैद से छुटने की केवल मात्र शर्त यही थी वह पद्मिनी को दे दे। उधर गोरा और बादल की सलाह से पद्मिनी ने भी छल से राजा को छुडाने का निश्चय किया। वह सोलह सौ डोलियों मे स्त्री वेषधारी राजकुमारों को बिठला कर दिल्ली पहुँची। थोड़ी सी देर के लिए राजा से मिलने का बहाना कर पद्मिनी

ने राजा को कैद से छुडाया और स्वयं बलपूर्वक नगर से बाहर निकल गई। बादल उनके साथ चित्तौड़ पहुँचा। गोरा ने पीछा करने वाली मुसलमानी सेना से लडकर वीरगति प्राप्त की। कुछ समय के बाद राजा ने कुम्भलमेर पर आक्रमण किया और घायल होकर स्वर्गस्थ हुआ। पद्मिनी और उसकी सपत्नी नागमती सती हुई। इतने मे ही अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर फिर आक्रमण किया। इस बार अलाउद्दीन की विजय हुई। बादल युद्ध मे काम आया और चित्तौड पर मुसलमानों का अधिकार हुआ।

इस रूप मे कथा ऐतिहासिक मी प्रतीत होती है। किन्तु जायसी ने सब कथा को रूपक बतला कर उसकी ऐतिहासिकता को अत्यन्त संशयास्पद बना दिया है। उसने लिखा है, "इस कथा मे चित्तौड शरीर का, राजा मन का, सिंहलद्वीप हृदय का, पद्मिनी बुद्धि का, तोता मार्गदर्शक गुरु का, नागमती ससार के कामों की, राघव शैतान का और अलाउद्दीन माया का सूचक है[1]।"

फरिश्ता ने अपनी तवारीख पद्मावत से लगभग सत्तर वर्ष के बाद लिखी। उसकी कथा जायसी की कथा से मिलती

१—देखें डा॰ ओझा रचित, उदयपुर का इतिहास पहली जिल्द पृ॰ १८३-१८७

जुलती है। किन्तु उसने पद्मावती को राजा रतनसेन की पुत्री बना दी है[१]।

श्री अगरचन्दजी नाहटा के संग्रह मे गोरा बादल कवित्त नाम की एक लघुकाय रचना है। भाषा और शैली की दृष्टि से यह रचना पद्मावत से कुछ विशेष अर्वाचीन प्रतीत नहीं होती। गोरा बादल विषयक अन्य रचनाओ मे इसके अवतरण भी इसकी प्राचीनता के द्योतक है। इसमें भी रतनसेन गहलोत चित्तौड का राजा है। रानी नागमती के ताने से रुष्ट होकर वह सिंहल पहुँचा और पद्मिनी से विवाह कर चित्तौड वापस आया। खेल में अप्रसन्न होकर उसने राघव चैतन्य नाम के ब्राह्मण को देश से निकाल दिया। राघव चैतन्य ने दिल्ली पहुँच कर सब लोगों को अपनी अद्भुत तांत्रिक शक्ति से विस्मित कर दिया। उससे अलाउद्दीन ने पद्मिनी स्त्रियों के गुण सुने। सिंहल मे पद्मिनीयाँ प्राप्त थी। किन्तु सिंहल और भारत के बीच मे समुद्र होने के कारण वह सिंहल न पहुँच सका। जब उसने सुना कि रतनसेन के घर मे भी पद्मिनी रानी थी तो वह चित्तौड़ पहुंचा। राजाने उसका आतिथ्य किया। बातें करते करते राजा ने दुर्गका अन्तिम फाटक पार किया तो सुल्तान ने राजा को पकड़ लिया। जब मन्त्रियों ने रानी को दे कर राजा को छुडाने का निश्चय किया तो रानी

१—विशेष विवरण के लिए उपर्युक्त इतिहास देखें, पृ० १८८-१८९

गोरा के यहाँ पहुंची। उसने बादल को भी तैयार किया। पाँच सौ डोलियाँ तैयार हुई और एक एक डोली में पाँच-पाँच आदमी बैठे। बादल ने स्वयं पद्मिनी का रूप धारण किया, और राजा को बचा ले गया। गोरा युद्ध मे काम आया[1]।

संवत् १६४५ मे जैन कवि हेमरतन ने महाराणा प्रताप के राज्यकाल मे इस वीर गाथा की अपने शब्दों मे पुनरावृत्ति की। 'स्वामिधर्म' का प्रचार सम्भवतः इस नव्य रचना का मुख्य लक्ष्य था इसी कथा का परिवर्धन सवत् १७६० मे भागविजय नाम के अन्य जैन कवि ने किया[2]।

जटमल नाहर रचित 'गोरा बादल चौपई भी इस ग्रंथ में प्रकाशित हो रही है। इसका रचनाकाल वि० सं० १६८० है[3]। कथा मे कुछ द्रष्टव्य बातें ये है :—

(क) चित्तोड़ का राजा रतनसेन चौहान है।

(ख) एक भाट से पद्मिनी के विषय मे सुनकर वह सिंहल जाने का निश्चय करता है।

(ग) सिंहलराज ने बिना किसी आपत्ति के रतनसेन और पद्मावती का विवाह कर दिया और राघवचेतन को उसके साथ चित्तोड़ भेजा।

१—देखें इस संग्रह के पृ०१०९-१२८

२—देखें शोधपत्रिका भाग ३, अङ्क २ पृष्ठ १०५-११४ पर श्री अगरचन्द नाहटा का लेख।

३—पृ० १८२-२०८

(घ) राघव को व्यर्थ ही चरित्रभ्रष्ट समझ कर रतनसेन ने देश से निकाल दिया।

(ङ) समुद्र के कारण सिंहल से पद्मिनी स्त्री की प्राप्ति मे विफल होकर, अलाउद्दीन ने राघव चैतन्य के कहने पर चित्तौड पर चढ़ाई की।

(च) राजा ने अलाउद्दीन को पद्मिनी दिखलाई।

(छ) अलाउद्दीन ने द्वार पर राजा को पकड़ा।

(ज) मार से घबरा कर राजा ने पद्मावती को देने का सदेश चित्तौड़ भेजा।

(झ) मत्री पद्मावती को देने के लिए तैयार हुए। किन्तु गोरा और बादल ने युद्ध की सलाह दी बाकी कथा प्रायः वैसी ही है जैसी गोरा बादल कवित्त की और सम्भवतः उसीके आधार पर रचित है।

इसके बाद सम्वत् १७०५-१७०७ में रचित लब्धोदय की पद्मिनी चरित चौपई भी इस संग्रह मे प्रकाशित है[१]। कुछ परिवर्तन द्रष्टव्य है :—

(क) नागमती के स्थान पर इसमे रतनसेन की पहली रानी का नाम प्रभावती है।

(ख) सिंहल-प्रयाण की कथा कुछ और अतिरंजित है।

(ग) पद्मिनी के देने का विचार वही है, किन्तु मुख्यतः

१—देखें पृ० १-१०८

इस मत्रणा का दोष सपत्नी प्रभावती के पुत्र वीरभाण को दिया गया है।

(घ) कथा भाग को यत्र-तत्र परिवर्द्धित कर दिया गया है।

दलपत—दौलतविजय के खुमाण-रासो मे भी पद्मिनीकी कथा है[1] राघवचंतन्य से अलाउद्दीन ने राणा रतनसेन को पकडा। किन्तु इसमे रतनसेन जटमल नाहर की 'गोरा बादल चौपई' का कायर रतनसेन नहीं है, इसका अलाउद्दीन भी कुछ बादशाही शान रखता है। उसने गुण को परखना सीखा है।

राजपूत कालीन राजपूती का सुन्दर वर्णन भी इन शब्दों मे दर्शनीय है।

रजपूता ए रीत सदाई, मरणै मंगल हरखित थाई ॥४७॥
रिण रहचिया म रोय, रोए रण भाजे गया।
मरणे मगल होय, इण घर आगा ही लगें ॥ ४८ ॥

इस विषय की अनेक अन्य कृतियां भी प्राप्त है[2]। टॉड ने अग्रेजी मे पद्मिनी का चरित्र प्रस्तुत किया है। उसने रतनसेन के स्थान पर भीमसिंह को रखा। पद्मिनी सिंहलद्वीप के राजा हमीरसिंह चौहान की पुत्री है। गोरा पद्मिनी का

१—देखें पृ० १२९-१८१

२—देखें शोध पत्रिका, भाग ३, अङ्क २ में श्री नाहटाजी का उपर्युक्त लेख।

चाचा और बादल गोरा का पुत्र है। राणा के छूट जाने पर जब अलाउद्दीन दुबारा चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो राणियाँ जौहर करती है और भीमसिंह आदि दुर्ग के द्वार खोल कर लड़ते हुए वीर गति प्राप्त करते है।

पद्मावती विषयक इन सब कथाओं मे कुछ बातें एक सी है। पद्मावती सिंहल की राजकुमारी है, कथा का नायक रतनसेन और प्रतिनायक अलाउद्दीन है। दुर्मन्त्रणादायी तान्त्रिक ब्राह्मण राघवचैतन्य है। गोरा बादल पद्मावती की सतीत्व के रक्षा करने वाले हैं, और पद्मावती सती धर्म प्रतिष्ठिता राजपूत वीराङ्गना है। इनमे कौनसी बात तथ्य है और कौन सी अतथ्य यह एक विचारणीय विषय है। जहाँ तक सिंहल से पद्मावती का सम्बन्ध है, डा० श्री गौरीशकर हीराचन्द ओझा तक इसे सिंगौली का ठिकाना मानने के लिये विवश हुए है।

जो विद्वान् पद्मावती की ऐतिहासिकता स्वीकार नहीं करते उनकी सख्या पर्याप्त है। डा० किशोरीशरण-लाल ने कुछ वर्ष हुए पद्मावती की ऐतिहासिकता का खण्डन किया था। अब इस पक्ष का अंतिम और सबसे अधिक व्यापक विमर्श डा० कालिकारञ्जन कानूनगो ने प्रस्तुत किया है[१]। उनकी मुख्य युक्तियाँ निम्नलिखित है :—

१-Studies in Rajput history—A Critical analysis of the Padmavati legend.

(क) कथाओं में पद्मिनी के विषय में कोई ऐकमत्य नहीं है। इसके पिता का नाम विभिन्न रूप मे प्राप्त हैं। जायसी ने इसके पति का नाम रतनसेन तो टॉडने भीमसिंह दिया है। डा० ओझा ने उसके पति का नाम रत्नसिंह माना है, किन्तु वे उसके लिये कोई प्रमाण उपस्थित न कर सके है।

(ख) वरनी, इसामी, निजामुद्दीन आदि मुसलमान इतिहासकारों ने कहीं पद्मिनी के नाम का उल्लेख नहीं किया है।

(ग) डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाइनुल फ़ुतूह के आधार पर पद्मिनी की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। वास्तव मे इस ग्रन्थ मे पद्मिनी की ओर किञ्चित्-मात्र भी सकेत नहीं है।

(घ) पद्मिनी सर्वथा जायसी की कल्पना है, और पद्मिनी-विषयक जितने उल्लेख है वे सब जायसी के वाद के है।

उपर्युक्त युक्तियों मे अनेक सत्य होती हुई भी अनैकान्तिक हैं। पद्मावती-विपयक प्रायः सभी प्राप्त कथाएँ घटनाकाल से दो सौ वर्ष से भी अधिक वाद की है। इस दीर्घकाल में वंशादि के विषय मे कुछ भ्रान्तियाँ स्वाभाविक है। पद्मावती और सिंहल का सम्बन्ध कुछ कवि-समय सिद्ध से है। रहा पति का नाम, इस विषय में भ्रान्ति केवल उन्नीसवीं शताब्दी के लेखक टॉड को रही है। महारावल रत्नसिंह के समय का वि० सं०

१३५६ माघ सुदि ५ बुधवार का एक शिलालेख प्राप्त है। अलाउद्दीन ने सवत् १३५६ माघ सुदि के दिन चित्तौड़ पर प्रयाण किया और वि० स० १३६० भाद्रपद सुदि १४ के दिन किला फतह हुआ। इन प्रमाणों से निश्चित रूप मे कहा जा सकता है कि वि० स० १३५६-६० मे रत्नसिंह ही मेवाड़का राजा था और उसी ने अलाउद्दीन से युद्ध किया। यदि पद्मिनी अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चित्तौड की रानी थी तो उसका पति वि० स० १३५६ के शिलालेख का यही 'महा-राजकुल रत्नसिंह रहा होगा। इतिहास के विद्यार्थियो को यह कह कर भ्रान्त करने की आवश्यकता नहीं है कि मेवाड़ के इतिहास से हमे चार रत्नसिंह ज्ञात है। अतः हम यह निश्चित ही नहीं कर सकते कि इनमें कौन पद्मिनी का पति रहा होगा।

दूसरी युक्ति केवल मौन के आधार पर है। वास्तव मे राजपूत इतिहास का मुसल्मान इतिहासकारो को ज्ञान ही कितना है कि हम कह सकें कि प्रामाणिक इतिहास इतना ही है; इससे अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। स्वयं अलाउद्दीन के विषय मे अनेक बातें हैं जिनका वर्णन हिन्दू लेखकों ने किया है, किन्तु बरनी इसामी आदि जिनके बारे मे सर्वथा मौन है[१]। खीची

१०—हमारे 'प्राचीन चौहान राजवंश' में हम्मीर और कान्हडदेव के वर्णन पढ़ें।

अचलदास की वचनिका मे अनेक ऐसे जौहरों का उल्लेख हैं जिनका वर्णन हमे मुसल्मानी तवारीखो मे नहीं मिलता[1]। हम जिस प्रकार मुसल्मानी तवारीखों के मौन के कारण उन्हें असत्य मानने के लिए विवश नहीं है, उसी तरह उनका मौन हमे पद्मिनी को भी कल्पित मानने के लिए विवश नहीं करता।

डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने खजाईनुल फुतूह के आधार पर पद्मावती की सत्ता का प्रमाण उपस्थित किया था। डा० कानूनगो ने उसका निराकरण किया है। खजाइनुल फुतूह के वर्णन का सारांश बहुत कुछ अमीरखुसरो के ही शब्दो मे निम्नलिखित है[2]।

८ जमादि उस सानी, हि० स० ७०२ सोमवार के दिन विश्वविजयी (अलाउद्दीन) ने चित्तोड जीतने का निश्चय किया। दिल्ली से सेना चित्तौड़ की सीमा पर पहुँची। दो महीने तक 'तलवारो की बाद पहाड़ की कमर तक चढी पर आगे न बढ़ सकी।' उसके बाढ मगरिबियों से दुर्ग पर पत्थरों की वर्षा होने लगी। ११ मुहर्रम, हि० स० ७०३ सोमवार के दिन 'उस युग का सुलेमान' [अलाउद्दीन] दुर्ग मे पहुँचा। "यह भृत्य [अमीर खुसरो] जो सुलेमान का पक्षी है उसके

१—श्री नरोत्तमदास जी स्वामी द्वारा सपादित अचलदास खीचीरी वचनिका में हमारी भूमिका पढें।

२—देखें जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, जिल्द ८, पृष्ठ ३६९-३७१

साथ था। वे बार बार 'हुदहुद हुदहुद' चिल्ला रहे थे। किन्तु मैं [अमीर खुसरो] वापस न लौटा, क्योंकि मुझे डर था कि शायद सुल्तान पूछ बेठे, 'मुझे हुदहुद क्यों नहीं दिखाई पड़ता ? क्या वह अनुपस्थित है ?' और यदि वह ठीक कैफियत मागे तो मैं क्या बहाना करूँगा।" उस समय वर्षाऋतु थी। "सुल्तान के क्रोध की बिजली से आहत होकर राय एड़ी से चोटी तक जल उठा और पत्थर के द्वार से इस तरह उछल निकला जेंसे आग पत्थर से निकलती है। पानी मे पड़ कर वह शाही शामियाने की तरफ दौड़ा। इस तरह उसने तलवार की बिजली से अपने को बचा लिया। हिन्दू कहते है कि बिजली पीतल के वर्तन पर अवश्य गिरती है और राय का मुँह भय के मारे पीतल सा पीला पड़ गया था। यह निश्चित है कि वह तलवार और बाणों की बिजली से सुरक्षित न रहता, यदि वह शाही शामियाने के दरवाजे तक न पहुँचता।"

इसी अवतरण पर टिप्पण करते हुए प्रोफेसर हबीब ने लिखा था, "हुदहुद वह पक्षी है जो सुलेमान के पास सेबा की रानी बलकिस के समाचार लाता है। यह स्पष्ट है कि सुलेमान के सेवा आदि की तर्फ संकेत के लिये पद्मिनी उत्तरदायी है[1]।" चित्तोड की बलकिस तो उस समय भस्म हो चुकी थी। फिर उस युग के सुलेमान, अलाउद्दीन को उसके समाचार कौन देता ? डा० कानूनगो ऊपर दिए हुए अवतरण में पद्मिनी की

१—वही पृष्ठ ३७१, टिप्पणी १

ओर कोई संकेत नहीं पाते। किन्तु सकेत वास्तव मे तो अत्यधिक अस्पष्ट नहीं है। अन्यथा इसमें हुदहुद, शेवा, सुलेमान आदि के लिए विशेष कारण ही क्या था ?

यह अवतरण अन्य दृष्टियों से भी महत्वपूर्ण है। यह ठीक है कि इससे पद्मिनी के आरम्भिक जीवन पर कुछ प्रकाश नहीं पडता। न हम इसके आधार पर यही सिद्ध कर सकते है कि गोरा बादल पद्मिनी को छुडा लाए थे। किन्तु चित्तोड़ में अन्ततः क्या हुआ इसकी झाँकी इसमे अवश्य प्रस्तुत है। चित्तोड का घेरा छः महीने तक चला। जब बचाव की आशा न रही तो राजपूत दरवाजा खोलकर शाही शामियाने की ओर बढ चले[1]। खजाइनुल फुतूह से ही सिद्ध है कि अलाउद्दीन के हाथो 'हजारों' विद्रोही मारे गए। किन्तु रत्नसिंह या तो पकड़ा गया, या उसने आत्मसमर्पण किया। दुर्ग बादशाह के हाथ आया किन्तु जिस बलकिस की आशा में युग का सुलेमान वहाँ पहुंचा था, वह उस समय समाप्त हो चुकी थी। वह किसी भी हुदहुद की पहुंच के बाहर थी।

रत्नसिंह की इस अतिम गति का कुछ आभास हमे नाभिनन्दन जिनोद्धार ग्रन्थ से भी मिलता है जिसका रचनाकाल सन् १३३६ ई० है। उसमे अलाउद्दीन की अनेक विजयों का वर्णन करते हुए कक्कसूरि ने यह भी लिखा है कि उसने चित्रकूट के राजा को पकडा, उसका धन छीन लिया, और

१—शाही शामियाने पर कूच का वर्णन प्राय हर एक जौहर के बाद है।

कण्ठ से (रस्सी) बांध कर नगर नगर में बन्दर की तरह घुमाया (३.४)। यह मानने की इच्छा तो नहीं होती कि मेवाड़ाधिपति को भी ऐसे दिन देखने पड़े थे। किन्तु एक सम-सामयिक और निष्पक्ष उद्धरण को असत्य कहकर टालना भी कठिन है। कहा जाता है कि महाप्रतापशाली कविजनवन्दित कविश्रेष्ठ मुञ्ज परमार की भी कभी ऐसी ही दशा हुई थी।

पद्मिनी और रतनसेन के जीवन की इस अन्तिम झांकी से पूर्व के वृत्त के लिये हमें पद्मिनी सम्बन्धी साहित्य को ही आधार रूप में ग्रहण करना पड़ता है। यदि पद्मिनी सम्बन्धी सब साहित्य पद्मावत मूलक हो और पद्मावत सर्वथा कल्पनामूलक, तो पद्मावती की ऐतिहासिकता को हम बहुत कुछ समाप्त ही समझ सकते हैं। किन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है। जायसी ने रूपक की रचना अवश्य की है, किन्तु उसने हर एक गुण और द्रव्य के अनुरूप ऐतिहासिक पात्र चुना है। इसमें अलाउद्दीन, चित्तौड़ और सिंहल ही नहीं, पद्मिनी और राघवचैतन्य भी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं।

मन्त्रवादी के रूप में राघव चैतन्य का उल्लेख वृद्धाचार्य प्रबन्धावली के अन्तर्गत जिनप्रभसूरि प्रबन्ध में वर्तमान है। श्री लालचन्द भगवानदास गाँधी ने इसे पन्द्रहवीं और श्री अगरचन्द नाहटा ने सोलहवीं शती की कृति मानी है। श्री नाहटा जी ने सम्भवतः इसके संवत् १६२६ की एक प्रति भी देखी है। एपिग्राफिआ इण्डिका, भाग १, पृष्ठ १६२-१६४ में

प्रकाशित ज्वालामुखी देवी का स्तव भी राघवचैतन्य मुनि की कृति है। यह राघवचैतन्य सम्भवतः जिनप्रभसूरि प्रबन्ध के राघव चैतन्य से अभिन्न है। शार्ङ्गधर पद्धति का रचयिता शार्ङ्गधर राघव का पौत्र था और उसने अत्यन्त आदर पूर्वक श्री राघव चैतन्य के श्लोकों को उद्धृत किया है। इससे सिद्ध है कि राघवचैतन्य की ऐतिहासिकता जायसी के पद्मावत पर निर्भर नहीं है। और यही बात अब दृढता के साथ पद्मावती के विषय मे भी कही जा सकती है।

छिताई चरित्र का एक संस्करण प्रकाशित हो चुका है। दूसरा श्री अगरचन्द जी नाहटा द्वारा सम्पादित होकर शीघ्र ही इन्दौर से प्रकाशित होने वाला है। इसकी रचना के समय महानगर सारंगपुर मे सलहदी शासन कर रहा था। सलहदी की मृत्यु ६ मई, सन् १५३२ के दिन हुई। इससे स्पष्ट है कि छिताई चरित की रचना इससे पूर्व हुई होगी। विशेष रूप से ग्रन्थ रचना का वर्णन इस पद्य मे है।

पन्द्रह सइ रु तिरासी माता।
कछुक सुनी पाछली बाता ॥१०॥
सुदि आपाढ सातइं तिथि भई।
कथा छिताई जपन लई ॥

इसके अनुसार छिताई चरित की रचना वि० स० १५८३ तदनुसार सन् १५२६ ई० में हुई। पद्मावत का रचनाकाल सन् १५०० है। अतः यह निश्चित है कि छिताई चरित अपनी

कथा के लिये पद्मावत का ऋणी नहीं हो सकता। अलाउद्दीन के देवगिरि पर आक्रमण के समय जब समरसिंह वहाँ से निकल गया और अलाउद्दीन को यह आशंका हुई कि यादवराज रामदेव की पुत्री भी वहाँ से निकल गई होगी तो उसने राघव चैतन्य से कहा—

मेरौ कहिउ न मानइ राउ।
बेटी देई न छाडइ ठाऊं ॥४२३॥
सेवा करइ न कुतबा पढई।
अहि निसि जूझि बराबर चढई।
धम्नि सौंरसी देसतरु गयो।
अति धोखंड मेरे जीय भयो ॥४२४॥
रनथभौर देवल लगि गयो।
मेरो काज न एकौ भयो।
इउं बोलइ ढीली कउ धनी।
मइ चीत्तौर सुनी पदुमिनी ॥४५५॥
बंध्यौ रतनसेन मइ जाइ।
लइगो बादिल ताहि छंडाइ।
जो अबके न छिताई लेऊं।
तो यह सीसु देवगिरि देऊं ॥४५६॥

"राजा (रामदेव) मेरा कहना नहीं मानता। वह न बेटी देता है और न स्थान छोड़ता है। वह न सेवा करता है; और न (आधीनता सूचक) खुत्वा पढता है। समरसिंह निकल

कर देशान्तर में चला गया है। इससे मेरे जी मे अत्यन्त धोखा हुआ है। मैं देवल (देवी) के लिए रणथंभोर गया ; किन्तु मेरा एक काम भी सिद्ध न हुआ।" (फिर) दिल्ली के स्वामी ने कहा, "मैने चित्तौड मे पद्‌मिनी की सत्ता के बारे में सुना। मैंने जा कर रत्नसेन को बाँध लिया, किन्तु बादल उसे छुडा ले गया। जो अबकी बार मैंने छिताई को न लिया तो यह सिर मैं देवगिरि को अर्पण करूँगा।"

इस अवतरण से सिद्ध है कि जायसी के पद्‌मावत से पूर्व ही पद्‌मिनी की कथा और अलाउद्दीन की लम्पटता पर्याप्त प्रसिद्ध प्राप्त कर चुकी थी। जायसी ने पद्‌मावती, रत्नसेन और बादल का सृजन नहीं किया। ये जनमानस मे उससे पूर्व ही वर्तमान थे। समयानुक्रम से इस कथा मे अनेक परिवर्तन भी हुए होंगे। यह सम्भव नहीं है कि पद्‌मावती की कर्णपरम्परागत गाथा सोलहवीं शताब्दी तक सर्वथा तथ्यमयी ही रही हो। किन्तु उसे जायसी की कल्पना मानने की व्यर्थ कल्पना को अव हम तिलाञ्जलि दे सकते है। सन् १३०२-३ में रत्नसेन (रत्नसिंह) की सत्ता निर्विवाद है। राघवचैतन्य ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। परम्परा-सिद्ध पद्‌मावती की सत्ता भी असम्भावना की कोटि मे प्रविष्ट नहीं होती। विषय-लोलुप अलाउद्दीन, सती पद्‌मिनी, वीरव्रती गोरा और बादल ये सब ही तो स्वचरित्रानुरूप है। हर्षचरित मे भ्रातृजाया की रक्षार्थ कामिनी-वेष को धारण कर शत्रुशिविर मे पहुँच कर

शकाधिपति को मारने वाले साहसाङ्क चन्द्रगुप्त के इतिवृत्त को पढ़ने वालों के लिए तो बादल का वीर कार्य भी भारतीय परम्परा के अनुकूल है। बादल ने केवल अपने स्वामी की रक्षा की। चन्द्रगुप्त ने तो अपनी भ्रातृजाया को बचाया और 'परकलत्रकामुक' विजयी शकराज का भी हनन किया था[1]। शौर्य और साहस के ऐसे कार्यों से भारतीय इतिवृत्त देदीप्यमान है, और इन्हीं से भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा हुई है।

'नवीन वसन्त'
आश्विन शुक्ला चतुर्थी, दशरथ शर्मा
वि० सं० २०१८

१—"अरिपुरेच परकलत्रकामुकं कामिनीवेशगुप्तश्च चन्द्रगुप्तः शकपतिम शातयत्" (पृ० १९९-२००)।
इसी पर टीका में शङ्कर ने लिखा है, "शकानामाचार्य शकाधिपति। चन्द्रगुप्तभ्रातृजायां ध्रुवदेवीं प्रार्थयमानश्चन्द्रगुप्तेन ध्रुवदेवी वेष-धारिणा स्त्रीवेषजनपरिवृतेन रहसि व्यापादित इति।"

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति मे संतपुरुष व सतियों के जीवनचरित का बडा भारी महत्व है। महान् व्यक्तियों के उदार चरित युग-युग तक जनता के जीवन-पथ मे दीपस्तंभ का काम करते है। कथानायक चाहे पौराणिक हो या ऐतिहासिक उनकी जीवन सौरभ समान रूप से जनमानस को अनुप्राणित करती रहती है। सती पद्मिनी और गोरा बादल का चरित सतीत्त्व और स्वामीधर्म का प्रतीक होने से मेवाड के कण कण में व्याप्त हो गया और विभिन्न कवियों ने उस पर काव्य बना कर श्रद्धाञ्जली अर्पण की। सं० १६४५ मे कवि हेमरत्न ने, स० १६८० मे नाहर जटमल ने, फिर सं० १७०७ मे लब्धोदय ने, उसके बाद कवि दलपतविजय ने 'खुमाण रासो' में सती पद्मिनी की गौरव-गाथा गायी है। इनमे हेमरत्न की कृति को छोडकर अवशिष्ट तीनों कृतियाँ इस ग्रंथ मे प्रकाशित की जा रही है। इन तीनों से पूर्ववर्ती रचना 'गोरा बादल कवित्त' है, जो प्राचीन व महत्त्वपूर्ण होने से इस ग्रथ के पृ० १०६ मे प्रकाशित किया गया है। सभी कवियों ने अपने काव्यो मे इस अज्ञात कर्तृक कृति के कवित्तों को उद्धृत कर प्रामाणिक माना है। किस कवि की कृति मे कहाँ कौनसा पद्य अवतरित है यह नीचे की पंक्तियों मे बताया जाता है।

गोरा बादल कवित्त का २२वाँ कवित्त हेमरत्न ने पद्याङ्क ५७ और लब्धोदय ने पृ० २८ में उद्धृत किया है।

पद्याङ्क २३ व २६ को हेमरत्न ने पद्याङ्क ६६-६६ में दिया है।

प० ३१ को हेमरत्न ने थोड़े पाठान्तर से प० ८६ में दिया है।

प० ३५ कवित्त हेमरत्न ने प० ६७ मे उद्धृत किया है।

प० ४१वें छन्द को लब्धोदय ने पृ० ५८ में एवं खुमाणरासो पृ० १४३ में उद्धृत किया है।

प० ४२ व प० ४३ को हेमरत्न ने प० २५३ व प० २८८ मे उद्धृत किया है।

प० ५२ को हेमरत्न ने प० ३६८ में लिया है।

प० ५८ कवित्त को हेमरत्न ने प० ३४२ मे व खुमाणरासो पृ० १५५ मे लिया गया है।

प० ५६-६० को हेमरत्न ने प० ३४४-४५ मे उद्धृत किया है।

प० ७२-७३-७४ को हेमरत्न ने प० ३६६-३६७ व ५६६ में लिया है।

प० ७७-७८ को हेमरत्न ने प० ६१२-१३ मे एवं खुमाणरासो पृ० १७६ मे लिया है।

-प० ८१ को हेमरत्न ने प० ६२० तथा खुमाणरासो प० १८० में उद्धृत किया है।

इस मे राणा रतनसिंह को गुहिलोत व गोरा बादल को चौहान वंशीय बतलाया है। गाजन्न के पुत्र बादल की आयु २३ वर्ष की बतलाई है जो समीचीन प्रतीत होती है। इसमें -

राघव को परदेशी विप्र बतलाया है जिसके पाण्डित्य से प्रभावित होकर राणा ने अपने पास रखा। एक दिन खेल मे राघव के पराजित होने पर राजा ने उससे द्रव्य मागा तो वह कुपित हो गया। राजा द्वारा निर्वासित हो वह चितौड से निकला और उसने राणा के पैरों मे बेडियाँ डलवाने की प्रतिज्ञा की। राघव ने मन्त्रसिद्धि द्वारा योगिनी को आराधन किया और वर प्राप्त कर दिल्ली चला गया। उसने सुलतान अलाउद्दीन को निशिचर्या मे दरवेश के भेप में आने पर दिल्ली का सुलतान होने का आशीर्वाद दिया और प्रतीति प्राप्त कर शाही दरबार मे प्रविष्ट होकर राजमान्य हो गया। छन्द पद्याङ्क ५० मे लिखा है कि गोरा ५ वर्ष से राणा के ग्राम-ग्रास को अस्वीकार कर अपने घर बैठा है।

प्राचीनता की दृष्टि से हेमरत्न की कृति का स्थान गोरा बादल कवित्त के बाद आता है। इसके छन्द भी परवर्त्ती कवियों ने उद्धृत किये हैं। पद्याङ्क १७०-७१-७२-७३ को लब्धोदय ने पृ० ३१-३२ में उद्धृत किये है तथा खुमाणरासो मे दलपतविजय ने पद्याङ्क ७०-७१-७२-७३ मे उद्धृत किये है। पद्याङ्क २८८ को खुमाणरासो (पद्याङ्क २४६३) मे उद्धृत किया है। जटमलनाहर ने इसके पद्याङ्क ५६७ छन्द को पद्याङ्क ११० मे उद्धृत किया है। लब्धोदय ने अपनी चौपाई के प्रारम्भ मे "पूरव कथा संपेख" शब्दों द्वारा जिस पूर्व रचना का उल्लेख किया है वह कृति जटमल की न होकर हेमरत्न की ही होनी

चाहिए क्योंकि वह रचना मेवाड मे और विशेष कर नररत्न भामाशाह के भाई कावेडिया ताराचन्द के आग्रह से गुंफित हुई थी। अतः इसका पर्याप्त प्रचार हो गया था।

हेमरत्न के पश्चात् जटमल नाहर की गोरा वादल चौपई निर्मित हुई, यह कृति अपेक्षाकृत छोटी है और इसमे कुल १५३ छन्द है। इस सुन्दर हिन्दी रचना का निर्माता कवि जटमल नाहर पंजाव का निवासी था अतः हेमरत्न व लब्धोदय आदि इतर कवियों की भांति राणा वंश से अभिज्ञ न होने के कारण रतनसेन को जायसी की भाति चौहान वंश का लिखा है जव कि वे गुहिलोत वंश के थे। जटमल ने राघव चेतन को सिंहलद्वीप से पद्मिनी के साथ आया हुआ लिखा है जव कि अन्य कवि उसे चित्तौड निवासी मानते है। जटमल एक कथा और भी लिखता है कि राणा ने मोहवश पद्मिनी का मुंह देखे विना अन्नजल न ग्रहण करने को नियम ले रखा था। एक दिन वह दो घडी रात रहते राघव चेतन को साथ लेकर शिकार को चल पड़ा। उसके अत्यन्त तृषातुर होने पर नियम पालनार्थ राघव ने त्रिपुरा की कृपा से पद्मिनी की तादृशमूर्त्ति वनाई जिसके जंघा पर तिलका चिन्ह कर दिया। राना ने राघव के चरित्र पर संदेह लाकर घर आते ही रुष्ट होकर उसे निर्वासित कर दिया। वह योगी का भेष धारणकर वाद्य-यंत्र वजाते हुए दिल्ली पहुँचा और वनखण्डमे निवास करने लगा। एक दिन सुलतान अलाउद्दीन शिकार खेलने के लिए वन में आया तो

राघव ने संगीतध्वनि से सारे मृगों को अपने पास आकृष्ट कर लिया। शिकार न पाकर सुलतान राघव के स्थान में आया और घोड़े से उतर कर उसके पास गया। वह उसकी संगीत-कला से इतना प्रभावित हुआ कि उसे अपने साथ दिल्ली ले आया। राघव चेतन ने सुलतान से ५०० गाव प्राप्त किये ऐसा पद्मिनी चरित्र चौपई पृ० २७ में उल्लेख है।

जटमल पद्मिनी के सौन्दर्य्य की ओर सुलतान को आकृष्ट करने के लिए जीवित शशक की कोमलता व हेमरत्न पाँख लाने का उल्लेख करता है जबकि जायसी का राघव सीधा ही सुलतान के समक्ष पद्मावती का रूप वर्णन करता है।

जटमल ने लिखा है कि सुलतान १२ वर्ष तक चित्तौड़ पर घेरा डाले बैठा रहा (जो कि कवि की अतिरंजना मात्र लगती है) अन्त में राघवचेतन की सलाह से सुलतान ने छलपूर्वक रतनसेन को गिरफ्तार कर लिया और प्रतिदिन उसे गढ़ के नीचे लाकर सब लोगों को दिखाते हुए राणा के कोड़े मरवाया करता जिसकी वेदना से व्याकुल हो कायरता लाकर राणा के मुंह से कवि पद्मिनी को देने के लिए खास रुक्का प्रेषण करने की स्वीकृति कराता है (कवित्त ८०) जोकि राणा और उसके राजवंश की शान के विपरीत कायरतापूर्ण कदम है। आगे चलकर जब बादल कपट प्रपच रचना द्वारा पद्मिनी को देने के प्रलोभन से सुलतान को वशवर्त्ती कर राणा को छुडाने आता है तो कवि फिर राणा द्वारा बादल को इस जघन्य कार्य

(रानी को देकर राणा को छुड़ाने) के लिए धिकार दिलाता है। ये दोनों बातें एक दूसरे से विपरीत है अतः कवि ने यहाँ विरोधाभास किया है।

जटमल तथा अन्य सभी कवियों ने पद्मिनी को सिंहलद्वीप की पुत्री बतलाया है जो निरी कवि-कल्पना मात्र है। ओझा जी के अनुसार चित्तौड़ से ४० मील पूर्व स्थित सिंघोली गावही सिंघल होना सम्भव है। सिंहलद्वीप के जल-वायु ने पद्मिनी जैसी श्रेष्ठ लावण्यवती स्त्री पैदा की हो एवं इतने दूर से राजस्थान आई हो यह सभव नहीं। राजस्थान में जैसे पूगल की पद्मिनी प्रसिद्ध रही है उसी प्रकार सम्भव है मेवाड़ मे भी सिंघोली जैसा कोई स्थान रहा हो। खुमाणरासो हमे सूचना देता है कि महाराणा राजसिंह औरगमीर की माग मान कमध की पुत्री को व्याह कर लाया था, उस सुन्दरी को भी कवि ने पद्मिनी लिखा है, जिसने राणा को पत्र लिख कर मुसलमान के घर जाने से बचाकर अपनी रक्षा करने की प्रर्थना की थी। राणा उसे व्याह कर ले आया इसके बाद राणा शिकार के लिए गया, उसने गगा त्रिवेणी गोमती और नागद्रह को देखकर बाँध कराने के विचार से गजधर को बुलाकर शिरोपाव दिया। खुमाणरासो मे यहाँ तक का वर्णन प्राप्त है। अतः राजसिंह की पद्मिनी की भाँति रतनसेन की परिणीता पद्मिनी सती भी मेवाड़-राजस्थान मे ही जन्मी हुई वीरागना होनी चाहिए।

इस ग्रंथ मे कवि लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौपई ही सर्व प्रथम और प्रधान रचना है अतः यहाँ कवि लब्धोदय का यथाज्ञात जीवन परिचय दिया जाता है।

महोपाध्याय लब्धोदय और उनकी रचनाएँ

राजस्थानी साहित्य की श्री वृद्धि करने मे जैन कवियों का योगदान बहुत ही उल्लेखनीय है। अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा का विकास हुआ तब से लेकर अबतक सैकड़ों कवियों ने हजारों रचनाएं राजस्थानी गद्य व पद्य मे निर्मित की। नीति, धर्म सदाचार के साथ-साथ जीवनोपयोगी प्रत्येक विषय की राजस्थानी जैन रचनाएं मिलती हैं। राजस्थानी साहित्य की विविधता और विशालता जैन विद्वानों की अनुपम देन है। पन्द्रहवीं शती तक राजस्थान और गूजरात, सौराष्ट्र, कच्छ और मालवा जितने व्यापक प्रदेश की एक ही भाषा थी। तेरहवीं शती से पन्द्रहवीं शती तक की जैनेतर रचनाए बहुत ही अल्प मिलती हैं पर जैन कवियों की प्रत्येक शताब्दी के प्रत्येक चरण मे विविध काव्य रूपों एवं शैलियो की सैकड़ों रचनाएं उपलब्ध होती है। पन्द्रहवीं शती तक की जैन रचनाएं अधिकांश छोटी-छोटी है, पन्द्रहवीं के उत्तरार्द्ध से कुछ बड़े रास रचे जाने लगे और सतरहवीं शताब्दी से तो काफी बड़े-बड़े रास अधिक संख्या मे रचे गये। रास, चौपाई, फागु, विवाहला आदि चरित-काव्य पहले विविध प्रसंगों में व मन्दिरों आदि मे खेले भी जाते थे अतः उनका छोटा होना स्वाभाविक व जरूरी भी था पर जब रास

वड़े-वड़े रचे जाने लगे तो वे केवल गेय-काव्य रह गये, खेलने के नहीं। साधारण जनता, अपनी परिचित स्वरलहरी और वोल-चाल की भाषा मे जो रचनाएं की जाती है उनको सरलता से अपना लेती है। प्राकृत संस्कृत भाषा मे प्राचीन विस्तृत साहित्य होने पर भी उससे लाभान्वित होना जन साधारण के लिए सम्भव नहीं था, इसलिए वहुत कुछ उनके आधार से और कुछ लोककथाओं को धार्मिक वाना पहना कर जैन कवियों ने सरल राजस्थानी भाषा मे प्रचुर चरित काव्य वनाए। प्रातः, मध्यान्ह और रात्रि मे उन्हीं रास, चौपाइयो को गाकर व्याख्या की जाती थी। लोकगीतों की प्रचलित देशियों मे उनकी ढालें वनाई जाने से जनता उन्हे भाव-विभोर होकर सुनती और उन चरित्र-काव्यो से मिलने वाली शिक्षाओ को अपने जीवन का ताना वाना वना लेती। फलतः उस समय का लोक-जीवन इन रचनाओं से वहुत ही प्रभावित था। नीति, धर्म और सदाचार की प्रेरणा देने मे इन रचनाओं ने वहुत वड़ा चमत्कार दिखाया।

अठारहवीं शताव्दी में अनेक राजस्थानी जैन कवि हुए हैं जिन मे महोपाध्याय लब्धोदय की साहित्यसेवा चालीस पचास वर्षो तक निरन्तर चलती रही। उन्होने छः उल्लेखनीय वड़े रास वनाए। लघु-कृतिया भी अनेक वनाई होगी किन्तु वे या तो नष्ट हो गई या किसी भंडारों मे छिपी पड़ी होंगी। लब्धोदयजी का विहार मेवाड़ प्रदेश में अधिक हुआ

और वहा के भंडारों की जानकारी भी कम प्रकाश मे आई है। उनके उल्लिखित, रासों मे पद्मिनी चौपाई ही अधिक प्रसिद्धि प्राप्त है, अन्य ३ रासों की एक-एक दो-दो प्रतिया मिली हैं। तीन रासो के तो नाम व प्रतियां भी कहीं नहीं मिली, पर कवि की अन्य रचनाओं मे उनकी सूचना प्राप्त होती है।

आज से ३२-३३ वर्ष पूर्व जव हमने हस्तलिखित-ज्ञान भण्डारो का अवलोकन प्रारम्भ किया और अपने संग्रहालय के लिए प्रतियो का संग्रह प्रारम्भ किया तो कवि लब्धोदय की पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रतिया ज्ञानभडारो मे देखने को मिली तथा हमारे संग्रह मे भी १ प्रति सगृहीत हुई। स० १९९१ मे 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' भाग १५ अङ्क २ मे श्री मायाशंकर याज्ञिक ने अपने 'गोरा वादल की वात' नामक लेख में पद्मिनी चरित्र का सर्व प्रथम परिचय हिन्दी जगत को दिया। उनके संग्रह मे इसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति थी। उन्होंने पद्मावत और 'गोरा वादल की वात' के कथानक से इस पद्मिनी चरित्र मे जो अन्तर है उसका सक्षिप्त परिचय उस लेख में दिया था। इस ग्रन्थ के रचयिता का नाम उन्होंने भ्रमवश लक्ष्योदय लिख दिया था और वह भूल काफी वर्षों तक दुहराई जाती रही। अतः हमने 'सम्मेलन पत्रिका' वर्ष २६ अंक १-२ में 'जैन कवि लब्धोदय और उनके ग्रन्थ' नामक लेख प्रकाशित करके इस भूल को संशोधन करते हुए कवि की रचनाओं का परिचय भी प्रकाशित किया। सं० १९९२ में 'युगप्रधान श्रीजिन-

चन्द्रसूरि' के पृष्ठ १६३ मे श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी की शिष्य-परम्परा का परिचय देते हुए इनकी दो रचनाओं का उल्लेख किया था। कवि ने दूसरी रचना गुणावली चौ० मे इससे पूर्ववर्ती ६ रचनाओं का उल्लेख किया है, इसका भी उल्लेख किया गया था पर उस समय तक हमे केवल दो ही रचनाएँ मिली थी। इसके बाद खोज निरंतर जारी थी और उसके फलस्वरूप दो रचनाओं की और प्रतियाँ मिलीं एव दो स्तवन भी देखने मे आए।

आपकी गुरु-परम्परा युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी के गुरु श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी से प्रारभ होती है। इस परम्परा मे कई और भी अच्छे अच्छे विद्वान हो गए है जिनमे गुणरत्न व महिमोदय आदि उल्लेखनीय हैं। आपने अपने ग्रंथों मे अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है :—

श्री जिनमाणिकसूरि प्रथम शिष्य, श्री विनयसमुद्र मुनीशजी।
श्री हर्षविशाल विशाल जगत मे, सुवदीता जसु सीसजी ॥व०
महोवझाय श्री ज्ञानसमुद्र गुरु, वाणी सरस विलासजी।
तासु शिष्य उवझाय शिरोमणि, श्री ज्ञानराज गुणराशिजी ॥व०
विद्यावंत अने वड भागी, सोभागी सिरदारजी।
तासु शिष्य लब्धोदय पाठक, सम्बन्ध रच्यो सुखकार जी ॥व०

[रत्नचूड मणिचूड़ चौ० प्रशस्ति]

यही परम्परा कवि ने पद्मिनी चरित्र चौ० की प्रशस्ति में दी है जो इसी ग्रंथ के पृ० १०६ मे देखना चाहिए।

जन्म समय और दीक्षा

कवि की सर्वप्रथम रचना पद्मिनी चरित्र चौपई स० १७०६ में प्रारम्भ होकर सं० १७०७ चैत्री पूनम के दिन सम्पूर्ण हुई है। इस समय ये गणि पद से विभूषित थे, अतः उनकी आयु २७ वर्ष के लगभग होना संभव है इससे इनका जन्म सं० १६८० के लगभग माना जा सकता है। आपका जन्म नाम लालचन्द था उस समय दीक्षा प्रायः लघुवय में ही हुआ करती थी अतः दीक्षा का समय स० १६६५ के आसपास होना चाहिए। और आपका दीक्षा नाम लब्धोदय रखा गया था।

अध्ययन और विहार

आपकी गुरु-परम्परा एक विद्वद्-परम्परा थी। विनयसमुद्र वाचक पद से विभूषित थे। उनके शिष्य वाचक गुणरत्न तो जैन साहित्य के अतिरिक्त साहित्य और तर्कशास्त्र के भी अद्भुत विद्वान थे। इनके रचित १ काव्यप्रकाश टीका (श्लोक १०५००), २ सारस्वत टीका (क्रियाचन्द्रिका ४००० श्लोक) ३ रघुवंश सुबोधिनी टीका (६००० श्लोक), ४ तर्कभाषा (गोवर्द्धनी प्रकाशिका-तर्क तरंगिणी श्लो० ७४५०) ५ शशधर के न्याय सिद्धान्त पर टिप्पण ६ मेघदूत पंजिका ७ नमस्कार प्रथम पद अर्थ के अतिरिक्त १ संयतिसंधि २ श्रीपाल चौपई, दो राजस्थानी काव्य उपलब्ध हैं। इनमें से 'तर्कतरंगिणी' की एकमात्र प्रति ब्रिटिश म्युजियम, लंदन में है और 'न्यायसिद्धान्त' की सम्पूर्ण प्रति अनूपसंस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर में है। 'मेघदूत पंजिका' की भी

के पुत्र हसराज और भागचन्द के आग्रह से मुनि श्री लब्धोदय गणि ने पूर्व रचित कथा को देखकर पद्मिनी चरित्र चौ० की रचना स० १७०६ में प्रारम्भ कर ४६ ढाल व ८१६ गाथाओं मे स० १७०७ चैत्रीपूनम के दिन पूर्ण की। इससे पूर्ववर्त्ती रचना हेमरत्न की है उसमे 'गोरावादल कवित्त' का उपयोग हुआ है और लब्धोदय ने तो इन दोनों ही रचनाओं का उपयोग किया है। हेमरत्न की रचना मे गा० ६३२ हैं और लब्धोदय की गाथा ८१६ है। अतः कवि ने कथा प्रसङ्ग विस्तृत किया है।

इसके पश्चात् कवि ने तीन चौपाइया और भी रची थी पर वे अवतक अनुपलब्ध है। उपलब्ध रचनाओं मे रत्नचूड मणिचूड चौपाई स० १७३६ की है जो ५वीं रचना होनी चाहिए क्योंकि इसके बाद की मलयसुन्दरी चौ० मे उससे पूर्व ५ चौपाई रचने का उल्लेख स्वयं कवि ने किया है।

रत्नचूड मणिचूड़ की प्राचीन कथा को दान-धर्म के माहात्म्य मे कवि ने राजस्थानी पद्य (३८ ढालों) में सकलित किया है। स० १७३६ वसन्तपचमी को उदयपुर मे इसकी रचना हुई। पद्मिनी चरित्र चौ० जिस मन्त्री भागचन्द के आग्रह से बनाई गई थी उसी के आदर से यह चौपाई रची गई है। इसकी प्रशस्ति मे मन्त्री भागचन्द के पुत्र व पौत्रों का अच्छा परिचय दिया गया है। मन्त्री भागचन्द के सम्बन्ध मे ५ पद्य है, उससे उसका महत्व भली-भाँति स्पष्ट है। उसके पुत्र दशरथ, समरथ

और अमृत थे इनमे से समरथ के ३ पुत्र महासिंह, मनोहर दास व हरिसिंह थे। दशरथ के पुत्र आसकरण और सुजाण सिंह थे। अमृत के पुत्र गोकुलदास व इन्द्रभाण थे। इस प्रकार मन्त्री मुकुट भागचन्द का परिवार काफी बड़ा था। ७ पाट के बाद मेवाड में खरतर गच्छ की पुनः प्रतिष्ठा करने का श्रेय कवि ने उसे दिया है। इस रचना के समय मन्त्री भागचन्द काफी वृद्ध हो चुके थे, फिर भी उनकी धर्म भावना और शास्त्र श्रवण प्रेम ज्यों का त्यों बना हुआ था। इस चौपाई की एक मात्र प्रति 'हितसत्क ज्ञानमन्दिर' घाणेराव से अभी अभी हमें प्राप्त हुई है। काव्य वडा सुन्दर और रोचक है।

कवि की छट्ठी चौपाई सबसे वड़ी कृति है—मलयसुन्दरी चौपाई। यह भी शील-धर्म के माहात्म्य पर १४२ पत्रों में रची गई है। प्रस्तुत मलयसुन्दरी चौ० सं० १७४३ श्रावण वदी १३ के दिन प्रारम्भ कर गोघूदा (मेवाड) मे धनतेरस के दिन पूर्ण की। केवल ३ मास मे इतने इतने वड़े काव्य का निर्माण वास्तव में कवि की असाधारण प्रतिभा का द्योतक है। इसकी रचना कवि के उल्लेखानुसार उनके गुरु महो० ज्ञानराज द्वारा स्वप्न* मे दी हुई प्रेरणा के अनुसार की थी। मलयसुन्दरी कथा जैन साहित्य मे काफी प्रसिद्ध है।

---

* "महोपाध्याय ज्ञानराज गुरु, कह्यो सुपन में आय।
पाँच चौपाई थे करी, ए छट्ठी करो बणाय॥"

कवि की सातवीं रचना गुणावली चौपाई ज्ञानपंचमी के माहात्म्य पर निर्मित हुई है। स० १७४५ के मिती फाल्गुण सुदि १० को उदयपुर में कटारिया मन्त्री भागचन्द जी की पत्नी भावलदे के लिए यह रची गई थी। फा० व० १३ को प्रारम्भ कर फा० सु० १० को अर्थात् केवल १२ दिनमें आपने यह काव्य रच डाला था।

उपर्युक्त बड़ी रचनाओं के अतिरिक्त कवि ने बहुतसी छोटी रचनाएँ अवश्य बनाई होंगी, पर हमे उनमें से केवल २ ही रचनाओं की जानकारी मिली है। प्रथम धुलेवा ऋषभदेव स्तवन १३ पद्यों का है और उसकी रचना सं० १७१० ज्येष्ठ वदि २ बुधवार को हुई है। दूसरा ऋषभदेव स्तवन १५ गाथा का है जो सं० १७३१ मि० व० ८ बुधवार को रचा हुआ है।

स्वर्गवास

सं० १७४५ के पश्चात् आपकी कोई रचना नहीं मिलती और उस समय आपकी आयु लगभग ६५-७० वर्ष की हो चुकी थी। अतः सं० १७५० के आस-पास आपका स्वर्गवास मेवाड़-उदयपुर के आसपास हुआ होगा।

शिष्य परम्परा

कवि लब्धोदय बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके धार्मिक उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक भावुक आत्माओ ने उनका शिष्यत्व स्वीकार किया था। कवि ने अपने 'रत्नचूड़ मणिचूड़ चौपाई' और 'मलयसुन्दरी चौ०' की प्रशस्ति में अपने शिष्यों की नामावली इस प्रकार दी है :—

"शिष्य रत्नसुन्दर गणि वाचक, कुशलसिंह मन हरषइ जी।
सावलदास शिष्य सोभागी, पासदत्त परसिद्ध जी।
खेतसी परमानन्द रूपचन्द, वाची ने जस लिद्ध जी।"
[रत्नचूड़ मणिचूड चौ०]

जसहर्ष शिष्य वाचक सोभागी, रत्नसुन्दर सिरदार जी।
शिष्य कल्याणसागर ज्ञानसागर, पद्मसागर पंडित श्रीकारजी॥
[मलयसुन्दरी चौ०]

कवि के शिष्य ज्ञानसागर के शिष्य भुवनधीर अच्छे विद्वान थे, इनके रचित भुवनदीपक बालावबोध सं० १८०६ मे रचित उपलब्ध है।

उपर्युक्त शिष्योंमे से कुछ की शिष्य-परम्परा अवश्य ही लम्बे समय तक चली होगी व उनमे कई कवि व विद्वान भी हुए होंगे पर हमें उनकी जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी।

संवत् १७०६ से सं० १७४५ तक की रची हुई उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि महोपाध्याय लब्धोदय ने ४० वर्ष तक राजस्थानी भाषा और साहित्य की विशिष्ट सेवा की थी। उनकी पद्मिनी चरित्र चौ० को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। अवशिष्ट रचनाओं के प्रकाशन से कवि की काव्य-प्रतिभा का सही मूल्याकन हो सकेगा, क्योंकि यह तो कवि की प्राथमिक रचना है, उसके बाद अन्य रचनाओं मे प्रौढ़त्व अवश्य ही मिलेगा।

प्रतिष्ठा लेख आदि

आपके जीवनचरित्र की उपर्युक्त सामग्री मे हम देख चुके है कि आपका विहार विशेषकर मेवाड़ में हुआ था। आपने वहाँ जिनमदिर, प्रभु-प्रतिमाएँ व गुरु-पादुओं की प्रतिष्ठा भी

करवायी थी। मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र के वंशजों द्वारा निर्मापित उदयपुर की वीराणी की सेरी में स्थित ऋषभदेव जिनालय के मूल-नायक भगवान के लेख से विदित होता है कि आपके कर-कमलों से उपर्युक्त प्रतिष्ठा हुई थी। वहाँ के यतिवर्य ऋषि श्री अनूपचन्द्रजी द्वारा प्राप्त लेख यहाँ दिये जा रहे हैं :—

"संवत् १७७३ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री वृहत् खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं युगप्रधान श्री जिनरंगसूरि भट्टारकस्यादेशात् महोपाध्याय श्री ज्ञानराज गुरुणा शिष्य महोपाध्याय श्री लब्धोदय गणिभिः श्री ऋषभदेव विम्वं कारितं च वच्छावत मं० लखमी चन्देन पुत्र मं० रामचन्द्रजी भ्रातृ सा० रघुनाथ जी भ्रातृजयं सवलसिंह पृथ्वीराज वाई हरीकुमरीकया श्रेयोर्थं।

सवत् १७४३ ··श्री जिनरंगसूरि विजये युगप्रधान श्री जिन-कुशलसूरिणा पादुके कारिते प्रतिष्ठिते च महोपाध्याय श्रीलब्धोदय।

संवत् १७२१ (?) वर्षे चैत्र द्वादशी ·· श्री लब्धोदय गणि।

श्री जिनकुशलसूरि च० प्रतिष्ठितं महोपाध्याय श्री ज्ञान-समुद्राणा शिष्य महोपाध्याय ज्ञानराज महोपाध्याय श्रीलब्धो-दयवाचक रत्नसुन्दरयुक्त।

इसके अतिरिक्त सं० १७४८ की भी एक जोड़ी चरणपादुका प्रतिष्ठित विद्यमान है। टाइल्स लगा देने से लेख अव दव गए है, एक लेख का निम्नलिखित अंश पढने मे आता है :—

"शिष्य महोपाध्याय श्री ज्ञानसमुद्राणा महो० श्री ज्ञान-राजाना शिष्य लालचन्द्रोपाध्यायैः।

गोरा वादल कथा के रचयिता नाहर जटमल

कवि जटमल नाहर की गोरा वादल कथा गद्य मे होने की भ्रान्ति हिन्दी के विद्वानों मे चिरकाल तक रही है। एसियाटिक सोसायटी-कलकत्ता की जिस प्रति के आधार से यह भ्रान्ति फैली थी, उस प्रतिका निरीक्षण कर भ्रान्ति का निराकरण स्वर्गीय पूरणचन्दजी नाहर व स्वामी नरोतमदास जी के प्रयत्न से 'विशाल भारत' पोप १९९० व नागरी प्रचारणी पत्रिका वर्प १४ अंक ४ में प्रकाशित लेखों द्वारा हुआ। यह निश्चित हो गया कि वास्तव में जटमल ने गोरा वादल कथा पद्य मे ही लिखी थी पर उन्नीसवीं शती मे गद्य मे लिखे गए अर्थ के कारण जटमल के गद्यकार होने की भ्रान्त परम्परा चल पड़ी। उसके वाद डा० टीकमसिंह तोमरने 'गोरा बादल कथा' की एक प्रति का पाठ गलत पढ कर जटमल की जाति जाट होने का उल्लेख शोध प्रवन्ध में किया जिसका निराकरण भी नागरी-प्रचारणी पत्रिका द्वारा किया गया।

हिन्दी के विद्वानों को जटमल की केवल 'गोरा वादल कथा' नामक एकही रचना की जानकारी थी। हमने जव वीकानेर के ज्ञानभंडारों का निरीक्षण किया व अपने ग्रन्थालय के लिये हस्तलिखित प्रतियों का संग्रह प्रारम्भ किया तो जटमल की अन्य कई रचनाओं की प्राप्ति हुई। फलतः हमने हिन्दुस्तानी वर्ष ८ अं० २ मे 'कवि जटमल नाहर और उनके

ग्रंथ' नामक लेख द्वारा जटमल की समस्त रचनाओं पर सर्व प्रथम प्रकाश डाला।

कवि जटमल नाहर ने अपना परिचय अपनी रचनाओं में इस प्रकार दिया है :—

(१) धरमसी कौ नन्द नाहर जाति जटमल नाउ।
तिण करी कथा बणाय के, विचि सिंवला के गाउ॥
इति जटमल श्रावक कृता गोरा बादल की कथा संपूर्ण

(२) वसै अडोल 'जलालपुर', राजा थिरु 'सहिवाज',
रइयत सयल वस सुखी, जब लगि थिर ध्रूराज, ८३
तहाँ वसें 'जटमल लाहोरी', करने कथा सुमति मति दोरी,
'नाहर' वस न कछु सो जानै, जो सरसती कहै सो आनै, ८४

इति प्रेमविलास प्रेमलताह्व सवरसलता नाम कथा नाहर गोत्र श्रावक जटमल कृता (सं० १७५३ लिखित प्रति)

इस से सिद्ध होता है कि कवि जटमल लाहोर निवासी जैन श्रावक थे और नाहर गोत्रीय थे। आपके रचित (१) गोरा बादल कथा की रचना सं० १६८० में सिंवला ग्राम मे हुई है जिसे स्वामी नरोत्तमदासजी व सूर्यकरणजी पारीक द्वारा सम्पादित कापी से यहा साभार प्रकाशित किया जा रहा है। दूसरी कथा प्रेमविलास प्रेमलता की रचना स० १६९३ भाद्रपद शुक्ला ४ रविवार को जलालपुर मे हुई है। (३) बावनी—पजावी भाषा के ५४ पद्यों मे है, इसे 'पंजाबी दुनिया' मे गुरुमुखी मे छपवा दिया है। (४) लाहोर गजल—इसमे लाहोर नगर का

महत्त्वपूर्ण वर्णन पद्य ६० में है। नगर वर्णनात्मक हिन्दी पद्य संग्रह में मुनि श्रीकान्तिसागरजी द्वारा यह प्रकाशित है। (५) स्त्री (सुन्दरी) गजल, (६) झिगोर गजल, (७) फुटकर कवितादि, हमारे संग्रह मे है। उदयपुर मे एक और रचना भी देखने में आई थी।

गोरा वादल कथा की प्रशस्ति में मोछ ग्राम का उल्लेख है। कविवर समयसुन्दर कृत मृगावती रास के एक गुटके की लेखन प्रशस्ति में मोछ ग्राम एवं जट्टू नाहर का उल्लेख मिलता है। अतः वह गुटका जटमल नाहर के लिखित प्रतीत होता है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—

संवत् १६७५ वर्षे माघ सुदि ११ तिथौ शनिवारे। पतिस्याह नूरदी आदिल जहागीर राज्ये लिखतं जट्टू नाहर नागउरी मोछ ग्रामे सा० कवरपाल सुतसा वाला देवी पासा तोड़ा रंगा गंगा पुस्तिका वापणा गोत्रे। लिखतं जट्टू पठनार्थं।

खुमाणरासो रचयिता दौलतविजय

खुमाणरासो के सम्वन्ध में हिन्दी साहित्य के विद्वानों में बडी भ्रान्ति रही है। खुमाण का नाम देखकर उसका काल ९वीं शताब्दी ही रासो का रचनाकाल मान लिया गया। इस मे महाराणा प्रताप का भी वृत्तान्त है अतः यह धारणा वना ली गई कि इस मे पीछे से परिवर्द्धन होता रहा है अतः

वर्त्तमान रूप १६वीं शताब्दी में प्राप्त हुआ मान लिया गया। माननीय शुक्लजी जैसे विद्वान ने भी अपने इतिहास मे यही लिख दिया कि—'यह नहीं कहा जा सकता कि दलपतविजय असली खुमान रासो का रचयिता था अथवा उसके पिछले परिशिष्ट का।' वास्तव मे हिन्दी के विद्वानों ने इसकी प्रति को देखा नहीं, अतः अन्य लोगों के उल्लेखों के आधार से विविध अनुमान लगाते रहे। लगभग २५ वर्ष पूर्व श्री अगरचन्द्र जी नाहटा ने वीर-गाथा-काल की बतलाई जानेवाली रचनाओं को परीक्षा की कसौटी पर रखा और जैनगूर्जर कविओ भाग १ से खुमाणरासो की १३६ पत्रों की अपूर्ण प्रति का पता लगा कर पूना के भंडारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट से प्रति को प्राप्त कर इसके तथ्यों पर सर्वप्रथम निश्चयात्मक प्रकाश डाला। 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' वर्ष ४४ अङ्क ४ मे प्रकाशित उनके लेख से वह निश्चित हो गया कि यह ग्रंथ १८वीं शताब्दी मे ही रचित है कवि का नाम दलपतविजय नहीं पर उसका प्रसिद्ध नाम दलपत और जैन दीक्षा का नाम दौलतविजय था।

खुमाण रासो की अद्यावधि एक ही प्रति मिली है जो अपूर्ण है और उसमे महाराणा राजसिंह तक का विवरण है। टॉड के संग्रह तथा नागरी प्रचारिणी सभा मे भी इसी प्रतिकी प्रतिलिपि है। कविने प्रस्तुत ग्रन्थ में अपनी गुरु-परम्परा का परिचय इस प्रकार दिया है :—

त्रिपुरा शक्ति तणे सुपसाय, रच्यो खण्ड दूजो कविराय।
तपगच्छ गिरुआ गणधार, सुमतिसाधु वंशे सुखकार॥
पडित पद्मविजय गुरुराय, पटोदयगिरि रवि कहेवाय।
जयबुध शातिविजय नो शिष्य, जपे दौलत मनह जगीश॥"

अर्थात्—कवि त्रिपुरादेवी का भक्त था और तपागच्छ के सुमतिसाधुसूरि की परम्परा में पद्मविजय शिष्य जयविजय शि० शान्तिविजय का शिष्य था।

खुमाण रासो (अपूर्ण) मे खुमाण से लेकर राजसिंह तक का ही विवरण मिलता है, पर इसके प्रथम खण्ड के अन्तिम दोहे मे महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) तक का उल्लेख होने से इसकी रचना सं० १७६७ से सं० १७९० के वीच मे हुई निश्चित है।

विड सागउ अमरेस सुत, सीसोद्यो सुवियाण।
राण पाट प्रतपे रिधू, मन हेला महिराण॥

खुमाण रासो के छठ्ठे खण्ड मे रत्नसेन-पद्मिनी और गोरा बादल का वृतान्त आया है अतः उसे इस ग्रंथ के [पृ० १२९ से १८१] में प्रकाशित किया गया है। यह अंश स्वामी नरोत्तमदासजी द्वारा प्राप्त श्री श्रोत्रिय के की हुई प्रेस कापी से लेकर दिया गया है अतः इसके लिए आदरणीय स्वामीजी और श्रोत्रियजी धन्यवादार्ह है।

इस ग्रंथ के पृ० १०६ में गोरा बादल कवित्त प्रकाशित किया गया है, जिसकी प्रति हमारे सग्रह मे है। लब्धोदय कृत चौपई की प्रति हमारे संग्रह की है, जिसके पाठान्तर गुलाबकुमारी लाइब्रेरी, कलकत्ता स्थित बड़ौदा के गायकवाड ओरयण्टल-इन्स्टीट्यूट की नकल से दिये गये है। हमारे आदरणीय मित्र डा० दशरथ शर्मा ने अनेक कार्यों मे व्यस्त रहते हुए भी भूमिका रूप मे "रानी पद्मिनी—एक विवेचन" शीघ्र लिख भेजा था, पर ग्रथ का कलेवर बढ़ जाने से उसमे और अभिवृद्धि करने के लिए उन्हे दिया गया था, जिसे उन्होंने यथासमय ठीक कर भेजा पर वह डाक की गड़बड़ी मे गुम हो गया। तब उसे पुनः नये रूप मे लिख कर भेजने का कष्ट किया है। पूज्य काकाजी श्री अगरचन्दजी नाहटा तो इसके श्रेय के वास्तविक अधिकारी है ही, अतः इन सभी आदरणीय विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करने के हेतु उपयुक्त शब्द मेरे पास नहीं है, वह तो हृदय की भाषा जाननेवाले सुधीजन स्वतः अवगाहन कर लेगे। सुज्ञेषु किं बहुना,

कलकत्ता
पौष कृष्णा १०
पार्श्वनाथ जन्म दिवस

भँवरलाल नाहटा

पद्मिनी चौपाई का कथासार

भगवान ऋषभदेव, महावीर, शारदा और ज्ञानराज गुरू को नमस्कार कर कवि लब्धोदय सती पद्मिनी का चरित्र निर्माण करते है। इसमे वीर श्रृंगार प्रधान नवरसों का सरस वर्णन है। वीर गोरा, बादल की स्वामीभक्ति और शौर्य, सती के शीलव्रत के साथ क्षीर घृत और खाड के संयोग की भाति सुस्वादु हो जाता है। पहली ढाल मे कवि ने चितौड़ का वर्णन किया है। वे कहते हैं—मेवाड का चितौड दुर्ग सब गढ़ो में प्रधान है यह गगनस्पर्शी कैलाश से टक्कर लेता है। यहा बहुत से तापस तीर्थ, चित्रा नदी, गोमुख कुण्डादि है, कूप, सरोवर, जिनालय, शिवालय, ऊचे ऊंचे महल है, यह बाग बगीचों और करोडपतियों की लीलाभूमि है। चितौड में महाराणा रतनसेन नामक प्रतापी राजा राज्य करता था, जिसकी सेवा मे दो लाख सुभट एव कई राजा थे। पटरानी प्रभावती अत्यन्त सुन्दर और सब रानियों मे सिरमौर थी, वह राजा की प्रिय-पात्र और प्रतापी कुमार वीरभाण की माता थी। रानी प्रतिदिन राजा को अपने हाथ से परोस कर प्रेमपूर्वक भोजन कराती थी। एकदिन रत्नजटित थाल मे नाना व्यंजन युक्त स्वादिष्ट भोजन आरोगते हुए हास्य-विनोद मे राणा ने कहा—

आजकल भोजन बिलकुल निरस और स्वादरहित होता है। तुम्हारी चतुराई कहा चली गई? रानी ने तमक कर कहा—मैं तो कुछ भी नहीं जानती, मेरे में चतुराई है ही कहां? स्वादिष्ट भोजन के लिए नवीन पद्मिनी व्याह कर ले आइये। रानी प्रभावती के वाक्य राणा के हृदय में तीर की तरह चुभ गए, वह भोजन त्याग कर उठ खड़ा हुआ और रानी का मान मर्दन करने के निमित्त पद्मिनी से पाणिग्रहण करने के हेतु दृढ़-प्रतिज्ञ हो गया।

राणा ने दो घोड़ों पर बहुत सा धनमाल लेकर खवास के साथ गुप्तरूप से चितौड़ से प्रस्थान किया। जब वे बहुतसी भूमि उल्लंघन कर गये तो सेवक के पूछने पर राणा ने अपनी यात्रा का उद्देश्य प्रगट किया, पर दोनों ही व्यक्ति पद्मिनी स्त्री का ठाम ठिकाना नहीं जानते थे। उन्होंने एक वृक्ष के नीचे विश्राम किया तो एक भूख-प्यास से व्याकुल पथिक आकर राणा के चरणों में उपस्थित हुआ। राणा ने उसे खान-पान और शीतोपचार से सतुष्ट किया और स्वस्थ होने पर पूछा कि तुमने कहीं पद्मिनी स्त्री का ठाम-ठिकाना देखा-सुना हो तो बताओ! पथिक ने कहा—राजन्! दक्षिण समुद्र के पार सिंघल-द्वीप मे अप्सरा की भाति पद्मिनी स्त्रियाँ होती है! राणा ने दक्षिण का मार्ग पकड़ा और नाना जंगल पहाड़ों को उल्लंघन करता हुआ खवास के साथ समुद्र तट पर पहुंचा।

राणा को दुर्लंघ्य समुद्र को पार करने की चिन्ता मे घूमते हुए सहसा औघड़नाथ योगी से साक्षात्कार हुआ। राणा ने उसे विनय-भक्ति से संतुष्ट कर पद्मिनी के हेतु सिंघलद्वीप पहुँचाने की प्रार्थना की। योगी ने अपने दोनों हाथो में दोनों सवारों को लेकर आकाशमार्ग द्वारा सिंहलद्वीप पहुँचा दिया और स्वय अदृश्य हो गया। राणा प्रसन्नचित्त से भ्रमण करता हुआ सिंहलद्वीप की शोभा देखने लगा। जव वह नगर के मध्य भाग में पहुँचा तो उसने ढढोरे का ढोल सुना और पूछने पर ज्ञात हुआ कि सिंहलपति की तरुण बहिन पद्मिनी उसी व्यक्ति को वरमाला पहनायगी, जो उसके भ्राता को सतरज के खेल मे जीत लेगा। राणा ने पटह-स्पर्श किया, वह पद्मिनी के समक्ष सिंहलपति के साथ शतरंज खेलने लगा, पद्मिनी भी राणा के सौन्दर्य से मुग्ध होकर मनही मन उसके विजय की प्रार्थना करने लगी। पुण्य प्राग्भार से राणा ने सिंहलपति को जीत लिया, पद्मिनी की वरमाला राणा के गले मे सुशोभित हुई। सिंहलपति ने राणा के साथ पद्मिनी का पाणिग्रहण बड़े भारी समारोह से कराया और अपनी प्रतिज्ञानुसार राणा को आधा देश भडार समर्पित किया। पद्मिनी को दहेज मे हाथी, घोड़े, वस्त्रालङ्कार और दो हजार सुन्दर दासियाँ मिलीं। पद्मिनी तो अद्भुत रूपनिधान थी ही, उसके देह सौरभ से चतुर्दिक् भौंरे गुंजार कर रहे थे। कुछ दिन सिंहलद्वीप मे रहने के पश्चात् सारे धनमाल और परिवार को जहाजो में भरकर

राणा स्वदेश के लिए रवाने हुआ। सिंहलपति से प्रेमपूर्वक विदा लेकर राणा स्वदेश लौटा।

इधर चित्तौड में राणा के एकाएक चले जाने से चिन्तित वीरभाण ने माता से सत्य वृतान्त ज्ञात किया और लोगों के समक्ष राणा के जाप में बैठने की प्रसिद्धि कर स्वयं राज काज चलाने लगा। लोगों को जब छः मास से भी अधिक बीत जाने पर राणा के दर्शन न हुए तो नाना प्रकार की आशंकाएँ उठ खडी हुई। इसी समय राणा रतनसेन दो हजार घोड़े, दो हजार हाथी एवं पालकियों के परिवार से परिवृत चित्तौड़ के निकट पहुँचा। पद्मिनी की स्वर्ण-कलशों वाली पालकी, मध्य मे सुशोभित थी। दूर से विस्तृत सेना आती हुई देखकर परदल की आशका से वीरभाण ने सैनिक तैयारी प्रारम्भ कर दी। इतने ही मे राणा का पत्र लेकर एक दूत राजमहल मे पहुँचा, सारा वृतान्त ज्ञात कर चित्तौड़ में सर्वत्र आनन्द छा गया और स्वागत के लिए जोर-शोर से तैयारियाँ होने लगी।

स्थान स्थान मे मोतियों से वधाते हुए, ध्वजा पताका सुशोभित उल्लासपूर्ण वातावरण मे महाराणा ने चित्तौड मे प्रवेश किया। रानी प्रभावती को राणाने अपनी प्रतिज्ञापूर्ण कर दिखा दी। राणाने पद्मिनी के लिए विशाल एवं सुन्दर महल प्रस्तुत किया, जिसमें वह अपनी सखियों के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगी। महाराणा अहर्निश पद्मिनी के प्रेमपाश में बँधा हुआ

नाना क्रीडा, विलास में रत रहता था। एक बार 'राघव चेतन' नामक प्रकाण्ड विद्वान ब्राह्मण, जोकि महाराणा द्वारा सम्मानित होने के कारण बेरोकटोक महलों मे जाया करता था, पद्‌मिनी के महलमें जा पहुँचा। महाराणा अपने क्रीड़ा-विलास के समय उसे आया देखकर कुपित हो गए और असमय में व अनाहूत आने की मूर्खता पर बहुत सी खरी-खोटी सुनाई। धक्का देकर निकाल दिये जाने पर अपमानित व्यास राघव चेतन शीघ्र ही चित्तौड़ त्यागकर दिल्ली चला गया। थोड़े दिनो मे उसकी विद्वता की प्रसिद्धि शाही-दरबार तक पहुँच गई। सुलतान अलाउद्दीन ने उसे दरबार में बुलाया और प्रसन्न होकर पाँचसौ गाँव देकर अपना दरबारी बना लिया।

राघव चेतन ने राणा से प्रतिशोध लेने के लिए एक भाट और खोजे से घनिष्टता कर ली। राघवचेतन ने उसे किसी प्रकार पद्‌मिनी स्त्री की बात छेडने के लिए कहा, तो भाट राज-हस की पाँख लेकर दरबार मे आया और सुलतान के किसी अनोखी वस्तु की बात पूछने पर पद्‌मिनी स्त्री के सौन्दर्य्य व सुकुमारता की प्रशंसा की। सुलतान ने कहा कि तुमने कहीं पद्‌मिनी देखी सुनी हो तो कहो! भाट ने कहा—श्रीमान् के महल मे हजार स्त्रियाँ है जिनमें कोई अवश्य होगी। खोजे ने कहा कि रावण की लका में पद्‌मिनी स्त्री सुनी गई थी और तो कहीं भी संसार मे नहीं है। यहाँ तो सब सखिनी स्त्रियाँ है। भाट-खोजे के विवाद मे सुलतान ने रस लिया और पूछा

क्यो वे, हमारे महल मे सभा सखिनी है ? पद्मिनी एक भी नहीं ? खोजे ने कहा—यह तो लक्षण, भेदादि के शास्त्र-मर्मज्ञ राघवचेतन ही वतला सकते है ! सुलतान के पूछने पर व्यास ने चारों प्रकार की स्त्रियों के गुण-लक्षणादि विस्तार से समझाये। सुलतान ने अपने महल की स्त्रियों की परीक्षा कर पद्मिनी जाति की स्त्री वताने की आज्ञा दी और उनका प्रतिबिंब देखने के लिए मणिगृह का आयोजन किया। राघव-चेतनने सबको देखकर कहा कि आपके महल मे एक एक से बढ़कर रूपवती हस्तिनी, चित्रणी तो है, पर पद्मिनी स्त्री एक भी नहीं है।

सुलतान ने कहा—बिना पद्मिनी स्त्री के मेरा जीवन ही वृथा है, पद्मिनी स्त्री कहाँ मिलेगी ? व्यास ! मुझे वतलाओ ! राघव चेतन ने कहा—सिंघलद्वीप मे पद्मिनी स्त्रियाँ होती है। तो सुलताननें १६ हजार हाथी और २७ लाख अश्वारोही सेना के साथ सिंहलद्वीप की ओर प्रस्थान कर दिया। समुद्र-तट पर पहुँचने पर हठी सुलतान ने सिंहलपति पर आक्रमण करके गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। सुभट लोग नौकाओं में बैठ कर दरिया के बीच गए तो भँवरजाल में पड़कर वाहण टूट-फूट गए। सुलतान ने कुपित होकर और सुभटों को भेजने की आज्ञा दी। उसे केवल एक ही धुन थी कि लाखों सेना भले ही समुद्र में समाप्त हो जाय, पर सिंहलपति को अवश्य हराकर पद्मिनी प्राप्त की जाय। सुभटों ने राघव चेतन से कहा—

किसी प्रकार सुलतान को लौटाने की युक्ति सोचो, अन्यथा बेकार लाखो की प्राणाहुति हो जायगी। राघव चेतन की सलाह से ५०० हाथी ५००० घोड़, करोड़ दीनार एवं नाना प्रकार की भेंट वस्तुएँ प्रस्तुत कर अज्ञात व्यक्तियों द्वारा वाहनों मे भरकर प्रातःकाल होने से पूर्व ही समुद्र मे उपस्थित कर दिये और उन्हें सिंहलपति के प्रधान लोग दण्ड स्वरूप लाये हैं, बतला कर विनय वचनों से सुलतान को समझाकर सुलह करा दी। सुलतान ने सिंहलपति की कथित भेंट स्वीकार कर उनके प्रतिनिधियों को सिरोपाव देकर लौटा दिया और सिंहल से आई हुई भेंट को अपनी सेना मे बाँट कर दिल्ली की ओर लौटने का आदेश दे दिया।

जब सुलतान दिल्ली आये, तो बडी बेगम ने कहा—आप कैसी पद्मिनी लाए है, हमे भी दिखाइये! सुलतान के मन मे फिर पद्मिनी प्राप्त करने की तमन्ना जग उठी और राघवचेतन से कहा—सिंघलद्वीप के सिवा और कहीं पद्मिनी स्त्री हो तो बतलाओ! राघव चेतन ने कहा—चित्तौड़ के राणा रतनसेन के यहाँ पद्मिनी अवश्य है, पर शेषनाग की मणि को कौन ग्रहण कर सकता है? सुलतान ने अभिमान पूर्वक बड़ी भारी सेना तय्यार कर चित्तौड पर चढ़ाई कर दी। राणा की सेना ने सुलतान के साथ बडी वीरता से युद्ध किया और उसके सारे प्रयत्न विफल कर दिये। सुलतान ने सफलता पाने के लिए गुप्त छल करने का निश्चय करके अपने प्रधान पुरुषों को सुलह करने

के लिए राणा के पास भेजा। उन्होंने राणा से कहा—सुलतान चाहते है कि अपने परस्पर प्रीति की वृद्धि हो। अतः वे गढ़ देखकर, पद्मिनी के दर्शन व उसके हाथ से भोजन कर बिना किसी प्रकार के दण्ड, भेंट लिए वापस दिल्ली लौट जायेंगे। राणा रतनसेन कपटी सुलतान की मीठी बातों के चक्कर में आ गया और सुलतान के अधिकारियों के सुस-प्रतिज्ञा पूर्वक कहने पर उसने थोड़े लश्कर के साथ चित्तौड़ दिखा कर गोठ जिमाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

सुलतान अलाउद्दीन के पास व्यास राघव चेतन राणा के घर का पूरा भेदू था। उसकी मंत्रणा के अनुसार ही वह अपना कपट-चक्र संचालन करता था। सरल स्वभावी राणाने मत्रियों को स्वागत के लिए भेजकर सुलतान को बुलाया। गढ़ के द्वारा खोल दिये गए। सुलतान तीस हजार सैनिकों के साथ गढ़ में प्रविष्ट हो गया। इतने सैनिक देख राणा के मन में खटका हुआ और उसने अपनी सेना को तैयार होने का सकेत कर दिया। सुलतान के यह कहने पर कि क्यो सेना एकत्र करते हो, हम गढ़ देखकर लौट जावेंगे, तो राणा ने कहा—अपने वचनों के विपरीत आप तीस हजार सवार क्यो लाये ? मेरी सेना के वीर इन्हे क्षण मात्र मे पीस डालेंगे। सुलतान ने छलपूर्वक कहा—राणा ! आप सदेह क्यों करते हो ! मेहमान थोड़े हों या अधिक, आ जावें उनका तो सत्कार करना ही चाहिए। आज तो खाद्यपदार्थ सस्ते है, सुकाल हैं, यदि भोजन-

व्यय का विचार आता हो तो हम लौटे चलें। राणा ने कहा—भोजन के लिए ऐसी क्या बात है, तुच्छ बात न कहें, इससे दुगुने हों तो भी खान पान की कमी नहीं। इस प्रकार दोनों मेल-जोल से बातें करते महलों मे आये। राणा ने शाही भोजन के लिए बडी भारी तय्यारी की। राणा ने जब पद्मिनी को आज्ञा दी कि वह सुलतान को परोसे। तो उसने अपने जैसी ही रूप रंगवाली दासी को इस कार्य के लिए नियुक्त कर दिया। राणा के सजे हुए मंडप मे सुलतान को पद्मिनी की दासी ने नाना वेश परिवर्त्तन कर विविध व्यंजन परोसे। सुलतान उसकी रूप-माधुरी से विह्वल होकर कहने लगा—राणा के घर मे तो इतनी पद्मिनिया है, और मेरे यहा एक भी नहीं तब मेरी बादशाही में क्या रखा है। राघव चेतन ने कहा—यह तो पद्मिनी की दासी है। पद्मिनी तो ऊँचे महलों के समृद्ध कक्ष में रहती है, उसके तो दर्शन ही दुर्लभ है। इतने ही में पद्‍मिनी ने सहज भाव से शाही भोजन-समारोह को देखने के लिए रत्नजड़ित गवाक्ष की जाली में से झाँका। राघव चेतन ने संकेत से पद्‍मिनी को दिखाया और रूप मुग्ध सुलतान को विह्वल और मूर्छित होते देख, उसे किसी युक्ति से प्राप्त करने की आशा देकर आश्वस्त किया।

भोजनान्तर राणा ने सुलतान को हाथी, घोड़े, वस्त्राभरण भेंट कर परस्पर हाथ मिलाये हुए चित्तौड़ दुर्ग मे घूम घूम कर सारे विषम घाट-स्थान दिखलाए। सुलतान ने राणा से मा-

जाये भाई के सदृश प्रेम प्रदर्शित करते हुए विदा मागी और हाथ पकड़े पकड़े प्रेमालाप पूर्वक पहुँचाने के बहाने वह उसे गढ के बाहर तक ले आया और राघव चेतन की सलाह से सुभटों द्वारा राणा को कब्जे कर गिरफ्तार कर लिया। राणा के साथ मे जो थोड़े बहुत सुभट थे वे हक्के बक्के और किंकर्त्तव्य विमूढ हो गए। राणा के हाथ पैर मे बेडी डाल दी गई। गढ मे यह खबर पहुँचने पर सुभटों के बीच बैठकर वीरभाण अपना कर्त्तव्य स्थिर करने के लिए विचार विमर्श करने लगा। इतने ही मे दो शाही दूत आये और उन्होंने यह शाही सन्देश सुनाया कि—सुलतान पद्मिनी को प्राप्त करके ही राणा को मुक्त कर सकता है, उसे और किसी वस्तु की वाछा नहीं है ! यदि आप लोग पद्मिनी को नहीं दोगे, तो शाही सेना द्वारा दुर्ग को चूर कर राज्य छीन लिया जायगा। वीरभाण ने सोच-विचार कर प्रातः काल उत्तर देने का कह कर दूतो को विदा किया।

वीरभाण ने सुभटों से नाना विचार विमर्श कर निश्चय किया कि पद्मिनी को देकर राणा को छुड़ा लेना ही श्रेयस्कर है ! निर्नायक सुभट निरुपाय होकर सत्वहीन हो गए। वीरभाण के हृदय में अपनी माता के सौभाग्य उतारने में कारणभूत पद्मिनी के प्रति सद्भाव की न्यूनता थी ही। अतः पद्मिनी के लिए अपना रास्ता स्वयं निर्धारित करने के सिवा और कोई चारा नहीं रहा। वह अपनी शीलरक्षा के लिए प्राणों

की आहूति देने के लिए प्रस्तुत थी ही, पर किसी युक्ति से राणा भी मुक्त हो जांय और उसे भी तुर्कों के कब्जे में न जाना पड़े, ऐसा उपाय सोचने लगी।

पद्मिनी ने सुना था कि गोरा बादल नामक वीर काका-भतीजा किसी बात पर राणा से नाराज होकर घर जा बैठे हैं और उन्होंने ग्रास-गोठ को भी त्याग दिया है। वे चित्तौड़ त्याग कर काम-काज के लिए अन्यत्र जाने को प्रस्तुत हो रहे थे, उसी समय अचानक शाही आक्रमण हो गया, अतः उन्होंने चित्तौड़ छोडना स्थगित कर दिया है। अपने गाँठ का खर्च खाकर वे घर पर बैठे हुए है, (खेद है) ऐसे आत्माभिमानी वीरों को कोई नहीं पूछता। अतः उपस्थित समस्या का न्यायपूर्वक हल भी कैसे हो ? पद्मिनी उनके शौर्य्य की प्रसिद्धि से प्रभावित हो चकडोल पर बैठकर स्वयं वीर गोरा के घर गई। गोरा ने उसका स्वागत करते हुए कहा—माताजी ! आज मेरे घर पधार कर आपने बडी कृपा की, घर बैठे गंगा प्रवाह आने से मैं पवित्र हो गया, मेरे योग्य जो काम सेवा हो उसे फरमाइये ! पद्मिनी ने दुःख भरे शब्दों में कहा—क्या करूं ? ऐसे विकट समय में सुभटों ने क्षत्रवट खो कर मुझे तुर्कों के यहाँ भेजना स्वीकार कर लिया है,अब मुझे एकमात्र आपका ही भरोसा है, मैं इसी हेतु आपके पास आई हूँ ! गोरा ने कहा—माताजी ! हमें कौन पूछता है ? हम तो अपनी गांठ का खर्च खाकर घर में बैठे हैं, पर आपने हमारे घर को चरण-धूलि से पवित्र कर

और वह बादल की बात को सर्वथा सत्य मानकर गारुडी मन्त्र-प्रभावित साप की भांति पूर्णतया उसके अधीन हो गया। सुलतान ने कहा—मेरी लाज तुम्हारे हाथ है, बादल! जिस किसी प्रकार से सुभटों को समझा-बुझाकर पद्मिनी को मेरे पास भेजने में उन्हें सहमत कर लो। सुलतान ने बादल को सिरोपाव सहित लाख स्वर्णमुद्राएं देते हुए कहा कि काम बन जाने पर तुम देखना, मैं तुम्हारी कितनी इज्जत बढ़ाऊंगा! सुलतान ने पद्मिनी को प्रेम-पत्र भेजना चाहा तो बादल ने कहा—पत्र किसी अन्य व्यक्ति के हाथ लग जाने से ठीक नहीं। अतः मैं आपके सारे समाचार मौखिक ही सुनाऊंगा। इस प्रकार बादल ने मीठे वचनों से सुलतान को प्रसन्न कर विदा ली, सुलतान उसे पोलि द्वार तक पहुंचाने आया। बादल जब प्रचुर धन राशि लेकर घर लौटा तो माता व स्त्री को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। गोराजी ने कहा—बादल अवश्य ही अपने काम में सफल होगा। पद्मिनी को भी अपने पति-मिलन का विश्वास हो गया। सब लोग उसके बुद्धिचातुर्य्य से हर्ष विभोर हो गए।

बादल ने राज-सभा में जाकर गुप्त मन्त्रणा की और तय किया कि दो हजार सुन्दर चकडोल जरी के वस्त्र और स्वर्ण-कलश मंडित तैयार हों, और प्रत्येक में दो दो शस्त्रधारी सुभट सन्नद्ध बद्ध रहें। बीच की प्रधान पालकी में गोराजी को बिठाकर पद्मिनी के रूप मे उनका परिचय दिया

से इस प्रकार वेष्टित किया जाय कि मानों पद्मिनी के सौरभ से आकृष्ट भ्रमर-गुंजार से वचने के लिए ही ऐसा किया गया हो ! सुभटों वाली पालकियों में पद्मिनी की सखियाँ है ऐसा प्रचारित किया जाय। गढ़ से लेकर सेना पर्य्यन्त इस प्रकार पालकियाँ आयोजित हों कि उनकी कड़ी सी जुड़ जाय। इस सारे काम को सम्पन्न करने में कुछ विलम्ब करना इधर में सुलतान के पास जाकर पहले राणाजी को छुड़ा लू उसके वाद घात किया जायगा। इस प्रकार बादल अपनी सारी योजना समझा कर सुलतान के पास गया। सुलतान हर्षपूर्वक उससे मिला और पूछने लगा कि काम वनाया कि नहीं ? बादल ने कहा—किसी प्रकार समझा-बुझाकर पद्मिनी को सखियों के परिवार सहित लाया हूँ, सारी पालकियाँ गढ से उतर कर आ ही रही है। पर सब लोग इस बात से शंकित है कहीं राणा भी न छूटे और रानी भी चली जाय। अतः उनके आश्वस्त होने के लिए आपकी सेना का यहा से प्रयाण हो जाना आवश्यक है। यदि आपको भय हो तो पाच हजार सेना अपने पास रख सकते हैं। पद्मिनी से मिलनोत्सुक सुलतान ने कहा—मैं भला किससे डरू ? जगत मेरे से भय खाता है। तुमने भी बादल, चतुर होते हुए यह खूब कही! उसने तुरंत चार हजार सुभटों को छोड़कर बाकी समस्त सेना को तुरन्त कूच करने की आज्ञा दे दी।

सुलतान ने पुनः बादल को सिरोपाव पूर्वक लाख स्वर्ण-

दिया तो अब किसी प्रकार का भय न लाकर निश्चिन्त रहें! आप जैसी रानी को देकर राजा को छुड़ाने का घटिया दाव खेलने से तो मर जाना ही श्रेयष्कर है। रानी ने कहा—इस तुच्छ बुद्धि के धनी तो राजा की तरह गढ को भी खो बैठेंगे! अतः इसीलिए मैं तुम्हारे शरण में आई हूँ। गोरा ने कहा—(तो ठीक है) मेरा भाई गाजण बड़ा भारी शूर वीर था, उसके पुत्र बादल से भी चल कर सलाह कर ली जाय।

गोरा और पद्मिनी, बादल के यहा गए। उसने सविनय जुहार करते हुए आने का कारण पूछा। गोरा ने सारा वृत्तान्त बताते हुए कहा कि—अपन दो व्यक्ति किस प्रकार शाही सेना को शिकस्त दें। पद्मिनी ने कहा भैया! मैं तुम्हारे शरणागत हूँ, यदि बचा सको तो बोलो, अन्यथा एक बार मरना तो है ही, मैं हर हालत मे अपनी शील रक्षा तो करूंगी ही। पद्मिनी की प्रेरणा दायक बातें सुनकर बादल ने तत्काल राणा को छुडा लाने की प्रतिज्ञा की। पद्मिनी कृत-कार्य होकर अपने महल लौटी। बादल की माता और स्त्री ने उसे इस दुस्साहसपूर्ण प्रतिज्ञा से विचलित करने के लिये नाना मोह जाल फैलाया पर उस दृढ-प्रतिज्ञ बादल को विचलित करना तो दूर, उलटे वीरोचित प्रेरणा उत्साह दिला कर अपने हाथों हथियार बँधा कर विदा करना पड़ा। वह काका गोरा के पास अश्वारूढ़ होकर कार्यक्षेत्र मे उतरने की आज्ञा माँगने के लिए गया। जब गोरा ने उसे अकेले न जाने का कहा तो बादल ने उसे

यह कहकर आश्वस्त किया कि युद्ध में अपने दोनों साथ चलेंगे, अभी तो मैं केवल चास-भाष देखकर आता हूँ।

वादल तत्काल मेवाड़ी सुभटों की सभा में पहुंचा। उसे अचानक आये देखकर सब लोगों ने खडे होकर सम्मान प्रदर्शिन किया। वीरभाण कुमार आदि से खूब विचार-विमर्श करने के अनन्तर वह अकेला अश्वारूढ़ होकर शाही सेना की खबर लेने के लिए चल पड़ा। सुलतान ने जव अकेले बादल को आते देखा तो चमत्कृत होकर सम्मानपूर्वक उसे अपने पास वुलाया। वादल ने कहा मैं पद्मिनी का भेजा हुआ आया हूँ। अपना पूरा परिचय देते हुए उसने कहा—पद्मिनी ने जव से आपको देखा है, आपसे मिलने के लिए तडफ रही है, वह उस घडी की प्रतीक्षा मे है, जव आप से उनका मिलना होगा। यह लीजिये उसने मुझे आपको देने के लिए चिट्ठी भी दी है, जिसमे अपनी आतरिक अवस्था और विरह गाथा यत्किञ्चित प्रदर्शित की है। आपका संदेश जव पद्मिनी को आपके यहाँ भेजने के लिये गढ़ मे पहुंचा तो सुभटों ने तो मरने मारने की तैयारी कर ली, पर मैं किसी प्रकार कुँवर वीरभाण व सुभटों को समझा-वुझाकर आया हूँ और आशा करता हूँ कि आपका व पद्मिनी का मनोरथ पूर्ण करने मे मुझे अवश्य सफलता मिलेगी।

वादल के प्रस्तुत किये नकली प्रेमपत्र को पढ़कर सुलतान पानी-पानी हो गया। उसके हृदय पर इसका सीधा असर हुआ

मुद्राएँ दीं। वह सारा धन घर मे रख आया और सुभटों को सारे संकेत समझाकर सुखपाल के आगे आगे स्वयं चलने लगा। बादल को देखकर सुलतान ने उसे अपने पास बुलाया। सयोग की बात थी कि राघवचेतन बडा भारी बुद्धिमान था, पर स्वामिद्रोह के पाप के कारण उसकी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये, अस्तु। बादल ने निवेदन किया—पद्मिनी ने सदेश भेजा है कि आपकी सब रानियों मे मुझे पटरानी स्थापित करना होगा। सुलतान के सहर्ष स्वीकार करने पर वह बार-बार स्वर्णकलश वाली तथा कथित पद्मिनी के पालकी और सुलतान के बीच सदेश लाने के बहाने फिरने लगा। उसने कहा—पद्मिनी ने कहलाया है कि हमे आते-आते बहुत देर हो गई, अब कृपाकर राणाजी से एक बार अंतिम मिलन का अवसर दें, क्योंकि लोक व्यवहार मे मै उनके साथ ब्याही गई थी, तो दो बात कर, उनसे अन्तिम विदा तो ले आऊँ! सुलतान को पद्मिनी का यह शिष्टाचार योग्य लगा और उसने तत्काल राणा रतनसेन को बन्धन मुक्त-कर देने का आदेश दे दिया। जब यह शाही आज्ञा लेकर बादल राणा के पास गया तो राणा ने कुपित होकर बादल से कहा—धिक्कार हो बादल! तुमने क्षत्रियत्व को लजाने वाला यह क्या सौदा किया? स्वामीद्रोह करने के साथसाथ तुमने सदा के लिये मेरे कुल मे भी कलक लगा दिया! बादल ने कहा—चिन्ता न करें, यह खेल दूसरा है, आपके भाग्य से सब अच्छा ही होगा।

इन वचनों से राणा मन ही मन सब कुछ समझ गया। सुलतान ने उसे पद्मिनी को जल्दी विदा देने की आज्ञा दी। राणा पालकियों के बीच में से बादल के संकेतानुसार तीर की तरह निकलता हुआ तुरन्त गढ़ में जा पहुँचा। उसके सकुशल पहुँचने के उपलक्ष मे संकेतानुसार जंगी नगारे निसाण बजा दिये गये। चित्तौड़ गढ़ मे राणा के पहुँचने से सर्वत्र हर्ष उल्लास छा गया।

जब गढ मे नौबत बजते हुए सुने तो गोरा बादल ने समस्त सन्नद्धबद्ध सुभटों के साथ शाही सेना मे मार काट मचा दी। विस्तृत शाही सेना तो पहले ही कूच कर कोशों दूर पहुँच चुकी थी। अतः जो चार हजार सुभट सुलतान के पास थे, गोरा और बादल ने घमासान युद्ध करके उनका सफाया कर डाला। अन्त में गोरा ने जब सुलतान पर आक्रमण किया तो वह भागने लगा। यह देख बादल ने कहा—काकाजी इस कायर निर्बल को छोड दो। भगते पर वार करना क्षात्र धर्म के विपरीत है। किले पर खड़े राणा आदि सभी लोग गोरा के वीरत्व की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

इस युद्ध मे गोराजी काम आये, बादल ने सुलतान को जीवित छोड़ कर शाही लश्कर को लूट लिया। दो दिन के बाद सुलतान एक खवास के साथ मारा मारा फिरता नमाज के समय लश्कर के निकट पहुंचा। खवास के खबर करने पर अमीर उमराव आकर सुलतान से मिले। उसे भूखा प्यासा

और बेहाल देखकर उन लोगों ने पूछा कि अपना कटक और पद्मिनी आदि सब कहाँ रह गये ? सुलतान ने कहा—बादल ने हमारे से धोखा किया, पद्मिनी के भरोसे आई हूई पालकियों में से सुभट कूद पड़े और हमारे लश्कर को समाप्त कर डाला। मैं तो रहमान की कृपा से बडी मुश्किल से बच पाया हूँ। मैं वस्तुतः पद्मिनी के मोहजाल में भ्रान्त हो गया था, अन्यथा हिन्दू लोगों की मेरे सामने क्या बिसात थी। इसके बाद सुलतान अपने लश्कर के साथ दिल्ली चला गया। जब बेगमों ने सुलतान से पद्मिनी दिखाने की प्रार्थना की तो उसने कहा—पद्मिनी का मुँह काला किया, खुदा की दुआ से खैरियत हुई। सुलतान की बेगमे खमा! खमा! करने लगी, माता ने कहा—स्त्री के कारण रावण जैसों का राज गया, अब तो खुदा का ध्यान करते हुए आनन्द से राज करो।

सुलतान के भगने पर रणक्षेत्र शोधकर बादल चित्तौड दुर्ग में प्रविष्ट हुआ राणा ने उसे हाथी पर बैठाकर छत्र ढुलाते हुए गढ़ में लाकर नाना प्रकार से सन्मानित किया। पद्मिनी ने आशीर्वाद की झड़ियाँ लगा दी। उसे तिलक करके मोतियों से बधाते हुए पद्मिनी ने उसे अपना भाई करके माना। क्या घरो मे और क्य। बाजार मे सर्वत्र बादल के यशोगान किये जा रहे थे। माता ने बादल को चिरजीवी होने का आशीर्वाद दिया और स्त्रियों ने धवल मंगलपूर्वक हर्ष व्यक्त किया। काकी ने पूछा! तुम्हारे काका ने किस प्रकार शत्रुओं से लोहा

लिया ? बादल ने कहा—माता ! काकाजी की वीरता का कहाँ तक वर्णन करूँ। उन्होंने तो शत्रुसेना का इतना सफाया किया कि मात्र सुलतान अकेला किसी प्रकार बच पाया।' काकाजी का शरीर इस महायुद्ध में तिल तिल-सा छिद्रित हो गया और वे स्वर्गपुरी के मेहमान हो गये। उन्होंने गढ की लज्जा रखी और अपने वंशको उज्वल किया।

पति की वीरता का बखान सुनकर गोरा की स्त्री के रोम-रोम में वीरत्व छा गया और वह पतिपरायणा सतवती सत मे अभिभूत होकर बादल से कहने लगी—बेटा ! ठाकुर स्वर्ग में अकेले हैं और विलम्ब होने से अन्तर पड़ता जा रहा है। अतः अब काकी को शीघ्र ही ठिकाने लगाओ। बादल ने काकी के सत्त की प्रशंसा की। वह सुसज्जित होकर अश्वारूढ़ हुई और राम-राम उच्चारण करते हुए (गोरा के शव के साथ) अग्नि-प्रवेश कर गई।

बादल ने अपने बुद्धिबल, स्वामिभक्ति और शौर्य्य के बल पर राणा को छुडाया, दिल्लीपति को जीता और पद्मिनी की रक्षा की। उसका यश नवखण्ड मे फैला। इस तरह पद्मिनी के शील-प्रभाव और बादल के सानिध्य से रत्नसेन राणा निर्भय राज्य करने लगे।

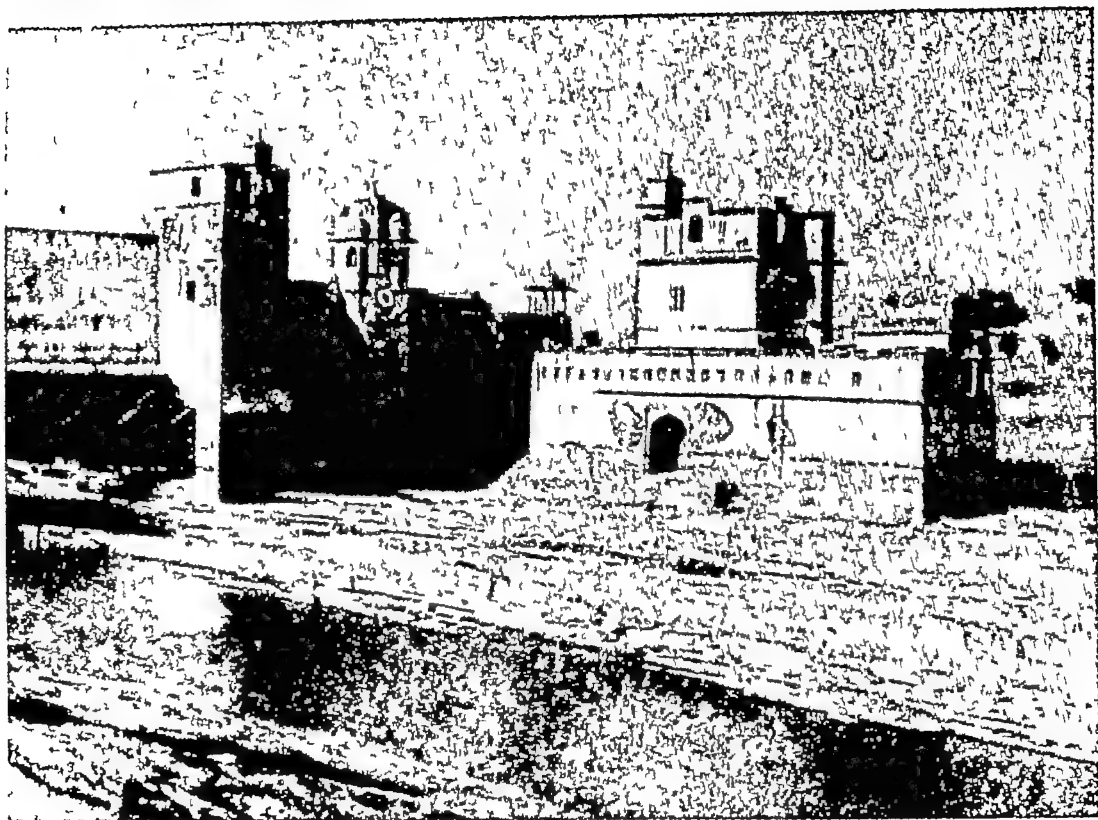
इसके बाद कवि लब्धोदय पद्मिनी चरित्र को सुखान्त समाप्त करता है और प्रशस्ति मे अपनी गुरु परम्परा, वर्त्तमान आचार्य तथा राणा जगतसिंह की माता जबूवती के प्रधान

कटारिया मंत्री भागचद—जो इस रचना के प्रेरक थे—के वश का परिचय देता है। अलाउद्दीन के पुनराक्रमण और पद्मिनी के जौहर की घटनाओं के सम्बन्ध में लब्धोदय तथा दूसरे सभी कवि मौन है।

मलिक मुहमद जायसी के 'पद्मावत' में लिखा है कि राणा को सुलतान अलाउद्दीन गिरफ्तार कर दिल्ली ले गया था पर जटमल प्रतिदिन गढ़ के नीचे राणा को लाकर उसके कोड़े मरवाने का उल्लेख करता है। तथा लब्धोदय आदि ने भी स्पष्ट लिखा है कि राणा को शाही शिविर मे कैद किया गया था, और छुडा कर लाने की सारी घटनाएँ और संकेत इसी बात को पुष्ट करते है। नाभिनंदनोद्धार प्रबन्ध (रचना सं० १३७३) मे श्री कक्कसूरि चित्रकूटपति को पकड कर गले मे रस्सी बाँध कर नगर नगर मे घुमाने का उल्लेख करते हैं जो चित्रकूट से अन्यत्र गमन के पक्ष मे है। संभव हैं यह घटना पुनराक्रमण से सम्बन्धित हो। ऐतिहासिक तथ्यों को शोध कर प्रकाश मे लाना विद्वानों का काम है।



पद्मिनी चरित्र चौपई



पद्मिनी महल, चित्तौड

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

कवि लब्धोदय कृत

पद्मिनी चरित्र चौपई

प्रथम खण्ड

मंगलाचरण

दोहा

श्री आदीसर प्रथम जिन, जगपति ज्योति सरूप।
निरभय[1] पद वासी नमुं, अकल अनंत अनूप ॥ १ ॥
चरण कमल चितस्युं नमुं, चउवीसम जिणचंद।
सुखदायक सेवक भणीं, साचो सुरतरु कद ॥ २ ॥
सुप्रसन सामणि सारदा, होयो[2] मात हजूर।
वुद्धि दियों मुझ नै वहुत, प्रगट वचन पंडूर ॥ ३ ॥
ज्ञाता दाता दान[3] धन, 'ज्ञानराज' गुरुराज।
तास प्रसाद थकी कहुं, सती चरित सिरताज ॥ ४ ॥

कथा-प्रसङ्ग

गौरा वादल अति सगुण[4] सूर वीर सिरदार।
चित्रकूट कीधो चरित, स्वामीधर्म साधार ॥ ५ ॥
सरस कथा नवरस सहित, वीर शृंगार विशेष।
कहस्युं कवित कल्लोल स्युं, पूरव कथा संपेख ॥ ६ ॥
पदमणी पाल्यो शीलव्रत, वादल गौरा वीर।
शील वीर गावत सदा, खाड मिली घृत खीर ॥ ७ ॥

१—निरभय २ हुइज्यो ३ ज्ञानधर ४ गुणी

ढाल १—चउपई नी, राग रामगिरी

चित्तौड़-वर्णन

देश वडो 'मेवाड' दयाल, प्रारथिया दुखिया प्रतिपाल।
'चित्रकूट' तिहा चावो अछै, पहोवी गढ बीजा तसु पछै ॥१॥
गावै मीठे सुर गंधर्व, सुरनर किन्नर देखे सर्व।
तापस तीर्थ तिहा अति कह्या, राम जिहा वनवासें रह्या ॥२॥
ऊंचो गढ लागो आकास, हर भूल्यो जाण्यो कविलास।
हर राणी तव कीधो हास, हिम[1] गढ चढ़ीयो[2] हेमाचल पास ॥३॥
वले[3] अति बाको छै गढ वणो, ऊंची पोलि अनैं सोहामणो।
कोसीसा जे ऊचा कीया, गयण आलंबन थाभा दिया ॥४॥
वहैं नदी सीप्रा[4] विस्तार, कूप सरोवर[5] वावि अपार।
गोमुखकुंड प्रमुख बहुकुंड, पाणी जास पीइं पट खंड ॥५॥
संचा वस्त अनेको तणा, का न रहइ मननी कामिणा।
ऊचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक ॥६॥
सोवन दण्ड धजा करि सोहता, मनड़उ भविक तणा मोहता।
दीपै तिहा जिन शिव देहरा, मोटा सिहर सरद मेहरा ॥७॥
वारू चउरासी वाजार, हुँसी वैठा हारो हार।
राज महल अति रलीयामणा, पुण्य विना ते नहिं पावणा ॥८॥
च्यारे वर्ण वसइ अति चंग, पवन अढारें मन नें रंग।
माणिकचउक न लहैं माग, वन वाड़ी फल फूल्या वाग ॥९॥

---

१ इम २ रच्यौं ३ वलय तीन ४ चित्रा ५ कूवा सरवर

इन्द्रपुरी जाणे अवतरी, कोडीधज लोके करि भरी।
नगर वर्णनो नावे पार, देव रचई[1] ए गढ सार ॥१०॥
चतुर सुणयो देइ नइं चित्त, गुर मुख ढाल अरथ सुपवित्त।
'लब्धोदय' कहै पहली ढाल, आगइ सुणता अछै रसाल ॥११॥
[सर्व गाथा १८]

राजा वर्णन

दोहा

सूर वीर अति साहसी, सव राई मइ सिरमौर।
'रतनसेन' राणो तिहां, जा सम भूप न और ॥ १ ॥
जाकइ तेज प्रताप थइं, दुरजन[2] भागे सव दूर।
अंधकार कैसे रहइ, उदइ होइ जीहा सूर ॥ ३ ॥
अविचल आज्ञा अवनि परि, न्याय निपुण निरभीक।
अरिगज भंजन केसरी, राखे खत्रीवट लीक ॥ ३ ॥
मानी मरदाना वली, दरबारइ दोय लाख।
सुभट खड़ा सेवा करइं, सुरपति वदइ ज्युं साख ॥ ४ ॥
हय गय रथ पायक हसम, करि न सकें कोउ मान।
रयण दूयुस ठाढइ रहे, सनमुख सव राय राण ॥ ५ ॥

पटराज्ञी वर्णन

पटराणी 'परभावती', रूपे रम्भ समान।
देखत सुरनर किन्नरी, अइसी नारि न आन ॥ ६ ॥

---

१ नीमीयो २ अरिजन गये ज दूर

चंदवदन गजराज गति, पनग वेणि मृग नयण।
कटि लचकनी कुच भार तइं, रति अपछर हइं अयन ॥७॥

ढाल २ योगिना रा गीतनी राग-मल्हार

राणी अवर राजा तणें जी, रूप निधान अनेक।
पिण मनडो परभावती जी, रंज्यो करीय विवेक। राजेसर ॥१॥
चतुराई चित दीध. राजेसर, मन मोती गुण बींध ॥रा० च०॥

सतर भक्ष भोजन सर्भे जी, नित-नित नवली[1] भाति। रा०
व्यंजन रूड़ी विध करइजी, खाता उपजैं खाति। रा० ॥२॥ च०॥

रूपवंत नइ रागणी जी, गुणवंती गज गेलि।रा०।
मन राजा रो मोहीयो जी, सोक्या सहुइ ठेलि। रा० ॥३॥च०॥

भोजन तो परभावती जी, हाथ परूसइ हूॅस।रा०।
वीजी राणी वारणैं जी, सहजें जावा सुंस।रा० ॥ ४ ॥ च० ॥

माहो माही मोहस्यु जी, रति सुख माणइ राय। स०।
खिण एक विरह नवी खमइ जी, दीठा दोलति थाय।रा०॥५॥च०॥

पालइ राम तणी परइ जी, न्यायइं राज नरेस। रा०
आप भुजा अरीअण हण्या जी, सरद कीया सहुदेस ॥६॥च०॥

राजकुमार वर्णन

जनम्यो पुत्र महाजसी जी, प्रतापी पुण्यवंत। रा०
'वीरभाण' वखते वड़ो जी, दिन दिन अधिक दीपंत॥७॥च०॥

---

१ नव नव

भोजन प्रसंग

एकण दिन भोजन समइं जी, दासी वोलैं राज । रा०
पीउ पधारो भोजन समइं जी, ठाढो होवै नाज ।।रा०।।८।।च०।।

सिंहासन सोवन तणो जी, आवै बैठा राज ।रा०।
रतन जड़ित थाली वड़ी जी, कनक कचोला बाज[1] रा०।।९।।च०।।

रूडी परइं परुसइं रसवती जी, राजा जीमइ राग ।रा०।
खाटा मीठा चरपरा जी, सखर वणाया साग ।रा०।।१०।।च०।।

कदली दल हाथैं करी जी, ढोलैं सीतल वाय ।रा०।।
विचि विचि मीठी वातडी जी, जीमता घणो जीमाय।।११।।च०।।

मोसा दोसा मसकरी जी, हासै, वीनती तेह ।रा०।
कहिवो हुवै ते सहु कइइ जी, भोजन अवसर जेह ।।१२।।च०।।

जीमता रूडी जुगति स्युं जी, कहि राजा किण हेत ।रा०।
स्वाद रहित सव रसवती जी, का न करो चित चेत ।।।१३।।च०।।

आजकालिए रसवती जी, निपट करो निसवाद ।रा०।
कहि चतुराइ किहा गइ जी, कै पकस्यो परमाद ।।१४।।च०।।

तव तटकी वोली तिसइं जी, राणी मन धरि रोस ।रा०।
राणी[2] आणो का नवी जी, द्यो मति मुझनै[3] दोस।।१५।।च०।।

म्हे केलवि जाणा नहीं जी, किसो अ करीजैं वाद ।रा०।
पदमणि का परणो नवी जी, जिम भोजन्न हुवै स्वाद ।।१६।।च०।।

---

१ साज २ नारी ३ झूठा

राजा गुरु स्त्री आगि नो जी, नवि कीजैं आसग ।रा०।
'लब्धोदय' इण परि कहें जी, वीजी ढाल सुरंग[1] ।।१७।।च०।।
[सर्व गाथा ४२]

पद्मिनी पाणिग्रहण प्रतिज्ञा

दोहा

रीसाणो ऊठ्यो तुरत, तजि भोजन तिण वार ।
राणो तो हुं रतनसी, परणुं पदमणि नारि ।। १ ।।
मोसा तो बोल्या मुनें, जइं मे राख्यो मान ।
हिवें परणुं तरुणी पदमणी, गालुं तुज्झ गुमान ।। २ ।।
मूरिख तें मुझ नें गण्यो, वचन कह्यो अविचार ।
जो पदमणि हाथे जीमस्युं, तो आवुं तुझ वार ।। ३ ।।
मान गहेली मानिनी, विरुअउ बोल्यो वयण ।
विण आदर न रहें कदे, सिंह सूर नें सयण ।। ४ ।।

गाहा

जणणी जण बंधू, भजा गेह धण च धन्नं च ।
अवि माणया पुरिसा देस दूरेण छंडंति ।। ५ ।।

दोहा

कीधी परतज्ञा इसी, मन सेती महाराय ।
पदमणि परणुं तो घरि रहुं, नहिं तो गिरि वनराय ।। ६ ।।

---

१ सुचग

सिंहलद्वीप प्रस्थान

ढाल (३) राग—मारू केदारो, चाल करतासु तो प्रीति सहुँ हूँसी करै

इम चित[1]विमासी राय, अश्व दोय घन भर्या रे। अ०
साथें एक खवास, छाना नीसर्या रे। छा० ॥ २ ॥

छल करि दोन्युं असवार कि, चाकर नें धणी रे। चा०
जाता नवि जाणें कोइ कि, गया ते भूंय घणी रे॥ भू० ॥२॥

स्वामी कहूँ कारिज साच कि, सेवक इम भणें रे। से०
अणजाण्यां आधि न सेठ कि, दोड्या किम वणें रे। दो० ॥३॥

विण गाम किहा थी सीम कि, मेह विण वादलइ रे। मे०
ऊखर नवि ऊगै अन्न कि, न खेती विण हलइ रे। न० ॥४॥

तिण हेतइं भाखो मुझ कि, गुझ हिरदै तणो रे। गु०
कीजै तसु उपरि काज कि, विचारी आपणो रे। वि० ॥५॥

तव बोल्यो राजा एम कि, परणुं पदमणी रे। प०
आदरि करि करिहु उपाय कि, बात कहुं सी घणी रे। वा० ॥६॥

बोलें सेवक धन्न मो पास कि, असंख्य गाने घणो रे। अ०
पिण नवि जाणुं गृह गाम कि, ठाम पदमणि तणो रे। ठा०॥७॥

थानिक जाणे विण मारग कि, कह्यो बूझया किणै रे। क०।
तरु तलि लीधो विश्राम कि, ते वेहु जणें रे। ते० ॥८॥

---

१ चिंतवि मन सइं

तिण वेला पंथी एक कि, भूख त्रिस भेदीयउ रे। भू०
विण अमलें गहिलें देह कि, पंथ[1] अति देखियउ[2] रे। पं० ॥९॥

अटवी माहि माणस एक कि, जोता नवि जुड़यो रे। जो०
तदि देख्यो राजा तेण कि, पगि आवी पड़यो रे । प० ॥१०॥

कीधा सीतल उपचार कि, अमल पाणी दीयो रे। अ०
भोजन मेवा बहु भाति कि, राय संतोषीयो रे। रा० ॥११॥

पंथीक नै कोतिक वात कि, राय पूछें वली रे। रा०
देख्यो तें पदमणी देश कि, किहा हि सांभली रे । कि० ॥१२॥

सुणि राजन सिंघलद्वीप कि, दक्षिण दिशि अछै रे। द०
आडो वहै जलधि अथाह कि, पार जेहनो न छै रे । पा० ॥१३॥

तिहा पदमणि नारि अनेक कि, रूपें अपछरी रे। रू०
सुणि राजा देइ कान कि, सीख तिण सुं करी रे। सी० ॥ १४ ॥

मनि आणियो महाराय कि. दीप सिंघल भणी रे। दी०
चालविया चपल तुरंग कि, पवन थी गति घणी रे। प० ॥ १५ ॥

लाव्या गिर नगर निवाण कि, सूर अति साहसी रे। सू०
दोन्यु आया दरिया तीर कि, मन मांहि अति खुशी रे म०॥१६॥

जगि पुण्य सहाइ जास कि, तास पूर्जे मन रली रे। ता०
मुनि 'लब्धोदय' कहै एमकि, को न सकै कली रे। को० ॥ १७ ॥

---

१ पंख २ खेदियउ

समुद्र वर्णन

दोहा

जल भरीयो दरीयो घणो, उछलता उद्धान।
कल्लोले कल्लोले थी, उदक वध्यो असमान ॥ १ ॥

मच्छ कच्छ माहिं घणा, न सकें जाय जीहाज।
न चले जोरो नीरस्युं, कीज्ये किसो इलाज ॥ २ ॥

चिंता मन भूपति चतुर, स्युं कीजै जगदीस।
वेलि महा वीहामणी, पूजें केम जगीस ॥ ३ ॥

पदमणि स्युं पाणीग्रहण, विचि वारिधि अति क्रूर।
ऊखाणो साचो हुओ, वाघ नदी जल पूर ॥ ४ ॥

गुड़ मीठो ऊंडी नदी, आय मिल्यो ए न्याय।
हिकमति सी बीजी हिवें, कीजें कोउ उपाय ॥ ५ ॥

योगी मिलन

जावइं आघो जेहवें, सेवक लीधो साथ।
जोग पंथ साधइ जुगति, निरख्यो अउघडनाथ ॥ ६ ॥

काने मुद्रा कनक की, आसण चीता चर्म।
लगाय विभूति तप जप करें, ते साधें शिव धर्म[1] ॥ ७ ॥

---

1 शर्म

ढाल (४)—सिहरा सिहर मधुपुरी रे, कुमरा नदकुसार रे एदेशी

राग—कालहरो

सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयो आदेश रे।
वार वार वीनति करी रे, लागो पाय नरेश रे॥ १॥
वाल्हेसर सांमी, मानि नें तु अंतस्यामी,
मानि नें शिवगति गामी, वीनतड़ी मुझ मानो वा० ॥ आकणी ॥
मुझ मनि सिंघलद्वीप नी रे, पदमणि देखण चाह।
तुझ परसादे सहु हस्यें रे, हिव मुझ सी परवाह रे वा० ॥ २ ॥
विविध त्रिनय वचने करी रे, सुप्रसन्न हुओ साम।
आँखि उघाड़ी देखीयो रे, वोलायो ले नाम रे। वा० ॥ ३ ॥
भूपति मन अचरिज थयो रे, किम जाण्यो मुझनाम।
ए ज्ञानी आयस अछे रे, पूरवस्यें मुझ हाम रे।वा०।४।
जोगी जंपे राणजी रे, तु आयो मुझ थान।
कारिज थारो हुँ करु रे, जो गुरु लागो कान रे।वा०।५।
ईम कही साही समरणी रे, हाथे वेऊं असवार रे।
आयस अंवर ऊडीयो रे, लागी वार न लिगार रे।वा०।६।

सिंहलद्वीप प्रवेश

सिंघलद्वीपे मूकि नें रे, आयस हूअउ अलोप रे।
राजा रो मन रंजीयो रे, देख्यो नगर अनोप रे॥ वा०।७।

पद्‌मिनी दर्शन

सोवन महल सोहामणा रे, इन्द्रपुरी अवतार।
रतनजडित गोखें भली रे, बैठी राजकुमार रे ।।वा०।८।।
साथें सखी रे झूलरें रे, गज गति चालें गेल।
चतुरा मनड़ो मोहती रे, साची मोहन वेलि रे ।वा०।।६।।
थानिक थानिक नव नवा रे, नाटिक निरखें राय।
हय गय हाट पटण घणा रे, जोता आघा जायरे ।वा०।।१०।।

ढंढेरा श्रवण

नगर मध्य आया तिसें रे, ढंढेरा नो ढोल।
राजा वाजा साभली रे, वोलै एहवा बोल रे ।वा०।।११।।
पटह छवी नइं पूछीयउ रे, ढोल वाजे किण काज।
तव वोल्या चाकर तिके रे, वात सुणो महाराज रे ।वा०।।१२।।
सिंहलद्वीप नो राजीयो रे, 'सिंघलसिंघ' समान।
तास बहिन पदमणी रे, रूपें रंभ समान रे ।।वा०।।१३।।
जोवन लहस्या जाय छे रे, परणें नहिं ते वाल।
परतिज्ञा जे पूरवे रे, तासु ठवे वरमाल रे ।वा०।।१४।।
जीपें वाधव नइं जिकोरे, ते परणैं भरतार।
तिण कारण मुझ राजीयोरे, पडह दीधो तिण वार रे ।वा०।।१५।।
'रतनसेन' राजा कहे रे, हुं जीपूं निरधार।
मल्लाखाडें रण मुखें रे, रामति कउण प्रकार रे ।वा०।।१६।।
राजा मन आणंदीयो रे, रामति जीपें एह।
सुणि पंथी शेत्रुंजनी रे रामति जीपें जेह रे ।वा०।।१७।।

वाचा साची आपस्यु रे, आपु अति सनेह ।
अर्द्ध राज भंडार नो रे, भग्नीपति हुइ जेह रे ।वा०॥१८॥
राजा मन आणंदियो रे, रामति जीपें एह ।
'लब्धोदय' कहै सदा रे, पुण्य सहाय तेह रे ।वा०॥१६॥

क्रीड़ा विजय

दोहा

'रतनसेन' राजा कहे, पूछो सिंघल भूप ।
कओल थकी चूके नहिं, कीजें खेल अनूप ॥ १ ॥
सेवक जाइ विनम्यो, हरख्यो सिंघल राय ।
वोलावी वहु मानसु, वइठण दीधौ नाय ॥ २ ॥
रामति रमवा रंग स्युं, वैठा वेऊं आय ।
जाणै सूर अनें ससी, मिलीया एकण ठाय ॥ ३ ॥
पासे वेंठी पदमणी, कोमल कंचन काय ।
राणो रूड़ी विधि रमे, तिम तिम आवैं दाय ॥ ४ ॥
ए छै कोई राजवी, रूपवंत रति राज ।
जो जीपें किम ही करी, तू तोठो महाराज ॥ ५ ॥

ढाल (५) ढुढणीया री मेवाडी देशी, मेवाडि देशे प्रसिद्धास्ति

रमता हे सखि रमता रूडी रीत,
रसीयो हे सखि रसियो पदमणि मन वस्यो जी ।
जीतो हे सखि जीतो हे राणो जोध,
सिंघल हे सखी सिंघल हास्यो मन उलस्यो जी ॥१॥

दोहा

पान पदारथ सुघड नर, अण तोल्या विकाय।
जिम-जिम पर भूयें संचरें, (तिम) तिम मोल मुहुंगा थाय ॥१॥
हंसा ने सरवर घणा, कुसुम घणा भमराह।
सुगुणा[१] नें सज्जन घणा, देश विदेश गयाह ॥ २ ॥

पद्मिनी विवाह

ढाल तेहिज

रंगे हे सखि रंगे घालै वरमाल,
घालै हे सखि घालै हे जयमुख उचरं जी ।१
सिंघल हे सखि सिंघल भूप सनेह,
रूड़ी हे सखि रूडी हे साहमणि करें जी ।२।
वहिनी हे सखि वहिनी हे पद्मणि विवाह,
कीधो हे सखि कीधो लीधो जस घणो जी ।
आधो हे सखि आधो हे देस भंडार,
दीधो हे सखि दीधो कओल सुहामणोजी ।३।
दासी हे सखि दासी हे दोय हजार,
रूपे हे सखि रूपे हे रति रम्भा वणी जी ।
हाथी हे सखि हाथी हे हेवर हेम,
परिघल हे सखि परिघल दे पहिरावणी जी ।४।
राणी हे सखि राणी हे अति हे सरूप,
एहवी हे सखि एहवी नारि म को अछै जी ।

१ सापुरिसा थानिक घणा

भमरा[1] हे सखि भमरा भमइं अनन्त,
नारी हे सखि नारि हे सहु तिण पछें जी ।५।
परिमल हे सखि परिमल महकै पूर,
वासें हे सखि वासें हे भमरा चमकीया[2] जी ।
माणस हे सखि माणस केही मात[3],
हींसे हे सखि हींसे हे देव तणा हिया जी ।६।
राणो हे सखि राणो हे अति रढाल,
घरणी हे सखि घरणी मनहरणी वरी जी ।
मननी हे सखि मननी हे पूगी आस,
सफली हे सखि सफली परतग्या करीजी* ।७।
दिन दिन हे सखि दिन दिन नव नव भोग,
पूरें हे सखि पूरें हे सिंघल सुख सहु जी ।
रलीया हे सखि रलिया दिन नें रात,
रहता हे सखि रहतां हे दिवस बहू जी ।८।
अवसर हे सखि अवसर हे पामी राय
मागे हे सखि मागे घर नी सीखडी जी ।
वीनती हे सखि वीनती हे तुम्ह स्युं एह,
मा सुं हे सखी मासुं हे मति करयो अड़ी जी ।।६।।

---

१ रम्भा हे सखि रम्भा रति इंद्राणी, अपछर हे सखि अपछर पदमणि रइ अछै जी २ वसिकीयाजी ३ गात

* साहसियां लच्छी हुवइ, नहु कायर पुरुषाह
कानै कुण्डल रयणमइ, मसि कज्जल नयणांह १

राजा हे सखी राजा हे सिंघल नाम,
राणी हे सखि राणी हे पहुंचावण भणी जी।
साथें हे सखी साथे सैन्य अपार,
आवें हे सखि आवें हे तटि दरिया तणैं जी ॥१०॥
पूर्यां हे सखी पूरया हे सथ्थल जीहाज,
वैंठा हे सखी वैंठा दोन्यु राजा रंगस्यु जी।
पुहुँच्या हे सखी पहुँच्या हे वारिधि पार,
सेना हे सखी सेना हे वणी चतुरंग स्युं जी ।११।
तंवू हे सखी तंवू हे दरीया तीर,
खाच्या हे सखि खाच्या हे दल वादल भला जी।
महीमानी हे सखी महीमानी हे वणे हेत,
मांडया हे सखी माड्या हे भोजन भला[1] जी ॥१२॥
माहो माहिं हे सखी मांहो माहि हे रंग,
गाढा हे सखि गाढा सुख दोन्यु सगा जी।
चलीयो हे सखी चलीयो हे सिंघल भूप,
पुंहुंचावी हे सखी पहुंचावी हे दरिया लगे जी ॥१३॥
जाणी हे सखी जाणी हे राणा जाति,
हरख्यो हे सखी हरख्यो हे सिंघलपति सही जी।
सीधा हे सखि सीधा हे वंछित काज,
पद्मणी हे सखि पद्मणी हे मन मे गहगही जी ॥१४॥

---

१ भटकलाजी

पुण्यें हे सखी पून्ये हे सघला सुख,
रन[1] मइं हे सखि रन में हे रंग लीला लहै जी।
पामें हे सखी पामे हे नव निधि सुख,
मुनिवर हे सखी मुनिवर हे लब्धोदय कहै जी ॥१५॥

परवर्त्ती चित्तौड़ प्रसंग

दोहा

वात सुणो हिव पाछली, राजा नी मन रंग।
छानो छटक्यो भूपती, कोई न लीधो संग ॥ १ ॥
राजा विण सोभे नहीं, राज सभा ने रात।
सोभो गढ सारैं कीयो, पिण नवी[2] जाणी वात ॥ २ ॥
जाय पूछ्यो महल में, राणी भाख्यो साच।
पदमणि परणेवा सही, चाल्यो पालण वाच ॥ ३ ॥
सभा माहि बैठो सकज, वीरभाण वड़ वीर।
कूड़ी वातज केलवी, पालें राज सधीर ॥ ४ ॥
लोका आगें इम कहै, माहि बैठा जाप।
जपें प्रथवीपति जेहथो, पहवी वधइं प्रताप ॥ ५ ॥

ढाल ६—ता भव बंधण थी छोडि हो नेमीसर जी, ए देसी

इम पालता राज हो राजेसर जी,
वउल्या पट खंड मास उपर वलि दिन घणा।
संकाणा मन मांहि हो राजेसर जी,
सहु कोई सेवक राणा तणा जी ॥ १ ॥

---

१ रन्नइ हे सखि रन्नइ वेलाउल लहैजी २ भवि लाधी वात

बाहिर नव-नव खेल हो रा० राति दिवस करतो रहतो खड़ो जी।
मुंहल मूल न देइ हो रा० मास्यो होइं रखे राजा वडो जी ।।२।।

चित्तौड़ आगमन

करता एहवी बात हो रा० राजा आयो रतन सुहामणो जी।
हैंवर दोय[1] हजार हो रा० गैंवर दोय सहस गाजे घणा जी ।।३।।
पालखी परधान हो रा० दोय हजार सहेली सुंदरी जी।
पटराणी ता बीच हो रा० सोवन कलसे पालखी करी जी ।।४।।
मदमाता मातंग हो रा० हींसे हय पायक वल अति घणाजी।
आया ते चित्रकोट हो रा० शूरा पूरा सुभट सुहामणा जी ।।५।।
नेजा कुहक वाण हो रा० वाजे वाजा पंच शवद भला जी।
सूणीय नासें शत्रु हो रा० रजि उडी रवि छायो वादला जी ।।६।।
परदल आया जाणि हो रा० कोलाहल हलचल हुई अति घणीजी।
चित चमक्यो वीरभाण हो रा० धाया शूर सुभट
जूझण भणी जी ।।७।।
तेहवें नृप नउ दूत हो रा० कागल लेई राजमहलें गयो जी।
वाची सगली वात हो राजेसर जी
गढपति आयो गढ आणंद थयो जी ।।८।।

चित्तौड़ प्रवेशोत्सव

मोलावी कोटवाल हो रा० वूहारी[2] जल छाट्या वली जी।
फूल अवीर विछाय हो रा०सिणगास्या वाजार हो सोभाभलीजी।।६।

१ चार २ बुहरावैं जल छंटाव्या गली जी

तोरण बाध्या बार हो रा० पोलि आरीसा सूरीज जलहलें जी।
वाजे गुहीर नीसाण हो रा० घरि-घरि ऊँची गूढी ऊछलेजी ॥१०॥

सोवन साखित सार हो रा० झूलमती चाले आगे हीसता जी।
सीसें तेल सिंदुर हो रा० गयवर जाणे परवत दीसताजी ॥११॥

सूहव करि सिणगार हो रा० पूरण कलस ले आवे कामनी जी।
मलपति गावैं गीत हो रा०
धन दिवस आयो अम्ह गढ़ धणी जी ॥१२॥

सोवन चउक पुराय हो राजेसरजी,
मोतीया वधावे राय राणी भणी जी।
जीवो कोड़ि वरीस हो राजेसर जी,
गज गामनि असीस दीइ[1] घणी[2] जी ॥१३॥

पाए लागे दोड़ि हो रा० कुमर सकल सेवक साथें करी जी।
वात करें कुसलात हो रा० राजा प्रजा सगली राज रीजी ॥१४॥

गज चढ़े ढलकती ढाल हो रा० पाउ पधारया राजा गढ ऊपरेंजी।
जग हूवो जसवास हो राजेसर जी,
धन राजा राणी जगि उचरैं जी ॥ १५ ॥

छठी ढाल रसाल हो रा० सामहेलें घरि आयो राजियो जी।
'ज्ञानराज' गणि सीस हो राजेसर जी,
मुनि 'लालचंद' कहै हरख्यो हीयो जी ॥ १६ ॥

दोहा

राणौ आयो रतनसी, लोक सहू आणंद।
महिलां पउधारै तरै, मेल्यौ सगलौ दंद ॥ १ ॥
जाइ मिलिया परभावती, म्हे पाली बोली वाच।
अब थां सुं ऊरण हुया, पदमणी आणी साच ॥ २ ॥

ढाल (७) रागधन्यासी, १ जाइरे जीयरा निकसि कैं एहनी देसी,
२ बात म काढो व्रत तणी ए देशी

मोटा महेल मनोहरू, पदमणी वासा जोगो रे।
विचरै साथ सहेलीया, भोगवती सुख भोगो रे ॥
मोटा महल मनोहरु ।आकणी।
रतनसेन राणो गयो, पटराणी ने पासै रे।
परणे आया पदमणी, हिवै दीज्यो सवासो रे ॥२॥मो०॥
वचन तुम्हारो मैं कियो, अमनें केहो दोसो रे।
स्वाद करी जीमस्या हिवै, करस्या केहो[1] सोसो रे ॥३॥मो०॥
वचन सुणी दीवाण ना, वीलखी हुई ते नारी रे।
परभावती मन चिंतवै, हिवें कीज्यै किसुं विचारो रे ॥४॥मो०॥
मे मारैं हाथें कियो, केहो कीजे सोसो रे।
दोस जिको मुझ वचन नो, कीजे किणसुं रोसोरे ॥५॥ मो०॥*

---

१ कायापोसोरे

* आत्मानों मुख दोषेन, बध्यन्ते शुक सारिका। बकास तत्र न बध्यते, मौनं सर्वार्थ साधनः

प्रथम खंड प्रशस्ति

गिरुओ गच्छ खरतरतणो, जाणें सकल जीहानों रे।
गच्छनायक लायक वडो, जंगम युगिपरधानो रे ॥६॥मो०॥
श्री जिनरंगसूरीसरु, तसु श्राविक सिरताजो रे।
कुल मडण कटारीया, मंत्रीसर हंसराजो रे ॥७॥मो०॥
जेहनो जस जगि महमहें, करणी सुकृत कुवेरो रे।
परम भगति गुरुदेव रा, वड दाता मन मेरो रें ॥८॥मो०॥
भाई डुंगरसी भलो, लघु वंधव गुण वृंदो रे।
दुखिया दलिद्र भंजणो, भागचंद कुलचंदो रे ॥९॥मो०॥
तास तणो आदर करी, संवंध रच्यो सिरताजो रे।
पाठक ज्ञानसमुद्र तणा, शिष्य मुख्य ज्ञानराजो रें ॥१०॥मो०॥
सुपसाइं श्री गुरु तणै, 'लब्धोदय' गणि भाखें रे।
प्रथम खंड पूरौ कियो, धरम तणै अभिलाषै रें ॥११॥मो०॥

इति श्री राणा श्रीरतनसिंह पदमणी परणी पनोता
प्रथम खण्ड ॥१॥[1]

---

[1] इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा वध श्रीज्ञानराजगणिराजाना शिष्यमुख्य पंडित लब्धोदय गणि विरचित कटारिया गोत्रीय मंत्रीश्रीहंसराज मंत्री श्रीभागचंदानुरोधेन राणा श्री रतनसिंह पदमणी परणयनो नाम प्रथम खड ॥१॥

द्वितीय खण्ड

मंगलाचरण

वाणी निर्मल विस्तरै, नव खंडेहि नाम।
तिण हेतें श्री गुरुभणी, प्रथम करूं प्रणाम ॥१॥
सुगण सुणेज्यो श्रुतिधरी, परहो तजो प्रमाद।
बीजें खंड वखाणता, सुणता उपजै स्वाद ॥२॥

पद्मिनी सौंदर्य वर्णन

ढाल १ बागलीया री

राति दिवस भीनो रहै रे, पदमणि स्युं बहु प्रेम रे रंग रसीया।
पंच विषय सुख भोगवै रे, दोगंधक सुर जेम रे रंग रसीया ॥१॥
राय राणी मन वसिया, अविहड
जिम जोडी रसिया, जिम कंचन रस रसीया।
जिम जोड़ी सारसीया रे, अविहड़ लागी प्रीत रे रंग रसीया।आ०।
जीव एक नइं जूजूई रे, देही दीसें दोइ रे रंग०।
चित लागो चतुरां तणो रे, चोल तणी परि जोइ रे रंग० ॥२॥

चंदवदन ऊपरि घटा रे, सोहै वेणीदण्ड रे रंग० ।
(अथ) मृगानयणी ऊपरइ रे, बाध्यो जाल[1] प्रचण्ड रे रंग० ॥३॥
ताटी मरकत मणि तणी रे, अथवा जाणि भुजंग रे रंग०
घाटी मन घेरण तणी रे, पाटि वणीय सुचंग रे रंग० ॥४॥
सैंथो सिंदूरइ भर्यो रे, जाणे रविकर एक रे रंग० ।
कच[1] तम पामी एकली रे, बाधी सब धरि टेक रे रंग० ॥५॥
सीसफूल तारा भला रे, अरधचंद सम भाग रे रंग० ।
विंदी जाणे मणि धरी रे, पीवत अमृत नाग रे रंग० ॥६॥
श्रवण किना सोवन तणी रे सीप सुघट मन फंद रे रंग० ।
कुंडल रे मिसि देखवा रे, आया सूरज चंद रे रंग० ॥७॥
अणियाले काजल भरी रे, निपट रसीले नयण रे रंग० ।
चंचल चतुरां चित हरइ रे, देखत उपजैं चैन रे रंग० ॥८॥
नयण कमल ऊपरि वण्या रे, भूंहा भमर समान रे रंग० ।
दीपशिखा सम नासिका रे, देखण रूप निधान रे रंग० ॥९॥
नासा शुक सोवन तणी रे, वेसर मोती जेह रे रंग० ।
आव[2] सोवट द्यै चंच में रे, विधु बालक सस्नेह रे रंग० ॥१०॥
काया सोवन तसु तणी[3] रे, गोरा गाल रसाल रे रंग ।
आरीसा कंदर्प तणा[4] रे, चंद[5] सरीसो भाल रे रंग० ॥११॥
पाका विंव मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे रंग० ।
मासोल्या जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खाण रे रंग० ॥१२॥

---

१ कंचि २ अंब मउर ३ ताया सोवन तवक सा ४ नो ५ कुंकम जेवा लाल रे०

(जाणें) मोती लड़ पोई धस्या रे, अधर विद्रुम विचि दंत रे रंग०।
चमकै चूनी सारिखा रे, दाड़िम कूलीय दीपंत रे रंग० ॥ १३ ॥
कोकिल कंठ सुहामणो रे, पति भुज वल्ली खम्भ रे रंग० ।
मोतिन की दुलड़ी वणी रे, त्रिवली रेख अचंभ रे रंग० ॥ १४ ॥
भुजादण्ड सोवन घड्या रे, कोमल कलस[१] सुनालि रे रंग० ।
मूगफली चम्पा कली रे आंगुलिया सुविशाल रे रंग० ॥ १५ ॥
कनक कुंभ श्रीफल जिसा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे रंग० ।
पाका वील नारिंग सा रे, मानुं युगल चकोर रे रंग० ॥ १६ ॥
कोमल कमल ऊपरें रे, त्रिवली समर सोपान रे रंग० ।
कटि तटि अति सूछिम कही रे, थूल[२] नितंब वखाण रे रंग० ॥१७॥
जघा सुंडा करि वणी रे, उलटो कदली खंभ रे रंग० ।
सोवन कच्छप सारिखा रे, चरण हरण मन दंभ रे रंग० ॥१८॥
सकल रूप पदमणि तणो रे, कहत न आवै पार रे रंग० ।
'लब्धोदय' कहै आठमी रे, ढाल रसिक सुखकार रे रंग० ॥१९॥

दोहा

हंस गमणि हेजइं हीइं, राति दिवस सुख संग ।
राणो लीण हुओ तुरत, जिम चन्दन तरुहि भुजंग ॥ १ ॥
दूहा गूढ़ा गीत स्युं, कवित्त कथा बहु भाति ।
रीझवियो राणो चतुर, क्रीड़ा केलि करंति ॥ २ ॥

१—कमनसुमाल २ पृथुल

राघव चेतन का दरबार प्रवेश

इम रहता सुख सुं सदा, जे हूओ छै विरतंत ।
सुणयो चित्त देइ[1] सुगण, मन थिर[2] करी एकंत ॥ ३ ॥
राघव चेतन दोइ वसे, चित्रकूट मे व्यास ।
राति दिवस विद्या तणो, अधिको अछे अभ्यास ॥ ४ ॥
राजा मान दियो घणो, भारथ वाचे आय ।
राज लोक मे रात दिन, महल अमहलें जाय ॥ ५ ॥

राघव चेतन पर कोप

ढाल (२) राग—गौडी, मन भमरा रे० ए देसी,

एकणि दिन पदमणि तणै मन रंगें रे,
संगइ बैठो राय लाल मन रंगेंरे ।
क्रीड़ा आलिंगन करें मन रंगें रे, तेहवें व्यासजी जाय लाल० ॥१॥
राघव ऊपरि कोपीयो मन०, मूंह चढ़ाई राय लाल मन रंगें रे ।
होठ बेहुं फुर फुर करइ मन०, किम आयो अण प्रस्ताव लाल० ॥२॥
फिट रे पापी बंभणा मन रंगें रे, मूरिख जट्ट गमार लाल मन रंगेंरे ।
फिट रे थोथा[3] पंडीया मन रंगें रे,
मूल[4] न समझै गमार लाल मन रंगें रे ॥ ३ ॥
अणरुचती वातां करै म० अणतेड्यो आवें गेह लाल०
बोलें अणबोलावीयो म० साचो मूरिख तेह लाल० ॥४॥

---

१ कान २ तन ३ पोथा ४ साचउ मूरिखि विचार ।

आपही वात कहें हसें म० वेसणो आप ही लेह लाल०
विहु आलोच करता विचै म० जावै चतुर न तेह लाल० ॥५॥

गेंरसहेंल नृप मंदिरें म० एकते नर नारि लाल०
लाज समें जावइं जिको म० ते मूरिख निरधार लाल० ॥६॥

निभ्रँछ्यो राघव भणी म० काढ्यो हाथ ज साहि लाल०
जाता भुँइ भारी पडी म० पहुतो निज घर माहि लाल० ॥७॥

राजा रूठो इम कहें म० पदमणी देखी व्यास लाल०
आँखि कढावुं एहनी म० तो मुझ ने स्यावास लाल० ॥८॥

वात सुणी राजा तणी म० एम विचारै व्यास लाल०
राजा मित्र न जाणीइ म० सिंह किसो वेसास लाल० ॥९॥

काके सौचं, द्यूतकारेषु सत्यं ज्ञाने भ्रातिः स्त्रीषु कामोपशाति
क्लीवेधैर्यं मद्यपे तत्वचिन्ता, राजा मित्रो केन दृष्टं श्रुतं वा ।१

अत्यासन्न विनासाय दूरस्था निष्फला भवेत् ।
सेव्यता मध्यम भावेन राजा वन्हि गुरुस्त्रियः

राजा री रीस भली नहीं म० चितचमक्यो राघव व्यास लाल०
न हुवे दोन्यु वातड़ी म० एक वैर नें वास लाल० ॥१०॥

आलोचे मन आपणे म० छोड्यो गढ चीतोड़ लाल०
द्रव्य देई नइं नीकल्या म० राघव चेतन जोड़ लाल० ॥११॥

त्यजेदेकं कुलस्यर्थे, ग्रामार्थे च कुलंत्यजेत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थेपृथिवी त्यजेत्

राघव चेतन दिल्ली गमन

१ दिन थोड़ै दिल्ली गयो म० नगर हुओ जस नाम लाल०
योतिष जाणै अति घणो मन०
विविध विद्या गुण धाम लाल० ॥१२॥
शास्त्र अनेक वाचै भणै म० नव रस पोपइ नित लाल०
सौ सौ अरथ नवा करै म० चतुरा मोहै चित्त लाल० ॥१३॥
वल पूरो विद्या तणो म० तेहनें स्यो परदेश लाल०
'लालचन्द' कहै सांभलो म० विद्या मान नरेश लाल० ॥१४॥

शाही दरबार प्रवेश

दोहा

सद्विद्या धन सासतो, विद्या रूप सुहाग ।
मान महातम[१] जस अधिक, विद्या मोटो भाग ॥१॥
पातिस्याह दिल्ली तदा, जास अखंडित आण ।
अविचल तेज अलावदी, प्रतपो वारह भाण ॥२॥
एक छत्र महि भोगवैं, जस नव खडे हि नाम ।
सुर नरपति जाथें डरै, सेवकहि करै सिलाम ॥३॥
सेना सतावीस लख, भंजै अरि भड़वाह ।
तिण सुणीया बाभण गुणी, तेड़ायो धरि चाह ॥४॥
श्लोक कवित अभिनव करी, आया आणंद पूर ।
आदर सु आसीस द्यै, हजरति साहि हजूर ॥५॥

---

१ महतजस भोग सुख

ढाल (३) अलबेल्या नो। काहिनइ किहांथी आविया रे लाल ए चाल०

श्लोक कवित्त कथा करीरे लाल, रीझ्यो निपट[1] पतिसाहि रे सो०।
सकल लोक धन-धन्न कहे रे लाल, विद्यावंत अथाह रे सो० ॥१॥
चतुर पंडित ब्राह्मण गुणनिलो[2] रे लाल। आकणी
पातिसाहि दिल्ली तणो रे लाल, द्यै नित मोज अनेक रे सोभागी
गाम पाचसै अति भला रे लाल,
मनमइ धरीय विवेक रे सोभागी ॥२॥च०॥
इम रहता आणंद स्युं रे लाल, दिल्लीपति रै पास रे सोभागी।
एक दिन राणा जी दीयो रे लाल,
तेह वैर चितारें व्यास रे सोभागी ॥३॥च०॥

राघव चेतन का प्रतिशोध षड़यन्त्र

वयर वाल्हू हिवें माहरो रे लाल, छूड़ायो गढ गेहरे सो०
तो काढ़ूं चित्रकूट थी रे लाल, अपहरी पदमणी तेहरे सो० ४
सैंमुखी काम न कीजिइं रे लाल, जे पर पूठें थायरे सो०
आलोची मन आपणै रे लाल, माड्यो एह उपाय रे सो० ॥५॥
भाईपणो एक भाट स्युं रे लाल, खोजा स्युं मन खंति रे सो०
मान दान देई घणो रे लाल, मित्र कीयो एकंति रे सो० ॥६॥
साहि तणै दरवार में रे लाल, पदमणि केरी वात रे सो०
जिण तिण भाति काढ़ज्यो रे लाल, मुझ मन एह सुहात रे सो० ॥७॥

१—मानि २ गुणी

एक दिन कोमल पाखडी रे लाल, भाट लेइ निज हाथ रे सो०
आवी सभा मे वीनवै रे लाल, चिरंजीवो नरनाथ रे सो० ॥८॥

अथ भाट वाक्य

॥ कवित्त ॥

एक छत्र जिण पुहवी, निश्चल कीधी धर उप्पर।
आणं कित्ति नव खंड, अदल कीधी दुनीय प्पर॥
नल वीनल विब्भाडि, उदधि कर पाउ पखालिय।
अंतेउर रति रंभ, रूप रंभा सुर टालीय॥
हेतम दान कविं मझ कहि, अमर धुन्नि वे वखत गनि।
दीठो न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतान विणि।१।

ढाल तेहिज

पातिसाह अलावदी रे लाल, देखी अनोपम तेहरे सोभागी
साहि बूझ्यो तेरे हाथ मे रे लाल, भाट कहो क्या एहरे सो० ६
राजहस[1] पंखी रहें रे लाल, मान सरोवर माहि रे सो०।
तिण पंखी नी पाखडी रे लाल, ते देखी पतिसाहि रे सो० १०
मोज देई मे नें इम कहें रे लाल, वाह वाह वे वाह रे सो०।
कहुँ वे ऐसी अउर भी रे, चीज देखी कहिनाह रे सो०॥११॥च०॥

पद्मिनी स्त्री के प्रति आकर्षण

ता परि भाट कहै सुणो रे लाल,
सव गुण पदमणि माहि रे सो०।

---

१ कर सलाम भट चिंतवई रे लाल सुग दिल्ली पति साह रे सो०

उआ की ओपम नें द्यु रे लाल,
अउर ऐसी कोई नाहिं रे सो० ॥ १२ ॥ च०॥
अद्भुत जाणे अपछरा रे लाल,
अति सुन्दर सुकमाल रे सो०।
पतली कणयर कंबसी रे लाल,
पदमणि रूप रसाल रे सो० ॥१३॥च०॥
दील्हीसर कहै भाट स्युं रे लाल,
ऐसी पदमणि नारि रे सो०।
तैं कहा ही देखी सुणी रे लाल,
कहि तु साच विचारि रे सो० ॥१४॥च०॥
भाट कहै तुम महेल में रे लाल,
नारी एक हजार रे सो०।
तामै पदमणि सही होसी रे लाल,
दोय चारि निरधार रे सो० ॥१५॥ च०॥
दूजी ठाम न साभली रे लाल,
कैसी कहिइ झूठ रे सो०।
इम निसुणी खोजो कहै रे लाल,
आसंग मन धरि दूठ रे सो० ॥१६॥च०॥
वात फरोसतइं क्या कहै रे लाल,
वांभण साहि हजूर रे। सो०।
कहाँ वे सुरनर मोहनी रे लाल,
पदमणि पुण्य पडूर रे सो० ॥१८॥ च० ॥

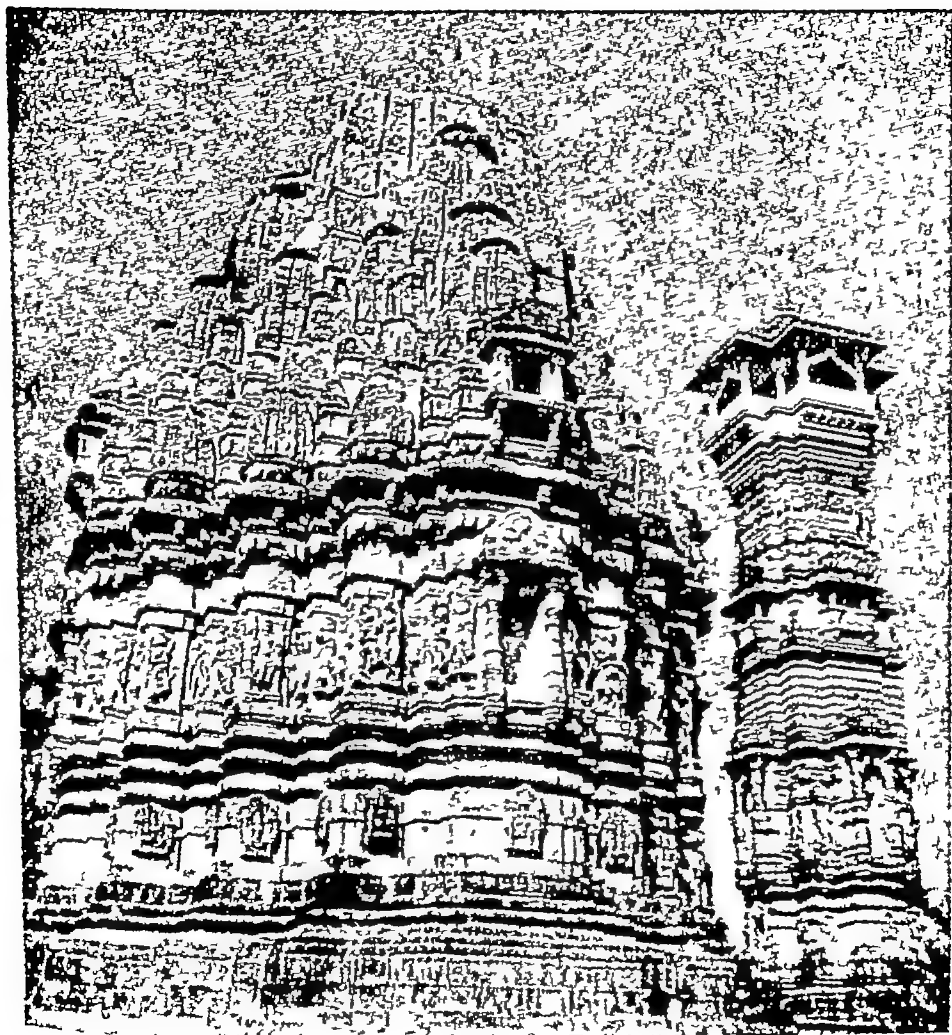
धवल कुसुम सिणगार, धवल वहु वस्त्र सुहावै
मोताहल मणि रयण, हार हीइ[1] ऊपरि भावै
अलप भूख त्रिस अलप, नयण लहु नींद न आवै
आसण रंग सुरंग, जुगति सु काम जगावै
भगति जुगति भरतार री रहै अहोनिश रागणी
कहै राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुवै इसी पमदणी ॥ ४ ॥

श्लोक

पद्मिनी पद्म गन्धा च पुष्प गन्धा च चित्रणी
हस्तनी मच्छ गन्धा च दुर्गन्धा[2]भवेत्सखणी ॥ १ ॥
पद्मिनी स्वामिभक्ता च पुत्रभक्ता च चित्रणी ।
हस्तिनी मातृभक्ता च आत्मभक्ता च संखणी ॥ २ ॥
पद्मिनी करलकेशा च लम्बकेशा च चित्रणी ।
हस्तिनी उर्द्धकेशा च लठरकेशा च संखिणी ॥ ३ ॥
पद्मिनी चन्द्रवदना च सूर्यवदना च चित्रणी ।
हस्तिनी पद्मवदना च शूकरवदना[3] च संखणी ॥ ४ ॥
पद्मिनी हंसवाणी च कोकिलावाणी च चित्रणी ।
हस्तिनी काकवाणी च गर्दभवाणी च संखणी ॥ ५ ॥
पद्मिनी पावाहारा च द्विपावाहारा च चित्रणी ।
त्रिपादा हारा हस्तिनी ज्ञेया परं हारा च संखणी ॥ ६ ॥
चतु वर्षे प्रसूति पद्मन्या त्रय वर्षास्च चित्रणी ।
द्वि वर्षा हस्तनी प्रसूतं प्रति वर्षं च संखिनी ॥ ७ ॥

१ हृदयस्थल २ क्षीरगन्धा ३ काक-

पद्मिनी चरित्र चौपई—



जैन मन्दिर व कीर्त्तिस्तंभ

[फोटो—सार्वजनिक सपर्क विभाग-राजस्थान]

रावण घरि पदमणि सुणी रे लाल,
अउर नहिं ससार रे सो०।
साहि घरे सव संखिणी रे लाल,
क्या[1] कहिइं अविचार रे सो० ॥१८॥ च०॥
माहोमाहि सकेत स्युं रे लाल,
भाट[2] खोजें कियो वाद रे सो०
'लालचंद' मुनिवर कहै रे लाल,
सुणता उपजै स्वाद रे सो० ॥१६॥ च० ॥

दोहा

हसि कै साहि कहै इसो, क्युं वे खोजा खूव।
हम महलें सब संखणी, नहिं पदमणि महवूब ॥ १ ॥

तापरि खोजो वीनमैं, वूझौ राघव व्यास।
सव लक्षण गुण पदमणि[3] के, जाणै शास्त्र अभ्यास ॥ २ ॥

साहि कह्यो राघव भणी, स्त्री के केती जाति।
कैसा लक्षण पदमणी, साच कहौ ए वात ॥ ३ ॥

सुविचारी राघव कहै, स्त्री की चारुं जाति।
पदमणी[1] चित्रणी[2] हस्तणी[3] संखणी[4] अैसी भाति ॥४॥

पा०1 साहि सुस्यो तिण वार रे सो० २ वामण ३ नारि का

पद्मिनी आदि स्त्री के लक्षण

॥ कवित्त ॥

रूपवंत रति रंभ, कमल जिम काया कोमल
परिमल पहोप सुगंध, भमर भमैं[1] बहुपरिकरे उत्पल
चपकली जिम रंग, चंग गति गयंद समाणी
शशि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपे वाणी
चंचल चपल चकोर जिम, नयण काति सौहै घणी।
कहै राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुवै[2] अइसी पदमणी ॥ १ ॥

कुच युग कठिन सरूप, रूप अति रूड़ी रामा।
हस्त वदन हित हेज, सेज नितु रमें सुकामा
रूसै तूसै रंग, संगि सुख अधिक उपावै
राग रंग छतीत्त, गीत गुण ज्ञान सुणावै।
स्नान मज्जन तंवोल स्युं, रहइ अहोनिश रागणी
कहे राघव सुलतान सुणि, पहोवी हुइइसी पदमणी ॥ २ ॥
वीज जेम झलकंत, काति कुंदण जिम सोहै।
सुर नर गण गंधर्व, रूप त्रिभुवन मन मोहै॥
त्रिवली तन वेउ लंक, वक नहु वयण पयंपइ
पति सुं प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जंपइ
स्वामी भगति ससनेहली, अति सुकुमाल सुहावणी।
कहै राघव सुलतान सुंणि, पहोवी हुइ इसी पदमणी ॥ ३ ॥

---

१ वहु भमैं बलावल २ इसी हुई

पद्मिनी श्वेत शृंगारा, रक्त शृंगारा चित्रणी।
हस्तिनी नील शृंगारा, कृष्ण शृंगारा च सखणी ॥८॥

पद्मिनी पान राचन्ति, वित्त राचति चित्रणी।
हस्तिनी दान राचन्ति, कलह राचंति संखिणी ॥९॥

पद्मिनी प्रहर निद्रा च, द्वि प्रहर निद्रा च चित्रणी।
हस्तिनी त्रय प्रहर निद्रा च, अघोर निद्रा च सखिणी ॥१०॥

चक्रस्थन्यो च पद्मिन्या, समस्थनी च चित्रणी।
उर्द्धस्थनी च हस्तिन्या, दीर्घस्थनी सखिणी ॥११॥

पद्मिनी हारदन्ता च, समदन्ता च चित्रणी।
हस्तिनी दीर्घदन्ता च, वक्रदन्ता च संखणी ॥१२॥

पद्मिनी मुख सौरभ्यं, उर सौरभ्यं चित्रणी।
हस्तिनी कटि सौरभ्यं, नास्ति गंधा च सखणी ॥१३॥

पद्मिनी पान राचन्ति, फल राचन्ति चित्रणी।
हस्तिनी मिष्ट राचन्ति, अन्न राचन्ति संखिणी ॥१४॥

पद्मिनी प्रेम वांछन्ति, मान वाछन्ति चित्रणी।
हस्तिनी दान वाछन्ति, कलह वाछन्ति संखिणी ॥१५॥

महापुण्येन पद्मिन्या, मध्यम पुण्येन चित्रणी।
हस्तिनी च क्रियालोपे, अघोर पापेन संखिणी ॥१६॥

पद्मिनी सिंघलद्वीपे च, दक्षिण देशे च चित्रणी।
हस्तिनी मध्यदेशे च, मरुधरायां च सखिणी ॥१७॥

अन्तः पुर की बेगमों में पद्मिनी गवेषणा

ढाल (४)

रागमारू, वाल्हा ते विदेशी लागइ वालहो रे[1] ए गीतनी देशी—

इण परि पद्मिणी रा गुण साभली रे, हरख्यो मन सुलतान ।
हम महेलैं पद्मणी केते अछैरे. परखो व्यास सुजाण ॥१॥ इण०॥
सुन्दर सहेली पद्मणी मन वसी रे ॥ आकणी ॥
व्यास कहै आलिम साहिव सुणो रे, किम निरखु तुम नारि ।
निरख्या विगर न जाणु पद्मणी रे, कीजे कवण विचार॥२॥ सु०॥
तब ढिल्लीपति महेल करावियो रे, मणिमय एक अनूप ।
व्यास बुलाय कहे पद्मणी रे, निरभया देखी स रूप ॥३॥ सु०॥
सकल नारि प्रतिविंब निरखियो रे, वैठी मणगृह माहि ।
देखी हरम हस्तनी चित्रणी रे, यामे पद्मणी नाहि ॥४॥ सु०॥
व्यास कहै सुर नर मन मोहनी रे, अद्भुत रूप अनेक ।
है चित्तहरणी तुरणी महल में रे, पिण नहीं पद्मणी एक॥५॥सु०॥

पद्मिणी के लिए सिंहलद्वीप पर चढ़ाई

एह वात सुणी आलिमपति कहै रे, क्या मेरा अवतार[2] ।
कैसी पतिसाही विण पद्मणी रे, अउरति अउर असार ॥६॥सुं०॥
(विण) पद्मणी सेजे पोढु नहीं रे, हेजे न करूं रे सग ।
पद्मणी ऊपरि कीजे उवारणा रे, राज रमणी सवंग॥७॥ सु०॥
मनडो लागो मारु भुरट ज्युं रे, पद्मणी परणवा चाह ।
व्यास वतावो चावी पद्मणी रे, इम वोले पतिसाह ॥८॥ सु०॥

---

१ वालउं रे सवायउ वैर हु माहरौ २ जमवार ।

सिंहलदीप अछै दक्षिण दिसइजी, आडो समुद्र अथाग।
व्यास कहै पद्मिणी ठावी तिहाजी, पिण महा दुर्घट माग ॥९॥
साहि कहै मुझ आगे व्यासजी, दरीया है कुण भात।
मुझ देखे सुरनर सहुको डरैरे, सोखुं सायर सात ॥१०॥ सुं०॥
तुरत चढ़ाई सिंहलदीप ने रे, कीधी दिल्लीनाथ।
धुं धुं धुं नीसाण घुरे भलाजी, शूर सुभट ले साथ ॥११॥सुं०॥
मोले सहस मैंगल मदझरता भला रे, जाणे घन गज्जंति।
लाख सतावीस हैंवर हींसता रे, चचल गति चालंति ॥१२॥ सु.०॥
च्यार चक राजन संसय पडया रे, धर हर धूजेरे सेस।
रज ऊड़ीरे गयणे रवि ढाकियोरे, सक्यो मनहि सुरेस॥१३॥सुं०॥
इलगारें करि करी उलधी मही रे, आया दरीया तीर।
रिण रंढाला मरदाना वली[1] रे, साथे बहु सूर नै वीर॥१४॥सुं०॥
देख्यो दरियो भरियो जल घणेजी, तब बोले नरनाथ।
वारिधि पूरो हल वीहला हुइ रे, मु छा घाले हाथ ॥१५॥ सु ०॥
दल बादल डेरा ऊभा किया रे, ऊतरीयो सुलतान।
सिंहलदेश दुहाई फेरि के रे, पकडो सिंघल राण ॥१६॥ सुं०॥
'लालचंद' कहै साहि अलावदी रे, बोलाया वड़ वीर।
सभ हर्ड[2] सिंहलद्वीप नं ते, जे मरदाना वीर ॥१७॥ सुं०॥

दुहा

हुकम लही आया वही, जिहा सायर गम्भीर।
जल सुं जोर न कोई चलै, बूडण लागा मीर ॥१॥

---

१ वड़ा, २ करि।

सायर ऊपरि हठ[1] कीयो, आलिम साहि अपार।
प्रवहण नवा घडावि ने, चोढ्या[2] बहु जूझार ॥२॥
साहि कहै सुभटा भणी, आ वेला छैं आज।
लड़ी भड़ी गढ मेलिज्यो, पकड़ज्यो सिंघलराय ॥३॥
लाख लाख मोजा दीइं,[3] चलीइ[4] वकारें स्वामि।
कहें तदि पाछो कुण रहै, सूर सुभट रे नाम ॥४॥
बैठा ते दरीया विचै, जेहवै आघो जाय।
आय पड़्या भमरया विचइ, वाजै सबलो वाय ॥५॥

ढाल (५)—

राग-मल्हार सहर भलो पिण साकडो रे नगर भलो पण दूर, ए देशी।

तेहवे दरीयो ऊछल्यो रे, भागी वेड़ीं भटाक मेरे साजना।
फिरी आवइ आलिम भणी रे, बूडें तेह कटक। मेरे साजना ॥१॥
जल सु जोर न को चलै रे, सुभट रह्या जल माहि मेरे०
पदमणी परही जाणि द्यो रे, छोडो केडो साहि मेरे० ॥ २ ॥
आलिमपति इणि परि कहै रे, मैं नवि छोडु केड़ि मेरे०
मो आगें दरीयो रहे रे, अव नाखुगो उथेडि मेरे० ॥ ३ ॥
वरस रहुँ पदमणी वरु रे, पकडु सिंघलराय मेरे०
वीजा सुभट बुलाइये रे, मुंआ ति गइअ वलाय मेरे० ॥ ४ ॥
सुभट मन मे संकीया रे, फोकट दरीया माहि मेरे०
काम विना किम दीजिइं, रे, साहि विचारत नाहि मेरे० ॥५॥

१ कोपियौ, २ चाल्या, ३ लहइ, ४ वलि वपुकारे।

आलिम अमरस मनि घणो रे,पिण दरीयो भरपूर मेरे०
खाणो पीणो परिहर्यो रे, वैठो चिंता पूर मेरे० ॥ ६ ॥
चिंता निद्रा परिहरइ रे, चिंता ले जाइ दुक्ख मेरे० ।
चिंता अहनिशि तन दहइ, चिन्ता फेडइ भुक्ख मेरे० ॥ ७ ॥
चिंता चिता समाख्याता चितातो चिन्ताधिका ।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता जीवंतप्यहो ॥
साहि कहे तेहनें घणो रे, द्युंगा देश भंडार मेरे०
दरीयो खोदि मारग[1] करइ रे, जावइ वारिधि पार मेरे० ॥८॥
लालचिया निरधार[2] तिहा रे, मानि हुकम तिहा जाय मेरे०
देखि दरीयो इम कहै रे, खोदे कुण खुदाय मेरे० ॥ ९ ॥
जे सिंहल पहुँचै जाइ रे, ते पावइ लाख तुरंग मेरे० ।
ते दूणो पावइ पटउ रे, जे भेलइ सास दुरंग मेरे० ॥ १० ॥
जे मारें सिंघल धणी रे, तिगुणो तास पसाय मेरे०
जे आणें पदमणी भणी रे, ते सव गढ़नो राय मेरे० ॥ ११ ॥
इम लालच देखाडीयो रे, तो पिण न वहै इम मन मेरे०
नव लख सुभट सभि थया रे, मानि नहिं[3] साहि वचन मेरे ॥१२॥
दो तड वाघ तणउ वण्यउरे, लसकरिया ने न्याय मेरे०
इक दिस डर पतिसाह रउ, वीजे नाखे समुद्र वहाय मेरे० ॥१३॥
सुभटा व्यास वोलाइयो रे, आलिम सुं एकान्त मेरे०
पापी व्यास कुमतो कीयो रे, माड्यों सुभटा अन्त मेरे० ॥१४॥

---

१ पाधर २ निरधन घणा ३ मानण

दूहा

वचन विमासी बोलियइ, ए पंडित नो न्याय।
अविमासी कारिज करइ, ते नर मूरख राय ॥१५॥

स्त्री बालक पुहोवीधणी रे, ए तिहुँ एक सभाव। मेरे०
रढ नवि छाडै आपणी रे, भावें तो घर जाय। मेरे० ॥१६॥

आवी अनाथ जाणे नहीं रे, वालिभ ए जण च्यार मेरे०
बालक मगण प्राहुणो रे, लाड गहेली नार मेरे० ॥ १७ ॥

एहवो कोइ मतो करो रे, आलोची मन आप मेरे०
आलिमपति पाछो फिरै रे, तो चूकें सब पाप मेरे० ॥ १८ ॥

आपणो मन आलोचि ने रे, जे करसी निज काज मेरे०
ते पामे सुख सम्पदा रे, 'लालचन्द' मुनिराज मेरे० ॥ १९ ॥

शाही हठ का छल से प्रतिकार कर दिल्ली पुनरागमन

दूहा—

व्यास कहै तुमे साभलो, सुभट होइ सब एक।
हिकमति एक करो हिवै, फिरैं साहि रहे टेक ॥ १ ॥

मदभर मातंग[1] पाचसें, सोवन जडित[2] साधार।
पाखरिया[3] पंच सहस, कोडि एक दीनार ॥ २ ॥

सिणगार्‌या पटकूल सुं, नव नव भांते नाव।
सोवन कलस सरस[4] रच्यो, भरयो वस्तु बहुभाव ॥३॥

---

१ माता २ साखित सार ३ वलि पाखरिया सहससय ४ सा सिर ठवङ

अणजाण्या नर सीखव्यो, ए सिंघल मूक्यो दंड।
हुं तुम्ह नी पग खेह छुं, अब तु [1] आलिम छंड ॥ ४ ॥
नाक नमण इण परि करो, और न कोई उपाय।
अहंकार इम राखज्यो, जिम आलिम फिर जाय ॥५॥

ढाल (६)—कोई पूछो वांभणा जोसी रे ए देशी। अथवा यत्तनी

इम व्यास वचन अवधारी रे, हरखी तव [2] सेना सारी रे।
सहू सच कीयो तिण रातें रे, दंड ल्याया ते परभातैं रे ॥ १ ॥
दिन ऊग्या आलिम जागै रे, देख्या प्रवहण मन रागैं रे।
कहो क्या वे आवत सूझैं रे, अइंसउ सेवक कुं बूझैं रे ॥ २ ॥
तव व्यास कहै सुणि सामी रे, सही तोहै एह सलामी रे।
सिंघल राजा तुम मुकी रे, सवली आग्या प्रभुजी की रे ॥ ३ ॥
सोना कलसे अति सोहै रे, चमकत चूनी मन मोहे रे।
फरहरें नेजा धजा फावइ रे, वहु नेड़ा [3] प्रवहण आवै रे ॥ ४ ॥
देखत आलिम सुख पावै रे, वाहण दरीया तटि आवै रे
सुलतान चरण धाइ लागें रे, सब पेसकसी धरी आगे रे ॥ ५ ॥
सिंघल तुम पग नी खेहा रे, सेवक सुं राखो सनेहा रे।
वदे कुं साहि निवाजै रे, ए चूनो तुम पान काजै रे ॥ ६ ॥
तुम दिलीसर जगदीसो रे, नमठेह सुं केही रीसा रे।
इम विनय वचन सुणीइजे रे, सिरपाव सिंघल नें भेजै रे ॥ ७ ॥
पहरायो ते परधानो रे, दीधो तेहनै वहु मानो रे।
सिंघल मूक्यो ते लीधो रे, सुभटा ने बांटे दीधो रे॥ ८ ॥

---

१ कइ २ मानि ३ मतउजइ

सिंघल सों कीधो सनेहो रे, मान देई मूक्या तेहो रे।
समारी सहू राघव वातो रे, जिम तिम वणी आवै धातो रे ॥९॥

दूहा

जेहनइ घटि बहु बुद्धि हुवइ, तेसारइ सहु काम।
भंजइ गंजइ वल घड़इ, वलि आणइ निज ठाम ॥ १ ॥

ढाल (७) यतनी—मनसा जे आणो एह

अलिमपति कूच करायो रे, वेघो दिल्ली गढ आयो रे।
घरि घरि गूठी ऊछलीयाँ रे, वहु मंगल धुनी रंग रलीयाँ ॥ १ ॥
बैठो तखत पतिसाहो रे, गढ सकल थयो उछाहो रे।
मिलि मिलि नर नारी भाखै रे, यो[1] आयो पदमणी पाखैं ॥२॥
आलिमपति महेला आया रे, भितरि हथियार धराया रे।
सेवक घरि[2] पाछो जावै[3] रे, तव[4] वड़ी बीबी बुलावै ॥ ३ ॥
तुम साहिब पद्मणी परणी रे, ते दिखलावो हम तुरणी रे।
देखा दीदार एकवार रे, कैसी हुवे पद्मणी नारि ॥ ४ ॥
जसु घरि नहिं पदमणि नारी रे, कैसो कहीइं घर वार रे।
कैंसी तेरी पतिसाही रे, पदमणी नाहिं एकाही ॥ ५ ॥
विण पदमणी खाना[5] खावै रे, इम वार वार संतावै रे।
विलखो होय खोजौ आवै रे, आलिम नैं वहुत भखावै ॥ ६ ॥
गच्छ मोटो खरतर गायो, महावीर पाट चल आयो रे।
सूरीश्वर श्रीजिनरंग रे, तसुशासन श्रावक चंग रे ॥ ७ ॥

---

१ किम २ घरि ३ आवइ ४ वडकण बीबी बतलावइ ५ खाली नावड

मंत्रीसर श्रीहंसराज रे, वड़ दातारा सिरताज रे।
पुण्यवंत महा परवीण रे, गुणरागी नइ धर्म लीण ॥ ८ ॥
समरथ सगलइ ही कामइ रे, तास भ्रात डुगरसी नामइ रे।
भागचंद वड़उ भागवत रे, मन मोटइ लखमी कात ॥ ६ ॥
दीपक सम राजदुवारइ रे, कुल आभ्रण सोभा धारइ रे।
तसु आग्रहि कीधउ एह, खंड बीजउ संपूरण तेह ॥ १० ॥
पाठक श्री ज्ञानसमुद रे, गणि ज्ञानराज मुनीचंद रे।
गुरुराज तणै सुपसाया रे, मुनिलब्धोदय गुण गाया रे ॥ ११ ॥

॥ इति द्वितीय खण्ड सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीपद्मिनीचरित्रे ढाल भाषाबंधे उपाध्याय श्री ज्ञान समुद्र गणि गजेन्द्राणा शिष्यमुख्य विद्वद्राज श्रीज्ञानराज वाचक वराणा शिष्य पं० लब्धिउदय मुनि विरचिते कटारिया गोत्रीय मन्त्रिराज श्री हंसराज म० श्री भागचंदानुरोधेन राणा श्री रतन सिंहलद्वीप गमन श्री पद्मिनी पाणिग्रहणं श्री चित्रकूट दुर्गागमन सम्बन्ध प्रकाशो नाम द्वितीय खड ॥

राघव चेतन दिल्लीगमन साहि वारिधि यावत् गमनागमन सम्बन्ध प्रकाशनो नाम द्वितीय खड २ (बड़ौदा प्रति)

तृतीय खण्ड

मंगलाचरण

दूहा

मात पिता बंधव हितु, गुरु सम अवर न कोय।
तिण हेतइं गुरु प्रणमतां, मनवंछित फल होय॥ १॥
तिणकु राग करी नमू, इष्ट देवता आप।
खड कहुं अब तीसरो, सुणतां टलै संताप॥ २॥

पद्मिनी की पुनर्गवेषणा

अणख[1] बोल बीवी तणा, सुणि के आलिम साहि।
धमधमीयो कोप्यो घणो, अति अमरस मन माहि॥ ३॥
ततखिण व्यास बुलाइ नै, इम पूछैं सुलतान।
सिंहलद्वीप विना अवर, पदमणि आहीठाण॥ ४॥
चावो गढ चीतोड़ छै, पहोवी माहि प्रधान।
रतनसेन रावल[2] जिहा, राजै अमली माण॥ ५॥
शेषनाग सिरमणी जिसी, तस घरि पदमणि नारि।
लेई न सकै कोइ तिण, किम कहिइं अविचार॥ ६॥
एवड़ो सिंहलद्वीप नो, फोकट कीध प्रयास।
गढ चीतोड़ किसो गजो, साहि कहै सुणि व्यास॥ ७॥

---

१ नाजुक २ राणउ तिहा।

चित्तौड़ पर चढ़ाई

ढाल (१) राग—आसा सिन्धू

भणइ मन्दोदरी दैत्य दसकंध सुणि एह कडखा री चाल

चढ्यो अलावदी साहि सबलै कटक,
सकज सिरदार भड साथ लीधा।
मीर बडवीर रिणधीर जोधा मुगल,
सलह कारी सावता तुरत कीधा ॥१॥च०॥
इन्द्र ने चन्द्र नागेन्द्र चित चमकीया,
धडहड्यो शेष नें धरा धूजें।
लचकि किचकीचकरे पीठ कूरंमतणी,
हलहलें मेरु दिगदंत कूजें ॥२॥च०॥
आवियां साहि चित्रोडरी तलहटी,
लाख सतवीस उमराव लीधा।
गाजती राजती जाणीइं गज घटा,
आप करतार नवी पार लीधा[1] ॥३॥च०॥
तरणि छिप गयो रयणि जिम तारिका,
खलकि खुरताल पाताल पाणी।
गुहीर नीसाण धन घोर जिम घरहरै,
हलहिवै वेग ल्यो हिंदुवाणी ॥४॥
गजा सिर धजा बहू नेज वाजा करी,
उरभि मुरभि रहें पवन वाधो।
हयवरा गेंवरा उमरा सातरा,
आप करतार नवी पार लाधो ॥५॥च०॥

---

१ ममत गजराज गजगाह कीधइ

राण कुल भाण सुलतान आयो सुणी,
झटक दे कटक सहु सझ कीधो।
मुँछ बल घालि वहू रोस भाखे रतन,
हलाहिव साहि नइं करां सीधो ॥६॥च०॥

भला तुं आवियो मुझ मन भावीयो,
दूत रजपूत मूंकी कहायो।
हूं हिजें साहि हुसीयार हिवें जाह मत,
भलां सिंघल थकी भाजि आयो ॥७॥च०॥

माहरा साथ रा हाथ हिवें देखज्ये,
ढीलिपति रहैं मति हिवै ढीलो।
भाजता लाज तुझ का ज आवै नहिं,
देखयो साहि मोटो अडीलो ॥८॥च०

कीयो गढ सातरो नाल गोला करी,
माडीया ढीकली अरहट्ट यंत्रं।
धान पाणी घणा वसत संचा किया,
मिली[1] वृद्धिवंत करे वहु मंत्रं ॥९॥च०॥

तुरत[2] रा तीर जिम वैंण रावल[3] तणा,
सुणत परमाण पतिसाहि[4] रूठो।
भभकंति आग में जाणि घृत भेलीयो,
साहि कहे हलां करि सुभट रूठो ॥१०॥च०॥

---

१ महा मंत्रवी २ ततारा ३ राणा ४ सुलतान

कोट करि चोट उपाडि अलगा करो.
बुरज गुरजां करी करो हिवें भूक ।
ढाहि ढम ढेर गढ घेरि करि पाकडो,
करो हिवें वदि दिन अंध घूक ॥११॥च०॥
करैं मुख रगत युवगत आलिमधणी,
डारि द्यु फूकि थकी[1] गढ चीतोड़ ।
राण सुं पदमणी चिडी जिम पाकडू,
कवण हिंदू करैं हम तणी होड ॥१२॥च०॥

युद्ध वर्णन

होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठीया,
मीर वड वीर रिणधीर रोसइ ।
सुणो पतिसाहि अल्लाह अव क्या करे,
देखि तुम्ह साथरा हाथ मोसें ॥१३॥च०॥
इम कहि मुगल सिर चुगल जिम मूडीया,
धाय गढ कंगुरे आय लागा ।
पीठ परि रीठ पाथर[2] तणी पड पडै,
अडवडै लडथड़ै भिडै आगा ॥१४॥च०॥
भड़ा भड़ि भड़ा भड़ि नाल छूटैं भली,
कड़ाकड़ि कूट वाजैं कुठारा ।
तड़ातड़ि तड़ातड़ि सवद गढ ठावता,
बड़ाबड़ि बाण लागै ऊठारां ॥१५॥च०॥

१ गढ सकल २ पाथर

भूबीया लूबीया मीर गढ ऊपरा[1],
　　गोफणा फण-फणा वहै गोला ।
गडा गड़ि गिर तणा गडागरि गिर पड़ै,
　　चडाचडि ऊछलै मुगदल्ल[2] रहो ला ॥१६॥
जालमी आलमी जोध मिलि भूम्भीया,
　　धरहरै धरा धमचक धूली ।
सरस संग्राम री ढाल ए पनरमी,
　　सुगुरूराज ग्यान 'लालचद' वाजी[3] ॥१७॥च०॥

दूहा

एकण दिशि रावल[4] अनम्म, आलिमपति दिशि एक ।
भभकारे[5] वेहुं सुभट, राखण रजवट टेक ॥१॥
खाणो दाणो पूरवै, रावल रण रंढाल ।
भारथ मे[6] योद्धा भिड़ै, रिणयोद्धा जिम काल ॥२॥
आलिम चिंता अति घणी, पदमणि पेखण प्रेम ।
गढ हाथैं आवै नहीं, कहो हवै कीजै केम ॥३॥
दिल्लीपति दाखै इसौ, सुभटा नै समभाय ।
सहु तुमे हिव सामठा, जुड़ो[7] तुरंगा जाय ॥४॥
नेड़ा होय गढ सु निपट, खोदो खानि सुरंग ।
वुरजा तणा पुरजा करो, देशी धड़ा दुरंग ॥५॥

---

१ कागुरे २ मूषल होला ३ वांची ४ रणउ वपुकारे ५ भड़ ६ रिम ७ जडठ दुरगे

ढाल (२) चरणाली चामुंडा रण चढै एहनी

साहि कहै सुभटा भणी, होज्यो हिवै हुसीयारो रे।
मरदानी मरदा तणी, देखेंगे इण वारो रे ॥१॥
रिण रसीयो रे अलावदी, मीर वड़ा रण-धीरो रे।
हलकारे हल्ला करे, मुगल सूंकी वड़धीरो रे ॥२॥ रिण०
मरण तणो डर कोई नहिं, मरना है इक वारो रे।
वहुत निवाज वडा करू, द्यूं बहु देश भंडारो रे ॥रिण०॥
दिल्ली अब दूरें रही, हिकमति[1] अब मति हारो रे।
रोड़ो इक-इक खेसता, होय पाधर दरहालो रे ॥४॥ रि०॥
कुटका कोट तणा करो, खोदि करो खल खटो रे।
कूटे पाड़ो कांगुरा, नेड़ा हांड निपटो रे ॥५॥ रि०॥
निसरणी ऊंची करो, सुभट करो पैसारो रे।
आणो रावल[2] इण घड़ी, कुण क्यासु गमारो रे ॥६॥रि०॥
तुरत उठ्या तडभडि करी, सुणि के साहि वचनो रे।
मीर मुगल मसती हुआ, सल्ह[3] पहरी यतनो रे ॥७॥ रि०॥
धेठा होय ने धपटीया, दड़वड़ लागा[4] डागा रे।
वानर जेम विलगीया[5], लपटी गढ नें लागा रे ॥८॥ रि०
गणण गणण गोला वहे, जाणे[6] सींचाण अजाणो रे॥
सगग सगग सर छूटता, वगग वगग कूहकवाणो रे ॥९॥ रि०॥

१ हिम्मति २ राणउ ३ जोसण पहर जतन्न रे ४ जाणें ५ विलविया
६ जाण सीचाणा जाणो रे

मारै मीर महाबली, ताके वाहै तीरो रे।
कूटे कोटनै कागुरा, धुव[1] खडे वड धीरो रे ॥१०॥ रि०॥
रिण रहीया हय हाथीया, कीधा जाणे कोटो रे।
रुधिर तणी रिण नय वहइ, सूर कमल दड[2] दोटो रे ॥११॥ रि०
आतसवाजी उछली गयणे घोर अधारो रे।
आरा वे नर ऊछलै, जाणें सूरातन[3] रिण सारो रे ॥१२॥ रि०॥
नारद नाचें मन रली, डिम डिम डमरू वाजें रे।
जोगणिया खप्पर भरै, रुहिर पीवै मन[4] छाजै रे ॥ १३ ॥ रि० ॥
डडकारा[5] डाकणि करै, राक्षस देवइ रासो रे।
रुडतणी माला रचै, ऊमयापति उल्लासो रे ॥ १४ ॥ रि० ॥
सुर भणी सुरलोक स्युं, ऊतरै अमर विमाणो रे।
अपछर आरतीया करइ, कामणि कंचन वानो रे ॥ १५ ॥ रि०॥
मुगल वसत लूंट घणी, माम कोठार[6] भंडारो रे।
माथें कीधी मेदनी, हूओ गढ़ हाहाकारो रे ॥ १६ ॥ रि० ॥
हेरा करै डेरा हणौं, राति वाहै राजो रे।
मुगल घणा तिहा मारीया, सबल लूटाणा साजो रे ॥१७॥ रि०
सांझ लगै दिन प्रति लडैं, पिण कोई न सीझइ कामो रे।
फोकट मुगल मरावीया, आलिम चिंतै आमो रे ॥ १८ ॥ रि०॥
कल वला दोनउं जे करइ, तउ कारिज चढइ प्रमाणो रे।
'लालचंद कहें साहि सुं वीस कहइं इम वाणो रे ॥ १९ ॥ रि०

१-ध्रोव पढ़े २ दल ३ सुत ४ मत वाजै रे, ५ डड़डाटा ६ गोठि

कपट प्रपंच रचना

दूहा

छानो कोइक छल करो, मति प्रकासो मर्म्म।
कपटै वात करो इसी, जिम रहै सगली सर्म ॥ १ ॥
करो सुंस जेतै कहै, बोल वंध सवि साच।
हम मुसाफ उपारि है, विचलां नहिं वाच ॥ २ ॥
इम विचारि गढ मूंकीया, जे पाका परधान।
रावल[1] सुं इण परि कहै, करी तसलीम सुजाण ॥ ३ ॥
मेल करण हम मूंकीया, जो तुम मानो बात।
प्रीत वधें हम तुम प्रगट, सबही एह सुहात ॥ ४ ॥
दरस देखि पदमणि तणो, भोजन करि तसु हाथ।
आहीठाण गढ देखि नै, साहि चलंगे[2] साथ ॥ ५ ॥

ढाल (३) बात म काढो व्रत तणी ए देशी २ काची कली अनार की रे

तासु तणी वातां सुणी, वोलै राव रतनो रे। सुणि हो राजन्ना।
गढ तुम हाथ आव नहीं, जो करो कोड़ि जतनो रे॥ १ ॥ ता०
पाणी[3] वलतो ही पतीजीइं, जो उठावै मुसापो रे।
सुंस करै मन सुध स्युं, छोडै सकल कलापो[4] रे ॥ २ ॥ ता०
वलि प्रधान इम वीनवे, सुणि हिन्दू पतिसाहो रे।
देश गाम दूहवा नहीं, दंड तणी नहिं चाहो रे ॥ ३ ॥ ता० ॥
राजकुमारी मागा[5] नहिं, नहिं तुमस्युं दिल खोटो रे।
नाक नमणि हम[6] सुं करो, देखाडो चित्रकोटो रे ॥ ४ ॥ ता०

---

१ राणा २ चलें ले ३ पिण जउ मेल करइ अछइ रेहां, तउ उठावौ मसाफ ४ किलाफ ५ परणउ ६ अउ तुम।

मैं अपणा कृत कर्म सुं, असुर कुले अवतारो रे।
पूरव पुण्य प्रमाण सुं, तूं हिंदूपति सारो रे ॥५॥ता०॥
जीव एक काया जूई, तूं पूरव भव मुझ भ्रातो रे।
हम तुम सूं मेलो हुओ, वैठि करइं दोय बातो रे ॥६॥ता०॥
हरख बहुत हमकुं अछै, भोजन पदमणी हाथो रे।
दीदार पदमणी देखियै, ओरण चाहै आथो रे ॥७॥ता०॥
पाछै[1] दिल्ली कुं चलें, हम तुम होय सनेहो रे।
तब रावल[2] तिणसुं कहै, जो नवि जोर करेहो रे ॥८॥ता०॥
तो नचिंत पावधारिइं, लसकर थोड़ो लेइ रे।
आरोगो आणंद सुं, हम घर प्रीति धरेइ रे ॥९॥ता०॥
साहि भणी वाता सहु, जाय कहै परधानो रे।
सुंस सपति[3] निज वाह सुं[4], झूठै मनि सुलतानो रे ॥१०॥

श्लोक—मुखं पद्मदलाकारं, वाचाचंदन शीतलं।
हृदयं कर्त्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त्त लक्षणम् ॥१॥

राघव मंत्र[5] उपाईयो, रावल झालण काजो रे।
छेतरवा छल माडियो, साहि कीयो बहु साजो रे ॥११॥ता०॥
घरभेदू राघव मिल्यो, सामिधरम दियो छेहो रे।
घरभेदू थी घर रहै, खोवै पणि घर तेहो रे ॥१२॥ता०॥
घर भेदइ लंका गई रेहा, रावण खोयो राज ।सु०
घररउ उंदिर दोहिलउरेहा, सुगम अंबर मृगराज ॥१३॥

१ पीछे दिल्ली कुच ढेरहाँ २ राणो ३ सबदि ४ दूयइ ५ कीधउ मन्त्रणउ, राणा।

सुलतान का चित्तौड़ प्रवेश

पोलि उघाड़ी गढ तणी, सरल सभावै राणो रे।
मुंक्या तेडण[1] मंत्रवी, वेघ[2] पधारो सुलतानो रे ॥१४॥
तीस सहस लोह लुंबीया, ले पैठो सुलतानो रे।
समचा सुंते[3] संचर्‌या, जाण पड़ि नहिं राणो रे ॥१५॥
देखवा कोतिक मिल्या तिहा, नरनारी जन वृंदो रे।
पिण किणहि जाण्यो नहिं, दिलीपति रो छंदो रे ॥१६॥

सुप्त गुप्तस्य दम्भस्य, ब्रह्माप्यंतं न गच्छति।
कौलिको विष्णु रूपेण, राजकन्या निसेवते ॥२॥

कपट कोई नवी लिखी सकै, जो करी जाणै कोई रे।
'लालचंद' मुनीवर कहै, पिण भावी हुइं सो होई रे ॥१७॥

दूहा

आया दीठा सामठा, आलिम सुं असवार।
खुणस्यो मन मांहि खरो, रावल जी तिण वार ॥१॥
चूलाया आया तुरत, सम्भ[4] कीयाह सुभट।
दल बादल आई मिल्या, हिंदू मुगलां थट ॥२॥
दिलीपति ढीलो हुवो, पहुंचे कोई[5] न पाण।
अचरिज[6] आसंगी न सकै, बोलै एहवी वाण ॥३॥
काहे कुं मेलो कटक, खोटो म करो खेद।
हुं लड़वा आव्यो नहीं, नहिं छै को छल भेद ॥४॥

---

१ मोटा २ पाठ धारउ ३ सब ४ सयनी क्यिं ५ न को उपाय
६ आसग सकै न कोइ किण, आलम खेलइ दाव।

कोतिग देखी गढ तणो, हुं जास्युं निज ठाम।
वली रावल जी इम कहै[1] सुणि दिलीपति साम ॥५॥

ढाल (४)

१ तिण अवसर वाजै तिहा रे ढंढेरा नो ढोल ए देसी
२ मेवाड़ी दरजणी री ढाल

एतला[2] आण्या सा भणी रे, तीस सहस असवार।
विण कारण वांनर जिसा रे, माता मुगल्ल जे इणवार रे ॥१॥
धुरत दिल खोटा रे, काइं रे तुं साहिब सोटा,
वाचा चूको रे, आलिम वाचा चूको। आकणी।
चूक कियो तो चूरस्युं रे, सेक्या पापड़ जेम रे।
पीसी न्हांखुं पलक में रे, आटा में सिंधव जेम रे ॥२॥धु०॥
हलकारै[3] हलकां करी रे, ऊठै सुभट अपार।
सार मुखैं तिल तिल करै रे, एकेको एक हजार ॥३॥धु०॥
गढगंजन सुभटां भणी रे, तनक हुकम ह्वै मुझ।
तो[4] चिड़ीया जिम पाकड़ै रे, ए तीस सहस दल तुझ रे ॥४धु०॥
आलिमपति इम चिंतवै रे, राय सुणो अरदास
निज घरि आया प्राहुणा रे, कहो किम कीजै उदास रे ॥५ धु०॥
सगतै केम सत्ता करो रे, कांय पचारो पाण।
थोड़ा ही होवै घणा रे, लीज्यैं झेलि महमान रे ॥६॥धु०॥

---

१ वदइ २ एतइ ३ हलकारनां हेक नइ रे ४ चिड़ियां री परि।

राणा का आतिथ्य

इम जीमवा आया हुंता रे, नहिं लड़वानो काज।
घणो मामलो काय नहीं रे, आज सुभक्ष सुंहगा नाज रे ॥७
जीमता जो आणो अछो रे, खरच तणो मनि खेद।
कहो तो फिर पाछा फिरा रे, ते भाखो हम सुं भेद रे ॥८॥
भणइ रावल आलिम भणी रे, भलै पधार्या साहि।
बीजा बोलावो वले रे, जीमवा नी सी परवाह रे ॥९॥
ओछा बोल न बोलीइं रे, दिल में राखी योग।
बोल बोल बेऊं हस्या रे, हाथ देई तालि जोग रे ॥१०॥
मांहो माहि मिलि गया रे, सबल हुओ संतोष।
दोष सहु दूरे किया रे, राख्यो रावल रो तोष रे ॥११॥
रावल भगति भोजन तणी रे, सहूअ कराई सझ।
रूड़ी व्यंजन रसवती रे, आरोगण आलिम कज्ज रे ॥१२॥
पदमणि सुं प्रीतम कहै रे, खरी धरी मन खति।
जिण विधइं जस रस रहै रे, भोजन दीजइ तिण भंति रे ॥१३॥
प्रीतम सुं पदमणि कहै रे, हुं नहिं परुसुं हाथ।
मो सम दासी माहरी रे, ते परुसस्यै दिलीनाथ ॥१४॥
मानि वचन महाराय जी रे, सिणगारी जव दासि।
काम तणी सेवा जसी रे, रूपे रंभा गुण राशि रे ॥१५॥
खाति करी खिजमत्ति करें रे, आसण बैसण देह।
साख[1] तिहुं सावती करी रे, तेड़इं दिलीपति तेह रे ॥१६॥

---

1 साखित चहु।

हरखित चित आवैं हिवैं रे, दिलीपति सुलतान।
'लालचन्द' मुनिवर कहै रे, सुणयो हिव चतुर सुजान रे ॥१७॥

दूहा

ऊंचा अमर विमाण सा, मोटा महेंल अनेक।
गोख झरोखा जालिया, धोल ति शुद्ध विवेक ॥१॥
सरग मृत्य पाताल सव, सुन्दर वन आराम।
चात्रक मोर चकोर वहु, चितरीया चित्राम ॥२॥
कनक थंभ कलसे करी, मंडित मोहण गेह।
झिगमगि ज्योति जडाव की, चलकती चन्द्रएह ॥३॥
रंगित मंडप माहि हिव, जाजिम लांवी जेह।
वारु करै वीछामणा, मोल घणा छैं जेह ॥४॥
मोखमल मोटा मोल रा, पंच रग पटकूल।
जरी कथीपा जुगति सुं, सखर विछावे सूल ॥५॥
तरहदारविण मइं ठव्यो, सिंहासण तिण[1] वार।
माणिक मोती लाल वहु, जड़ीया रतन अपार ॥६॥
तिहां आवी वैठा तुरत, सवल साथ सुं साहि।
चितइं मानव लोक मे, आणी भिस्त अल्लाह ॥७॥

भोजन सत्कार

ढाल (५) अलवेल्या नी

पहरी पटोली पाभड़ी रे लाल, दासी सुन्दर देह; मन मान्या रे
एक आवी आसण ठवै रे लाल, रूप अधिक गुण गेह, मन०॥१॥

१ सुखकार।

भोजन भगति भली करै रे लाल, सुंदर रूप अचंभ । मन०
दासी पदमणि सारखी रे लाल, रूपै जांणें रंभ । मन० ॥२॥
सोवन झारी जल भरी रे लाल, कनक कचोला थाल । मन०
ले आवै भावै घणे रे लाल, कामणि अति सुकमाल । मन० ॥३॥
नाना व्यंजन नव नवा रे लाल, चतुर समारया चाख । मन०
खाटा मीठा चरपरा रे लाल, रूड़ै स्वादै राखि । मन० ॥४॥
आंवा नींबू कातली रे लाल, माहि चूरो मेलि । मन०
कूंकणीया केला तणी रे लाल, कीज्ये ठेला ठेलि । मन० ॥५॥
नीली चउला नी फली रे लाल, काकड़िया कालिंग । म०
काचर परवर टींडसी रे लाल, टींडोरी अति चंग । म० ॥६॥
मुंगवड़ी पेठावड़ी रे लाल, खारावड़ी मन खंति । मन०
डवकवड़ी दाधावड़ी रे लाल, व्यंजन नाना भंति । मन० ॥७॥
राय डोडी राजा दनी रे लाल वली खुरसाणी सेव । मन० ।
दाडिम दाख सोहामणा रे लाल, खरबूजा स्युं टेव । मन० ॥८॥
खाति समारया खेलरा रे लाल, राईता ईमेलि, मन०
घोलवड़ा काजीवड़ा रे लाल, माट भरया छै ठेलि । मन० ॥९॥
कारेली ने काचरा रे लाल, तली मूंकी घृत संगि । मन०
पापड़[1] एरंडकाकड़ी रे लाल, सीरावड़ीय सुचंग । मन० ॥१०॥
मोठ मठर चूंला फली[2] रे लाल, छमकास्या देइ वघार । मन० ।
मुंल फूल फल पानड़ा रे लाल, अथाणा[3] सुखकार । मन० ॥११॥

१ पाखड़ फइर २ चिणा ३ संधाणा

सुंदरि परूस्या सालणा रे लाल, हिव पकवानें हूंस । मन० ।
खारिक निमजा खोपरा रे लाल, प्रीसतां रूड़ी रुंस ।मन०।१२॥

दाख विदाम चिरुंजीया रे लाल, मेवा सगली जाति । मन० ।
खाजा ताजा खांडरा रे लाल, घेवर वूरो घाति । मन० । १३ ॥

सखरा लाडू सेवीया रे लाल, मोती मनोहर जाति[1] ।मन०।
घेवर [2]वड़लां हेसमी रे लाल, पैंड़ा[3] कंद बहुभांति[4] ।मन० ॥१४॥

पेंडा[5] डीडवाणा तणा रे लाल, पूड़ी[6] लापसी तेर ।मन०।
मुहम तणीअ तिलंगणी रे लाल, जलेबी बीकानेर[7] । मन०॥१५॥
पहुआवर घनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ ग्वालेर ।
करणसाही लाडू भला रे लाल, वारु बीकानेर ॥१६॥

वयानइ रा नीपना रे लाल, गुदवड़ा गुणखाण । म०
[गुंदवडा पाया तणा रे लाल, आंबा रायण आण ।मन०।]

रुस्तक रा दाणा भला रे लाल, गुंदपाक सुख खाण ।मन०१७॥
सीरा फीणी सुँहालीया रे लाल, सावूनी सुखकार । मन० ।

इन्द्रसा नै दहीथडा रे लाल, इम पकवान अपार ।मन० ॥१८॥
रायभोग गरड़ा तणी रे लाल, साठी सखरी सालि ।मन०।
देव जीर परुसै भला रे लाल, दिल मानै ते दालि । मन०॥१६॥

मूंग मोठ तूअर तणी रे लाल, राती दाल मसूर ।मन० ।
उड़द चिणा ऊपरि घणा रे लाल, सुरहा घृत भरपूर ।मन०॥२०॥

१ रूप २ वावरह समी ३ केला ४ रूप ५ गट्टा ६ पेंडा नागपुरीय
७ गुपचुप गढ ग्वालेर; जलेबी सु प्रीय

भोजन री मुगलें भली रे लाल, कीधी झाड़ झाड़ि ।मन०।
उपरि गौरस आथणी रे लाल, परुसै पदमणि माड़ ।मन० ॥२१॥
चलू करी मूछ्रण दीयारे लाल, लूग सुपारी पान । मन० ।
'लालचंद' कहै साभलो रे लाल, तुरक करै अति तान ।मन०॥२२॥

दासी के सौन्दर्य पर मुग्ध सुलतान को राघव चेतन का पद्मिनी दिखाना

दोहा

ज्युं ज्युं दासी नव नवी, सझि आवइ सिणगार ।
देखि देखि चित चमकीयो, आलिम भोजन वार ॥ १ ॥
रूप अनूपम रंभसम, उवा पदमी कहै याह ।
वार वार विह्वल थको, जंपै आलिम साहि ॥२॥
एक नहीं अम घर ईसी, कैसा हम पतिसाहि ।
याकै एती पदमणी, देखत उपजै दाह ॥३॥
वार वार झवखो किसुं, राघव बोलै एम ।
ए दासी पदमिणी तणी, आप पधारइ केम ॥४॥
चुंप दे के देखो चतुर, त्रिचली म करो वात ।
सहस दोय सहेलीया, रहै संग दिन राति ॥ ५ ॥

ढाल (६) हसला ने गलि घूघरमालकि हसलउ भलउ, ए देशी

व्यास कहै सुणि साहिबा, पदमणि नो हे साचो सहिनाण कि ।
काची कंचन वेलसी, नहिं रूपे हे एहवी इंद्राणि कि ॥ १ ॥
झबकै जाणै वीजली, अंधारै हे करती उजासकि ।
भमर सदा रुणझुण करइं, मोह्या परिमल हे नवी छंडै पास कि
॥२॥सुन्दरि भनी ।

ते आवी न रहइ छिपी, जे मोहइ हे त्रिभुवन जन मन्न कि। सुं०
खिण विरहउ न खमि सकइ,
जतने करि राखइ राणउ रतन्न कि। सुं० ।३।
(राणो) रात दिवस पासे रहै, धन्य देखे हे एहनो[1] आकार कि।
साहि कहै सुणि व्यास जी,
किण विधसुं[2] हे देखै दीदार कि। सुं० ॥४॥
व्यास कहै सुणि साहिबा[3] अति ऊँचो हे पदमणि आवास कि।
मुजरो कोई पामे नहिं,
रावल ही हे लहै भोगविलास कि। सुं० ॥५॥

कवित्त

लाख दस लहै पलिंग सोड़ि तीस लख सुणीजैं
गाल मसूरया सहस सहस दोय गिंदूआ भणीजैं ॥
तस उपरि मसोड़ि[4] मोल दह लखे लीधी।
अगर कुसम पटकूल सेझ कुंकम पुट दीधी ॥
अलावदी सुलतान सुणि विरह व्यथा खिण नवी खमैं।
पदमणि नारि सिणगारि करि रतनसेन सेझां रमैं ॥१॥

ढाल तेहीज—
जे देखइ पदमिणि भणी, ते गहिलो हे होवे गुणवंत कि। सुं०
मान गलइ बहुनारि ना, इम बातां हे वे करि बुधवंत कि। सुं० ६

१ ए रति रूप उदार कि २ करि हे हम होइ० ३ सामिजी ४ दोवड़ि

इण[1] अवसरि पदमणि कहै,
सहीयां देखा हे केहवो पतिसाहि कि। सु० ।
जाली में मुख घाली नै,
गयगमणी हे देखै मन उच्छाह कि ॥७॥ सु०॥
ते देखी व्यासैं तिसैं तव बोले हे देखो सुलतान कि ।सु० ।
रतन जडित जाली विचइ,
बइठी बाला हे गुणवंत सुजान कि । सु० ॥८॥
तुरत देखी ने पदमणी, बोलइ आलम हे नागकुमारिकि । सू० ।
भद्र कि नाथा रुकमणी,
किन्नर किन होय अपछर नारि कि ॥६॥ सु०॥
वाह-वाह वे पदमणि ऐसी नहीं हे इन्द्र घरि इन्द्राणि कि । सुं०
या कइ अंगूठा समि नहीं,
नारी हे जगि मांहि सुजाण कि । सु०।१०।
देखी आलिम अचरिच थयो,
नहिं एहवी नारि संसारिकि । सु० ॥११॥
किती बात याकी कहों,
मुझ मन हे मृग पाड्यो प्रेम पास कि । सु० ।
मुरछित हो धरणी पडयों,
वलि मूके हे मोटा नीसास कि सु० ॥१२॥
व्यास कहै सुणि साहिबा, स्यूं खोवै हे फोकट निज साखि कि ।
और बुद्धि[2] इक अटकला,
तव लगे हे मन धीरज देउ राखि कि । सु० । ॥१३॥

---

१ तिण २ कोई बुधि

जो रावल जिम तिम करी, पकड़ीजे हे तो पहुँचे मन[1] हूँस कि।
आलोची मन आपण, धीरज धरि हे मन पूगै हूंस[2] कि।।सु०।।१४।।
केसरि चन्दण कुमकुमा, छंटीज्ये हे कीज्ये रंग रोल कि। सु०।
वारू दीध पहिरावणी,
हय गय रथ हे आभरण अनेक कि। सु०। ।।१५।।
भगति जुगति राणइ भली, संतोष्या हे सकल राय राण कि। सु०
लालचंद कहि साभलउ,
अस वोलइ हे सइंमुखि सुलतान कि सु०।।१६।।

दूहा

वाँह झालि सुलतान कहैं, राय सुणो महाराउ।
महमानी तुम वहुत की, अव हम गढ़ दिखलाउ।।१।।
रतनसेन साथे हुओ, विषमी विषमी ठोड़।
देखायो सुलतान ने, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड़।।२।।
विषम घाट वाको घणो, देख्या छूटै गरव।
खोट नहीं किण वात नो, साज सातरो सरव।।३।।
कीज्यें कोडि कलप्पना, तोहि न आवै हाथ।
इम विचारी आपणें, इम जंपे दिल्ली नाथ।।४।।
काम काज हम सुं कहो, वंधव जीवन प्राण।
वहु भगति तुम हम करी, अव सीख[3] मागे सुलताण।।५।।
एम कही वगसे वसत, आलम वारम्वार।
कनक रतन माणक जडित, आभ्रण शस्त्र अपार।।६।।

१ प्राणकि २ जीमिया धान ३ विदा देहु महाराण

आलिम कहै ऊभा रहो, करयो मया सदीव ।
रावल कहै आगे चलो, ज्युं सुख पावैं जीव ॥६॥
ईम कहि गढ बारणे,[1] संचरीयो महाराव ।
खुरसाणी खोटे मनै, देखैं दाव उपाव ॥७॥

राघव चेतन की कुमंत्रणा

ढाल (७)

राग-मारु १ पंथी एक संदेसडो, २ कपूर हुवै अति ऊजलोरे एदेसी
व्यास कहै नहिं एहवो रे, औसर लहस्यें ओर ।
कहस्यो पछै न कह्यो किणै, थे मति चुको इन ठोर ॥१॥
साहिवजीथे मानल्यो मारी बात, वलि एहवी न पायवी घात ।
सुनि सुलतान मन चिंतवै रे, साच कहै छै एह ।
अवसर चूक गमाडियो, मोल न लहीइ तेर ॥२॥ सा० ।
हुकम कीयो हल्ला करी रे, विचल्यो साह वचन्न ।
जूझारे जाइ झालियो रे, कपटइ राण रतन्न ॥३॥ सा०॥

राणा की गिरफ्तारी

हम महिमानी तुम करी रे, अव तुम हम मेहमान ।
पेशकशी पदमणी कीया, हिवैं छूटेवो राजान ॥४॥सा०॥
साथे सुभट हुंता तिके रे, तेह हुआ मति मंद ।
हिकमति[2] काइ न केलवी, राय पड्यो वहु फंद ॥५॥सा०॥
वेड़ी घाली वेसाणीयो रे, राहु ग्रह्यो जिम चंद ।
जोरो कोई चालीयो, सिंह पड्यो जिम फंद ॥६॥सा०॥

---

१ वाहिरै २ हिम्मति

गढ ऊपरि वार्ता गई रे, हलहलियो हिंदुआंन।
गढपति झाल्यो आपणो जी, कीज्यें केहोपान ॥७॥सा०॥
गढनी पोलि जड़ाइ नइरे, मिल्यो कटक गढ मांहि।
लोक सहु कहै राय जी, मुरिख अकलि सुनाह ॥८॥सा०॥
काई कीयो कपटी तणों रे, असुर तणो वीसास।
राय ग्रह्यो हिव पदमणी ने, गढनो करसी ग्रास ॥६॥सा०॥
आय बैठो सुभटा विचै रे, वीरभाण वड़ वीर।
आलोचै मिल एकठा जी, सूर सुभट रिणधीर ॥१०॥सा०॥
एक कहै गढ मे थका रे, सवलो करो सग्राम।
एक कहै रूड़ो हुवै रे, राति (दिवस) वाहें काम ॥११॥सा०॥
टाणो न मिले जूझता जी, संकट माहिं सामि।
एक कहै नायक विना जी, न रहै जूझया मामि ॥१२॥सा०॥

हतं ज्ञानं क्रियाहीनं, अज्ञानं च हतं नरं।
हतं निर्नायकं सैन्यं, अभर्त्तारि स्त्रियो हतं ॥१॥

सवला सुं जोरो कीया रे, कारिज न सरै कोय।
कहै एक मरवो अछे जी, ज्यु भावै त्यू होय ॥१३॥सा०॥
मूआ गरज न का सरै जी, छल विण न सरै काज।
'लालचन्द' छल वल कीया जी, अविचल पामै राज ॥१४॥

चितौड़ दुर्ग में शाही दूत द्वारा पद्मिनी की मांग

दूहा

मिलि मिलि मोटा मत्रवी, सूर सुभट रजपूत।
इण विधि आलोचै तिसै, आयो आलिम दूत ॥१॥

आलिम[1] आया दूत वे, बूलाया देइ[2] मान।
आलिम साहि तणा वचन, ते परकासै परधान ॥२॥
आलिमसाहि अलावदी, मूंक्या करिवा प्रीति।
मानो जो ए मंत्रणो, तो रंग वाधइ बहु प्रीति ॥३॥

ढाल (८) मेवाड़ी राजा रे चीत्रोडो राजा रे, एहनी—

मुझ[3] मानो वाता रे; जिम होवै धाता रे,
वले एहवी रे घाता वाता दोहरी रे ॥ १ ॥
साहि पदमणि तेड़े रे, तुम राजा छोड़े रे;
बहु कोडै कर तोड़ै बेड़ी लोहनी रे ॥ २ ॥
गढ कोट भंडारा रे, धन सोवन तारा रे,
हय गेवर सारा माणिक जवहरु रे ॥ ३ ॥
अवर[4] नहिं मागै रे, तुम देश न भागै रे,
मांगे मन रंगे पदमणी मनहरु रे ॥ ४ ॥
मन माहि विचारै रे, बहु जूझ निवारै रे,
जो तुम देस्यो नारी सारी पदमणी रे ॥ ५ ॥
तो देस्यो राजा रे, धन मानै ताजा रे,
नहिं छूटण इलाजा बीजा तुम धणी रे ॥ ६ ॥
जो वातें सीधी रे, राणी नवि दीधी रे,
तो होडैं गढ तोड़ैं नाखुं ईण घडी रे ॥ ७ ॥
भाजे तुम देस्यां रे, भागी टूक[5] करेस्या रे;
तुम राज हरेस्या तुम सेती लड़ी रे ॥ ८ ॥

१ तिहा ने तेडो मूकि नै २ बहुमान ३ तुम ४ अलम ५ मकभूर

ईम भाखी चाल्या रे, परधाने पाल्या रे,
वाहे करि झाल्या आल्या धन वहू रे ॥ ९ ॥
हम सिर तुम खोलै रे, वीरभाण इम बोलै रे;
हम गढ तुम ओलैं राय राणी सहू रे ॥ १० ॥
आलोची रातें रे, कहस्या परभातैं रे,
जातै रहवातैं सुख हम तुम सही रे ॥ ११ ॥
पाउधारेंउ डेरै रे, आलिम पंति हेरै रे;
विसटालुं चर[1] पाछा फिरै इम कही रे ॥ १२ ॥
आलोचइं केडै रे, न हुंता जे डेरै[2] रे,
आघा ले तेड़ै हेडै स्यु होसी रे ॥ १३ ॥

पथविचलित वीरभाण

आलिम अडीलो रे, किण ही परि ढीलो रे,
होवे न रढीलो तुरक गयो गुसे रे ॥ १४ ॥
जो दीज्यैं राणी रे तो न रहै पाणी रे;
विण दीवे गढ जाणी हाणि होवै पछै रे ॥१५॥
जोरें जो लेसी रे, वहु[3] वंद करेसी रे,
तो काइ नव रहसी रजवट जे अछै रे ॥ १६ ॥
आ पद्मणी दीज्यैं रे, घर सुत संधीजे रे,
विण दीधा वंधीजे, छीजै जन घणो रे ॥ १७ ॥
कोई वोल्यो वाणी रे, ए मुँकी अडाणी रे,
राणी धर लीजे राणो आपणो रे ॥ १८ ॥

१ नर २ नेड़ै ३ वलि

वीरभाण विचारइ रे, मन वैर संभारइ रे,
इण सोहाग उतास्यो मुझ माता तणो रे ॥१६॥

जो परही दीज्ये रे, सहिजइ छूटीज्ये रे,
कीज्यें न विलंभ इण वातें घणो रे ॥ २० ॥

सुभट समझावै रे, ए वात सुणावै[1] रे,
सगला सुख थावै जउ दीजइ इणै रे ॥ २१ ॥

किणही मनमानी रे, भलीय न जाणी रे, सुभटा ने न सुहाणी रे
विण नायक न ताणी वोल कह्यो किणे रे ॥२२॥

यस्मिन्कुले यत्पुरुषः प्रधान. सएव यत्ने न हि रक्षणीय ।
तस्मिन विनष्टे सकलं विनष्टे नानाभि भंगे ह्यरकावहंति ॥

मन दुरमत[2] आवी रे, सगला मन[3] भावी रे,
वीरभाण सोहावी[4] भावी जे हुवै रे ॥ २३ ॥

सगला ही विचारी रे, परभातै नारी रे,
दीज्यै निरधार उठि ईम कहै रे ॥ २४ ॥

सुणि पदमणी सोचै रे, नयणे जल मोचै रे,
परधाने पौचे मन मे खलभली रे ॥ २५ ॥

सुभटां सत हास्यो रे, राय वधास्यो[5] रे,
अम काज विचास्यो भव हारण वली रे ॥२६॥

---

१ वणावै २ दुश्रीनी ३ समचावी रे ४ सोहावीनै सही रे ५ वंदि पधास्यो रे

पद्मिनी का स्वावलम्बन

किण सरणें जाऊं रे, दीन भाष सुणाउं रे,
सतहीण न थाउं मन कीज्ये खरो रे ॥ २७ ॥
ए सुभट कुजीहा रे, सी कीजइ ईहा रे
मुख असुर न पेखउं जीहा खण्डि मरउं रे ॥२८॥
समझी मन सेती रे, खत्री धर्म खेती रे,
मन[1] धीर धरेती जिम एनी सती रे ॥ २६ ॥
सीता ने कुंती रे, द्रोपदि वहु भंती रे,
लही सकट[2] न सील चूकी रती रे ॥ ३० ॥
सत सील प्रभावइ रे, दुख नइ मउनावइ रे,
वहु आणंद वधावइ, दिन रयणी गरवइ रे॥३१॥
हिवें[3] सील प्रभावें रे, सुणयो मन भावै रे,
मुनि 'लालचन्द' गावै पावै सुख ध्रुवें रे ॥ ३२ ॥

वीर गोरा के घर पद्मिनी गमन

दूहा

गोरो रावत तिण गढै, वादल तस भत्रीज ।
वल पूरा सूरा सुभट[4], खत्री धर्म (राखै) तेहीज ॥१॥
तजी सेवा रावल[5] तणी, किणही कुबोल विशेष ।
चाकर गयर थका रहें, गास गोठ तजि रेख ॥२॥

---

१ वहु २ कष्ट न चूकउ 'सन एका रती रे ३ सत ४ बिहुं,
५. श्री राण नी ।

जेहवै ते जाता हुता, अवर ज सेवा क्रर्म ।
तेहवें गढ रोहो हुवउ, रहिया खत्रीवट्ट धर्म ॥३॥
गाठि खरच[1] खाता रहै, अभिमानी वड़ वीर ।
गढ रोहो किम नीसरै, पर दुख काटण[2] धीर ॥४॥
एहवा नें पूछै नहीं, न्याय हुवे तो केम ।
पंडित नै आदर नहीं, मूरख सुं वहु प्रेम ॥५॥

ढाल (६) एक लहरोलै गोरिलारे-ए देशी

गढ नी लाज वहै घणीरे, गोरो वादल राउरे ।
ते सुणीया मोटा[3] गुणी, वुद्धिवंत सूर साहाउरे ॥१॥
गढ नी लाज वहै रे । ॥आ०॥
चित सुं एहवो चिंतवै रे, चालि चढी चकडोलो रे ।
साथ सहेली नें भूलरै रे, ते गई गोरा नी पोलो रे ॥२॥ ग०॥
बैठो दीठो वारणै, गोरोजी गात गयदो रे ।
हरषित मनि पदमणी हुवैं, ए दूर करेसी दंदो रे ॥३॥ ग०॥
सामो धायो उलही, प्रणमें पदमणी पायो रे ।
मया करी मो ऊपरै रे, गोरिल वोलै माय रे ॥४॥ ग०॥
आज दिवस धन्य माहरो रे, आवी आलसुआ में गंगो रे ।
पवित्र थयो घर आगणो, अधिक पवित्र मुझ अंगो रे ॥५॥ग०॥
काज कहो कुण आविया, माताजी मुझ आवासो रे ।
तब वलती पदमणि कहै, अवधारो अरदासो रे ॥६॥ ग०॥

१ गरथ २ कातर ३ पदमिणी ।

सुभटें सीख दीधी[1] सहु रे, खोई खत्रीवट लीको रे।
असुरा घरि अमनें मोकलै, कुमतीया लाज किसीको रे ॥७॥ग०॥

सीख द्यो हिव मुझ नें, आई छुं[2] इण कामो रे।
ग्यान किसै मुझ नें गिणै, कहै गोरा इण गामो रे ॥८॥ग०॥

खरच न खावां केहनो, कोई न पूछै कामो रे।
तोपिण हिव चिंता तजो, आया जो इण ठामो रे ॥६॥ग०॥

अलगो भय असुरा तणो, हूओ हिव मात निचिंतो रे।
जाण्या सुभट वडा जिके, जिण दीधो-एह कुमतो रे ॥१०॥ग०॥

वर मरवो इण वात थी, राणी देई राओ रे।
छूटावीज्ये ,एहवो, सुभट न खेलै डाओ रे ॥११॥ग०॥

करसी ते जीवी किसुं, थाप्यो जिण ए थापो रे।
कर जोड़ी राणी कहै, इण घरि एह अलापो रे ॥१२॥ ग०॥

खोयो राय गढ खोवसी, इण बुद्धि सारू एहो रे।
तिण तुझ हुं सरणो तकी, आई छुं इण[3] गेहो रे ॥१३॥ ग०॥

सिंह तणो स्यो स्यालीइ, कारिज करे समारो रे।
गज पाखर गजस्युं चलै, भींत निवाहै भारो रे ॥१४॥ग०॥

ए कारिज तुम स्युं हुवै, तू हिज बीड़ो झालि रे।
सुभट वड़ो तुं माहरोरे, दोहरी वेला में ढालि रे ॥१५॥ग०॥

सुणि माता सुभटा वड़ो, गाजण थो मुझ भ्रातो रे।
तस सुत बादल तेहनें, पिण पूछीजे वातो रे ॥१६॥ग०॥

१ देह २ इतरइ ३ हिव।

गोरा के साथ बादल के घर जाना

बेऊ चाली आविया, बादल ने दरबारो रे।
विनय करी नें बादले रे, आय कीध जुहारो रे ॥१७॥ग०॥
पूछै कारिज पय नमी, कहो आया किण काजो रे।
'लालचंद' कहे[१] तस अखीइं, जस[२] मुख हुवै लाजो रे ॥१८॥ग०॥

दूहा

गोरो कहै बादल सुणो, पदमणि साटै राय।
छूड़ावीज्यै एहवो, सुभटे कीयो उपाय ॥१॥
ते ऊपरि ए पदमणी, आई आपा पासि।
स्युं करिवो सूधो मतो, बेयो कहो विमासि ॥२॥
सरम छोड़ी बैठा सुभट, आपे अछा उदासि।
छोड़ी दीधो रायनो, गाम गोठि तजि[३] ग्रास ॥३॥
लाजत छै नीची दियां, कुल खत्री धर्म सार[४]।
डीलै दोय आपां सुभट, आलिम कटक अपार ॥४॥
किण विधि जीपीजइ किलो[५], ते भाखो भत्रीज।
तिणए[६] आवी तुम कन, पदमणि आपेहीज ॥५॥

ढाल (१०) नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे, ए देशी। राग-मारू

पदमणि बोले वीरा बादलारे, सुणि मोरी अरदास।
हुं सरणागति आवी ताहरै, साभलि तुझ जसवास ॥१॥पद०॥
हिव आधार छै एक तुम तणो रे, दोहरी वेला दाखि।
सगति न हुवै तो सीख द्यो, राखि सकै तो राखि ॥२॥पद०॥

---

१ तसु दाखीय २ जेहनइ ३ जे ४ लार ५ एकिलो ६ तिणले आयो तुम्ह लगि

नहितर पाछे मन जाण्यो करू रे, देखु छु तुम वाट ।
सील न खंडु जीभड़ी खंडस्यु रे, कै नाखु सिर काट ॥३॥पद०॥

पच्छिम ऊगै रवि पूरव थकी रे, वारिधि चूकै ठीक ।
जलणी जलु कै जल मे पड़ु रे, पिण नहु लोपु लीक ॥४॥पद०॥

एक वार आगै पाछै सही रे, इण भव मरवो होय ।
तो स्यु करु हिव जीव नै रे, एक भव मे हुवै दोय ॥५॥पद०॥

जउ उदयागत आवइ आपणइ, पूरव कृत पुण्य पाप ।
विण भोगविया ते नवि छूटियइ, करता कोड़ि कलाप ॥६प०॥
किण जाण्यो थो एहवा कष्ट में रे, पड़सी रतन[1] पडूर ।
पिण एहवी भावी बणी रे, जेहवो कर्म अंकूर ॥७॥प०॥

सिंहल देश किहां दरिया परै रे, किहा मेवाड़ सुदेश ।
किहां सिंघल वीरा री वइंनडी रे, किहा महाराण नरेश ॥८॥

कोइक पूरव भव संबंधसु रे, आइ मिल्यो संजोग ।
भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्यो रे, वणियो एम वियोग ॥६॥
पिण मन माहि हिवै जाणु अछु रे, कोइक पुण्य प्रमाण ।
बधव जी तुम सु भेटो हुओ रे, तो भय भागो सुलतान ॥१०॥
मात पिता थे वंधव माहरा रे, हिवै तुम सगली लाज ।
सील प्रभाव मुझ आसीस थी रे, जैत करो महाराज ॥११॥प०॥
अविचल नांम नव खंडे करी रे, भाजो अरि भडवाय ।
राखो पदमणि रतन[2] छुडाइ ने रे, थंभो गढ़ जसवाय[3] ॥१२॥

१, २, राण ३ थाउ ।

जैत थायज्यो रिपु जीपिनें रे, पूरो सुजन जगीस ।
वादल वीरा ए मुझ वीनती रे, जीवो कोड़ि वरीस ॥१३॥५०॥
साहसि करता मन वंछित सरै रे, वरदायक सुर होय ।
ए काची काया थिर नवि रहै रे, जग में थिर जस सोय ॥१४॥
इम सती वचने प्रेरियो रे, मन थयो मेरु समान ।
,लालचंद' कहै[1] चढती कला रे, सामीधर्म गुण जाण ॥१५॥

वादल द्वारा राणाको मुक्त कराने की प्रतिज्ञा

दूहा

सुणि वाता मन उल्लसी, वोलैं वादल वीर ।
केहरि जिम त्राडकि नें, अतुली वल रिणधीर ॥१॥
वावा सुणि वादल कहें, सोई रहो सुभट ।
तो भत्रीज हुं ताहरो, खलां करु तिलवट्ट[2] ॥२॥
एकण पासे एकलो, एकणि साहि कटक ।
वावा तो हुं वादलो, मारि करु दहवट्ट ॥३॥
मात पधारो निज महल, पवित्र थयो मुझ गेह ।
चित में चिंता मती करो, जेर[3] करु सव जेह ॥४॥
पाव धरु पतिसाह ने, छोडावुं श्री राजान[4] ।
जो वासे जगदीस छै, तो करस्यु वचन प्रमाण ॥५॥

ढाल (११) मधुकर नो

काम घणा श्री राम ना, कीधा श्री हणमंत रावत ।
तिमहुं श्री रावल तणा, करस्यु काम अनंत रावत ।१।

१ मुनिवर २ खलखट्ट ३ जोज्यो ४ राण ।

वीडो झाल्यो वादलइं, आप भुजावल जोर रावत।
मूकउ मनधरी खलभली, द्यो नोवति सिर ठउर रावत ॥२॥
सामिधरम सुपसाउलैं, नइं तुम्ह सत पसाय रावत।
परदल नें भाजी करी, ले आवो महाराय रावत ॥३॥वी०॥
जिण तुम सुं इम दाखियो, जावो असुरा गेह रावत।
जीभ जलो[1] तिण मनुष्य री, खत्रीवट न्हाखी खेह रावत ॥४॥
विरुद वखाणी पदमणी, सिर पर लूण उतारि रावत।
सूर सुभट सिर सेहरो, तू अमलीमाण संसारि रावत ॥५॥वी०
गोरो जी सुणि वोलड़ा, मन तन हरखित दोय रावत।
सुर होवे असुरा मिल्या, कायरे कायर होय रावत ॥६॥वी०॥
मन नचिंत तुमे करो, महल पधारौ माय रावत।
वादल बोल न पालटइ, जो कलि उथल थाय रावत ॥७॥वी०॥
सूरिज ऊगै पच्छिमे, मूकै समुद मरयाद रावत।
ध्रुव चले पिण न चलइ, सापुरिषा रा साद रावत।

बादल की माता के मोह वचन

महल पधार्या पदमिणि, तेहवै वादल माय रावत।
सगली वात सुणी करी, पासै ऊभी आय रावत ॥८॥वी०॥
नैंण झरैं मन दुख करइं, मुख मूकै नीसास रावत।
विनो करी सुत वीनवैं, किम दीसो मात उदास रावत ॥१०॥
मो जीवंता मातजी, चिंता सी तुझ चित्त रावत।
कांय तूं आमणदूमणी, कहो मुझ स्यु धरी प्रीत रावत ॥११॥

---

[1] वलो।

पूत सुणो माता कहै, सगतें स्यो जंजाल रावत ।
कांय माड्यो किण रै वलै, ए घर जाणी ख्याल रावत ॥१२॥

पूठै स्यु देखो घणो, आगें पाछे तुम एक रावत ।
तू मुझ आधा लाकड़ी, तु कुल थभण टेक रावत ॥१३॥वी०॥

जीव जड़ी तु माहरै, तू मुझ प्राणआधार रावत ।
तो विण बेटा माहरै, सूनो ए संसार रावत ॥१४॥वी०॥

हिव तू जूझण ऊमह्यो, पोति समाही काल रावत ।
दांत अछै तुझ दूधरा, अजी अछै तु वाल रावत ॥१५॥वी०॥

तुझ नें लाज न कोई चढै, गढ मे सुभट अनेक रावत ।
ग्रास न कोई भोगवा, राय तणो सुविवेक रावत ॥१६॥वी०॥

कदी कीधा जाणो किसा, बेटा तें संग्राम रावत ।
लब्धोदय[1] कहै बहु परै, माय समझावै आम रावत ॥१७॥

दूहा

रिणवट रीत जाणै नहीं, विचि[2] विचि बोले एम ।
किम अणजाण्यो कीजिए, कारिज अनड़[3] नि तेम ॥१॥

अजी न साधी घर घरणि, कहता आवै लाज ।
अती उच्छक उतावलो, रखै विगाड़ै काज ॥२॥

कीधा कदे न आज लगि, एक त्रिणा थी दोय ।
वालक बेटा वादला, किलो किसी परि होय ॥३॥

---

१ लालचंद २ वजि वजि बोले वाल ३ पूत निटोल । -

वादल का मां को प्रत्युत्तर

तव हसी वादल वीनवै, हुं कित वालो माय ।
पूछु तुम नें पय नमी, ते मुझ ने समझाय ॥४॥
पोढु हिवै न पालणै, फिरि[1] फिरि न चूखु धाय ।
आडो करतो आगलै, धांन[2] न मागु माय ॥५॥

ढाल (१२) श्रेणिक मन अचरिज थयो, ए देशी

वादल इण परि वीनमैं, मात नहीं हुं वालो रे ।
रिणवट आलिम साह सुं, जोइ करूं ढक चालो रे ॥१॥वा०॥
थापी नै वली उथपुं, राय राणा सुलतानो रे ।
तो सुं कारज ए हुवै, कांय मन मे डर आणो रे ॥२॥पा०॥
नान्हइ किसनइ नाथियो, वासिग नाग वडेरो रे ।
नास करइ रवि नान्हड़ो, अंधकार बहुतेरो रे ॥३॥वा०॥
वालूड़ो केहरी वचो, भाजे गैवर थाटो रे ।
तो हुं थारो छावड़ो, रिपु न्हाखुं दहवाटो रे ॥४॥वा०॥
मति जाणो थे मात जी, कुल नें लाज लगाऊं रे ।
गंजण छावो गाजतो, आज करी नें आऊंरे ॥५॥वा०॥
जो पाछा पग चातरुं तो जाणो मति रजपूतो रे ।
कायर वाणी किम कहैं, देखो सुत करतूतो रे ॥६॥वा०॥
सूर वचन रजपूत[3] ना, चित मे चिंता व्यापी रे ।
मन माही बहु खलभली, सीख न तास समापी रे ॥७॥वा०॥

---

१ धूढि न चूंपु धाइ २ थान ३ सुनि पुत्र नउ ।

वादल की पत्नी का प्रयास

बहुआ नै आइ कहै, माहरो वचन ज मानो रे।
थे समझावो जाय ने, जो क्युं ही नेह पीछाणो रे ॥८॥वा०॥
सोल शृंगार सझि करी, सुकलीणी सुविलासो रे।
जाणे झबकी वीजली, आवी प्रीउ नै पासो रे ॥६॥वा०॥
रूपइ रंभा सारिखी, मृगनयणी गज गेलि रे।
कंचनवरणी कामिनी, साची मोहन वेलि रे ॥१०॥वा०॥
विनय वचन करि वीनवइ, हसत वदन हितकारो रे।
साहिव वीनति सांभलो, तन मन प्राण आधारो रे ॥११॥वा०॥
साथ सवल पतिसाह नो, मुगल महा दुरदंतो रे।
एकाकी इण परि कहो, किम पूजीजे[1] कंतो रे ॥१२॥वा०॥
कहै वादल सुण कामनी, जोइ करूँ जे जंगो रे।
वज्र घणो नानो हुवइ, तोडै गिरि उत्तंगो रे ॥१३॥वा०॥
वात करंतां सोहिली, पिण दोहली रिण वेला रे।
सामी एहवइ मंत्रणइ, काय करो जन हेलां रे ॥१४॥वा०॥
सूर पणै वादल कहै, स्यानै भय देखावो रे।
तेह नाहिं हुं वादलो, हिव घुं हेठो दावो रे ॥१५॥वा०॥

बोलइं मोटा बोल, निश्चइं निरवाहइ नहीं।
तिण माणस रौ मोल, कोडी कापड़ियो कहइ ॥१॥

गोला नालि वहै घणा, हय गय रथ भड़ झूझै रे।
घोर अंधार रिण रजकरी, सूरिज सोइ न सूझै रे ॥१६॥वा०॥

---

१ पहुंचीजइ।

मुगल महाभड़ साहसी, मूकै दोय दोय वाणो रे।
'लालचंद' पतिसाह स्युं, पूजै केहो किम पाणो रे ॥१७॥वा०

दूहा

शस्त्र ग्रही मोटा सुभट, दयें चौकी दिशि च्यार।
साहि सबल पति एकलो, भलो न एह विचार ॥१॥
तब बादल हसि नें कह्यो, कही किसी थे वात।
रावल छोडावु रतन, तो गाजन मुझ तात ॥२॥
हुं गंजुं हय गय सुभट, भाजि करुं भकभूर।
सतावीस लख दल सहित, साहि करुं चकचूर ॥३॥
नारि कहै[1] रहो रावलो, किसो जणावो पाण।
अजीस नारी आपणी, साधि न[2] हुवे सुजाण ॥४॥
नारी सुं न्हाठा फिरो, मिटी न बाली लाज।
तो कहो कसी परि जूझस्यो, करस्यौ केहो काज ॥५॥

दृढप्रतिज्ञ वीर बादल को स्त्री द्वारा सीख

ढाल (१३) नदी यमुना के तीर उडै दो पखीया —ए देशी—
तउ वलतो बादल कहै सुण कामनी।
तिण दिन आवीस सेज तुमारे जामनी ॥१॥
जीपी आउं जिण दिन वैरी हुं एतला।
छोडावुं श्री राण कि लोह[3] करी कै भला ॥२॥

१ कहर हुवौ वड़ौ २ सीधी नहीं ३ ला करि भलि भला।

तो दस मास न झाल्यो भार मुझ मात जी।
तें भाखीज्यें वात करु तिण मे कजी ॥३॥

सूरातन मन देखी नारी तव इम कहै।
भलो भलो भरतार सु मन मे गह गहै ॥४॥

हम है तुमारी दास कि पग की पानही।
निरवाहैजो वात जेती मुख स्यु कही ॥५॥

मति किणही वातइ ढहि जाहु कि लाजवउ।
वंश वधानउ शोभ विरुद वहु छाजवउ ॥६॥

घालैयो नें घाव घणो साहस करी।
खेसवयों रिण खेत खडग हणी लसकरी ॥७॥

होय छछोहा लोह घणा थे वावयो।
हल करयो हथवाह अरी दल गाहयो ॥८॥

द्यो मति पाछा पाव मरण भय[1] मति गणो।
जीवण थी इणि वात सुजस काइ द्यो घणो ॥९॥

भिड़ता भाजै जेह मरै निहचै करी।
कानि सुणउं एहवात मरु लाजइ खरी ॥१०॥

सुभटा माहिं सोभ घणी थे खाटयो।
नव खंडे करी नाम अरी दल दाटयो ॥११॥

सुभट कहावै नाम सहू ही सारिखो।
पण रिण माहिं तास लहिज्यें पारखो ॥१२॥

---

1 जउ।

तिम करयो जिम हुं मन मांहिं गहगहूँ।
छल बल करयो काम घणो कासु कहूँ ॥१३॥
जीवन मरणे साथ तुमारो मइं कियो।
हिव करयो हथवाह करी करड़ो हीयो ॥१४॥
भूखा घर नी नार पूछी[1] कुमतो कहै।
तिण सगलें संसारि वहुत अपजस लहै ॥१५॥
उत्तम राजकुमार सदा सुमतउ दियइ
धीरज कुलवट रीति रहइ जग जस थियइ ॥१६॥
हिव साची मुझ नार जिणैं सुमतो कह्यो।
निज कुल राखण रीत हिवै मन गहगह्यो ॥१६॥
सुभट तणो सिणगार करायो[2] नारीइं।
वंधाया हथियार भला निज करि लीइं ॥१७॥
निज माता रा चरण नमी चित हरखीयो।
होय घोड़ै असवार गौरिल घर सरकीयो ॥१८॥
करी जुहार कहि राज रहो ता लगै घरै।
जाय आउं एक वार कटक पतिसाह रै ॥१६॥
कहै गोरो मुझ वात सुणो तुम वादला।
तुम जाओ मुझ छाड रहै किम मुझ कला ॥२१॥
काकाजी मन माहि न तुम चिंता करो।
रिणवट एको साथ हुसी आपा खरो ॥२२॥

१ पूठी कुमतइ २ सजाओ।

कौल करु छुं दक्षिण हाथ देई करी।
हुं जाऊ छुं चास भास देखण करी ॥२३॥

मेवाडी सुभटों की सभा में

बादल ले आदेश गोरा रावत तणो।
सुभट मिल्या तिहा जाय साहस मन मे घणो ॥२४॥
देखि सभा सगली मनमइं विस्मय थई।
आवइ नहिं दरवार कदे क्यों आवई ॥२५॥
सुणिज्यइ गाजन नंदण सूर महाबली,
सही विचारी वात कोइक रिण री रली ॥२६॥
बैठा राजकुमार सुभट सहू एवडा।
धसि आयो तिण ठाम (सुभट) सहु हुओ खड़ा ॥२७॥
दे आसण सनमान प्रीयोजन पूछ ही।
आया बादल राज कहो ते किम सही ॥२८॥
आलोची सी वात बादल विहसी कहै।
जिण थी थी सुभटा लाज राज कुसले रहै ॥२९॥
आलोची निज वात माडी नै सहु कही।
राणी देई राय छुडावण री सही ॥३०॥
आलोच्यो आलोच अम्हारो ए अछै।
कीज्यें तेह विचार कहो जे तुम पछे ॥३१॥
बादल बोले वारु कीयो ए मन्त्रणो।
पिण इक माहरी वात सुणि आलोचणो ॥३२॥

पहिली मति ऊँधी करी, आलम तेड्यो माहि रे भाई।
तेड्यो तो मारण तणो, कीधउ दाव सु नाहि रे भाई ॥६॥आ०॥
जहर कहर मुगल मिल्या, गढ मे तीस हजार रे भाई।
छल वल करि नवि छेतस्या, तौ स्यौ सोच हिवार रे भाई ॥१०॥
लसकर माहि जाइ नै, ले आवूं छुं वात रे भाई।
इम कहि नै अश्वै चढ्यो, साहस एक संघात रे भाई ॥११॥आ०॥
ऊतरीयो गढ पोलि थी, निलवट निपट सनूर रे भाई।
अँगै आऊध अति भला, प्रतपै तेज पडूर रे भाई ॥१२॥आ०॥
एकलमल अश्वे चढ्यो, अभिनव इन्द्र[1] कुमार रे भाई।
आलिम देखी आवतो, पूछायो तिण वार रे भाई ॥१३॥आ०॥

सीह न जोवइ चंदवल न जोवइ घर रिद्धि।
एकलड़उ वहुआ भिड़ा ज्या साहस त्या सिद्धि॥

पूछ्या थी वादल कहै, मेलि करण रै मेलि रे भाई।
जाइ कहउ हुं आवियउ, पदमिणि तुम नइ गेलि रे भाई।१४।आ०
तुम उपगार करु वड़ो, मानै जो मुझ वात रे भाई।
सेवक आवी इम कहै, हरख्यो आलिम गात रे भाई ॥१५॥आ०।
तेडायो आदरि करी, दीठो अति बलवत रे भाई।
बेंसाण्यो दे वैसणो, मान लहै गुणवंत रे भाई ॥१६॥आ०॥

हसा जहाँ जहाँ जात है, तहाँ तहाँ मान लहत।
कग्गा वग्ग कग्ग वग, कग वग कहा लहंत॥

---

१ अग्नि।

वुद्धिवंत वादल राइ ने, पूछै श्री पतिसाहि रे भाई।
सलाम करी वैठो तिसै, आलिम हूओ उच्छाहि रे भाई ।१७आ०।
'लालचन्द' कहै वुधि थकी, दोहग दूर पुलाइ रे भाई ।१७आ०।

दूहा

नाम तुमारा क्या कहो, किसका है तूँ पूत।
क्या महीना रोजगार क्या, किसका है रजपूत ॥१॥
किण भेज्या किण काम कुं, आया है हम पास।
तव वलतो वादल कहै, वुद्धिवंत हीइं[1] विमास ॥२॥
वोली जाणइ अवसरइ, माणस कहीइ तेह।
वादल इण परि वोलीयउ, जिम वधीयो आलम नेह ॥३॥
वल थी वुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल।
वानर वाघ विणासियो, एकलड़इ सीयाल ॥४॥
नाम ठाम कहि वीनवैं सुभट चढ्या अभिमान।
तिण मुंकियो छानों मनैं[2], पदमणीयें परधान ॥५॥

ढाल (१५)—सइमुख हु न सकुँ कही आडो आवे लाज

जिण दिन थी तुम देखीया जिमवा मउसरि साह।
तिण दिन थी पदमिणि मन वसिउ तुम्ह मांहो रे ॥१॥
सुण आलिम धणी। विरह विथा न खमायो रे,
वात किसी घणी ॥आकणी॥
ते धनि नारी नारी जाणीइं जेहनिइ ए भरतार।
इण थी रूप अवधि अछै, काम तणो अवतारो रे ॥२॥सु०

१ मनइ २ पदमनी।

सगतें सुभट संग्राम करै मन गहगही।
पिण नवि मूकै माण वात जें संग्रही ॥३३॥
मान विना नर कण विण कुकस जेहवो।
'लालचंद' नर टेक न[1] छंडै तेहवो ॥३४॥

कवित्त

अगीकृत अनुसरइ होइ सापुरिस जु साचा,
अंगीकृत अनुसरइ होइ कुल जातै जाचा।
अंगीकृत ईश्वरइ जहर पीधउ दुख हंतइ,
वारिध वाड़व अग्गि वहे पाणी सोसंतइ।
काछिवउ कंध वहु धावही, अजहु भार एवड़ सहइ।
मुनि लाल वयण आदरि जके, सो सज्जन वहु जस लहइ ॥१॥

दूहा

काया माया कारमी, जात न लागइं वार।
सूरपणें कायरपणै, मरणो[2] छै एक वार ॥१॥
तउ ढाढा हुइ किम मरौ, मरउ तउ मरण समारि
पत जास्यै पद्मणि दीया, असमचउ एह विचारि ॥२॥
राय लीइं राणी दीइं, जाण्या यदि जूझार।
मस्तक केस न को रहइ, अपकीरति संसार ॥३॥
नाक मुकिजो ऊवरया, केहो जीवन स्वाद।
देश विदेश छाडो[3] पडो, तजीइ किम कुल मरजाद ॥४॥

---

१ वात निवाहइ २ कोई मरण न टालणहार ३ छांटो मरु इम रहइ

वीरभाण वलतउ कहइ, बोल्यंइं घणे पराण।
वादल वात भली कहउ, पिण समझा नहीं तिलमान ॥५॥
बादल वात भली कहो, अनेन समझा मोड।
रखे राणी राजा लीयो, तो पति राखो चितोड़ ॥६॥
ढाल १४ म्हारी सुगण सनेही अतमा, ए देशी
आलिमपति अलावदी, ईश्वर नो अवतार रे भाई।
मुगल महाभड़ जेहनै, लाख सतावीस लार रे भाई ॥१॥आ०॥
एक हुकम करता थका, उठै एक हजार रे भाई।
सगले थोके सावतो, पहुंचीजे किम पार रे भाई ॥२॥आ०॥
कलै कलै पदमणी राखसुं, राय छंडी हजूर रे भाइ।
पतिसाह प्रति लोपी ने, घूक अंध नित घूर रे भाई ॥३॥आ०॥
कहि वादल सुण कुंवरजी, स्यउ आपा ए सोच रे भाई।
काइ आलोचइ केहरी, मारता मदमोच रे भाई ॥४॥आ०॥
इम करता जो को मरइ, तउ जगि कीरति होई रे भाई।
कन्या साटइ पामता, सु हगी कीरित सोई रे भारे ॥५॥आ०॥
कुमर कहै इण वात री, कीज्यैं ढील न कांई रे भाई।
सोई अरजून जाणीइ[1], जे वेधो वालै गाय रे भाई ॥६॥आ०॥
रहै पदमणी आपणै, नइं वलि छूटइं राण रे भाई।
इण बातइ कुण नहिं हुवइ, सुप्रसन मनहि सुजाण रे भाई ॥७॥
वादल कहै[2] सहू भलो, हुइ आवीसीइ तुम नाम रे भाइ।
करज्यो वासइ कुमर जी, सबलो ऊपर सामि रे भाई ॥८॥आ०॥

१ समझिइ, जि कोइ २ बोलइ

राति दिवस झूरती रहैं, मूकें मुखि नीसास ।
नयणे नीझरणा झरें, नारी अधिक उदासो रे ॥३॥सु०॥
जिण दिन थी थे वीछार्‍या, नयणे नेह लगाय ।
सुख जाणइ यम सारिखो, भुवन भाठी सम थायो रे ॥४सु०॥
तरुणापउ विस सउ लगइ, सोल शृंगार अंगार ।
अगनि झालि सम चादलउ, जालण वालण हारो रे ॥५॥सु०॥
भूषण जाणि भुजंग सा, चउकी चाक समान ।
वीछु सम ए विछीया, सिज्या अगनि समानो रे ॥६॥सु०॥
वारु जेह विछावणा, तीखा वरछा जाणि ।
पड़दउ तेह पहाड सउ, अन्नण आवइ खाणो रे ॥७॥सु०॥
देह गई सब सूकि नै, नयने नींद हराम ।
राति दिवस रटती रहें, साहिब जी तुम नामो रे ॥८॥सु०॥
भूख प्यास लागै नहीं, चिन्ता व्यापी देह ।
कीधी का तुम्ह मोहिनी, निवड़ लगायो नेहो रे ॥९॥सु०॥
मास लोही नामइ रह्यउ, छाती पड़ियउ छेक ।
दुक्ख दुसह किम करि सहइ, तुम्ह विरह सुविवेको रे ॥१०॥सु०॥
पलक गिणें एक मास सउ, घड़ीय गिणें छम्मास ।
वरस समान दिन नइ गिणइ, इम विरह पीडइ तास रे ॥११॥सु०॥
तुम्हसुं लागउ नेहलउ, जाण मजीठउ राग ।
पट्टकूल फाटें थकें, रहें त्रागा सुं लागो रे ॥१२॥सु०॥
तू जीवन तू आतमा, गत मति प्राण आधार ।
सासें सासें संभरइ, पदमिणि वार हजार रे ॥१३॥सु०॥

मुख करि किम कहतइ वर्णो, जे तुम्ह सेती राग।
ते मन जाणै तेहनो, लागो जिण विधि लाग रे ॥१४॥सु०॥
विगति लहै विरहा तणी, विरही माणस तेह।
'लालचन्द' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रे ॥१५॥सु०॥

दूहा

चीठी दीधी चूपस्युं, वाची देखें साहि।
समाचार विगतें सहित, सगला ही इण माहि ॥ १ ॥

वइत हजार दरवदिल मेर सजिइरिया रु चिहुँ नमसु
वुइ कुनम् आदिल केवद रद हजार ॥ १ ॥
तन रार वाव साजिम् रंग ,हाजितार तार दीगर,
सरोजनें स्तेव जुज वार योर्यार ॥ २ ॥

मइ मन दीनो तोहि, जा दिन तो दरसन भयो।
अव एती वीनति मोहि, प्रेम लाज तुम निरवहौं ॥२॥
मइ मन दीनो तोहि, सकइ तो ऊडि निवाहीयं।
नातरि कहीइ मोहि, हुं मनि वरजउ आपणउ ॥३॥
निसि वासर आठउं पहर, छिण नहिं विसरु तोहि।
जिहि जिहि नइन पसारहुँ, तिहि तिहि देखुं तोहि ॥४॥
आठ पहोर चोसठि घडी, जवही न देखुं तुझ।
न जाणुं तइं क्या कीया, प्राणपीयारे मुझ ॥५॥
दोवैता दूहा सहित, चीठी एक उपाय।
वादल दीधी साहिनै, अकलि थकी उपजाय ॥६॥
वले कहै आलिम तणा, यदि आया परधान।
सुभटा मरणो आगम्यो, पिण न तजै अभिमान ॥७॥

वीरभाण राजा सहित, सुभटा नें समझाय ।
ज्युं ज्युं कान ढेराई नै, हुं आयो तुम पाय ॥८॥
राणी मूँक्यो मो भणी, घणी वीनती कीध ।
हिव हुं जाणुं तुम तणी, होसी मनोरथ सिद्धि ॥६॥

ढाल (१६)—वदणा करु वारवार-ए-देशी-प्राहुणारी

वालेसर हो वली परभातैं वात, कहस्युं आइ होसी जीसीजी ।
दिलीसर हो वाची चीठी वात, सीख करां जावा घरे जी ॥१॥
जोती होसी वाट, विरह व्यथा पीडी थकी जी ।दि०।
जाय टालुं उचाट, तुम सदेश सूधा करी जी ॥२॥
इण परि साभली वोल, पदमणि प्रेमइ वाधियो जी ।
आलिम मन झकझोल, कीधो वादल वाय करै जी ॥३॥
मूँकै मुख नीसास, चीठी वाचै चूंपस्युं[1] जी ।
आलिम मन मृगपाश, पदमणि कागद पाठइयो जी ॥४॥
नयणा रे नीर प्रवाह, विरह अगनि व्यापी घणी जी ।वा०।
ए अचिरज मन माहि, भभकइ अधिकी भीजता जी ॥वा०॥५॥
हृदय समुद्र अथाह, माही विरहानल दहइ जी ।वा०।
नयन वीजलि रइ नाह, वूंठइ न्याय न नीसमइ जी ॥वा०॥६॥
घल घट हलीयो रे जाय, प्रेम सुणी पदमणि तणउ जी ।वा०।
मुख सुं कागल लाय, वार वार चुम्बन करइ जी ॥वा०॥७॥
खूब लिख्या इण माहि, संदेशा साचा सहु जी ।
दिलीसर हो उठे कराहि, काम तणै बाणै हण्यो जी ॥८॥

---

१ प्रीत सूँ ।

अहि सम आलिम साहि, साहि न सकतो को सही जी ।
पदमणि मंत्र चलाइ, वादल गारूड़ वसि कीयोजी ॥९॥
पाहुणउ तूँ हम आज, कहुँ ते महिमानी करा जी ।वा०।
सगली तुम्ह नइं लाज, वादल राज हमा तणी जी ॥वा०॥१०॥
सुभटां सहु समझाय, साहि कहै वादल सुणो जी ।
सगली[1] तुम नें लाज, थापैयो एहिज मतो जी ॥११॥
करतां तुम उपाय, जो किम ही करि पदमणी जी ।
हाथ चढै हम आय, तो देखे कैसी करुं जी ॥१२॥
इम कहि हय गय सार, लाख सोनइया रोकड़ा जी ।
वारु वले[2] सिरपाव, वकस कीया वादल भणी जी ॥१३॥
रुको द्यु तुम हाथ, प्रीत वचन माहि लिखुं जी ।
जाइ पड़ें पर हाथ, आलिम इम[3] वचने नहीं जी ॥१४॥
तुम विरह की वात, वचने करि कहिस्यु घणी जी ।
चिठी आवै न घात, कोई जाणै भाजै मतो जी ॥१५॥
महिर करी हिव मोहि, वीदा करो वेघो घणो जी ।
आलिम साथे होय, पोलि लगे पहुँचावीयो[4] जी ॥१६॥
धन लेइ आयो देखि, हरख्यो माता नो हीयो जी ।
वंछित फल विशेप, "लालचंद" धरमे सहीजी ॥१७॥

दूहा

खुशी हुई नारी खरी, धन दिवस निज जाणि ।
गोरोजी[5] मन हरखीयो, करसी काम प्रमाण ॥१॥

---

१ दूध न डांग दिखाय, २ वस्त्र अपार ३ इलम वच नहीं जी
४ पहुँतो कीयो जी, ५ गोरोपिण मन गरजीयो ।

पदमणी पिण मन गहगही, ए मेलवसी भरतार।
सुभट सहू मन संकीया, ऐ ऐ वुद्धि भंडार ॥२॥
सगत छिपाई नवि छिपइ, सहजइं प्रगटइ तेह।
गांठड़ि इं जोइ वाधिइ, तउही अगनि दहेहि ॥३॥
जइ घट विधना गुण दीपइ, निंदइ मनि मतिमन्द।
जउ कुंडे करि ढाकीयइ, तउ छिप्यो रहत कत चंद ॥४॥
एण समै आया तिहां, जिहा वैठा राय राण।
मांड्यो एहवौ मंत्रणो, वादल वुद्धि प्रमाण ॥५॥

ढाल (१७)—साधजी भलें पधार्या आज ए-देशी

सोवन कलश सुहामणाजी, करी जरी रमझोल।
सहस दोय सावत करो जी, चित्र रचित चकडोल ॥१॥
कुमरजी मानो ए मुझ वात, जिम कारज आवइ धात।कु०।आ०
तिण माहि दोय दोय भला जी, जे सलह[1] पहरी जुवान।
शस्त्र घणै करि सावता जी, वैसाणो वलवान ॥२॥कु०॥
पदमणि री विच पालखी जी, सखर करें सिणगार।
ढाको पदमिणी वस्त्र स्युं जी, भमर करइ गु जार ॥३॥कु०॥
गोरो जी वैसाणयो जी, पदमणि जी रे ठाम।
पालखीया सखीयांतणी जी, सुभट करो विश्राम ॥४॥कु०॥
लारो लार लगावयो जी, छेटि म राखो काय।
केलवणी करयो इसी जी, जिम वाहिर न दीखाय[2] ॥५॥कु०॥

१ जोसण २ लखाय।

गढ थी माड सेना लगें जी, कर्यो हारा डोर।
वार घणी विलंवयो जी, जतन करेयो जोर ॥६॥कु०॥
पातिसाह पासें जाईइं जी, हुं करस्युं जे वात।
रावल जी छोडायस्यां जी, पाछै करेस्या घात ॥७॥कु०॥
भलो भलो सुभटे कह्यो जी, थाप्यो एहज थाप।
इम आलोच आलोचता जी, प्रात हुओ गत पाप ॥८॥कु०॥
सुभट सहु समझाय नें जी, चढीयो वादल वीर।
तिम हिज पहुंतो लसकरे जी, धरतो तन मन धीर ॥९॥कु०॥
करी तसलीम ऊभो रह्यो जी, हरख्यो आलिम साहि।
पूछे वात कहो किसी जी, काम कीयो के नाहि ॥१०॥कु०॥
वहुत निवाज तुझ[1] कुं करुं जी, वादल वोल्यो साच।
सिरै चढें कारिज सहू जी, साची[2] वादल वाच ॥११॥कु०॥
सुभटा नें समझाय ने जी, नाकैं आई नीठ।
पदमणी नी आणी अछै जी, पालखीया गढ पीठ ॥१२॥कु०॥
सुभट सहु मिलि विनती जी, कीधी छै सुणि सामि।
जोख पदमणी री करो जी, तो राखो हम माम ॥१३॥कु०॥
पेस करा जो पदमणी जी, तुम[3] उपजै वीसास।
विण वीसास किसी परैं जी, ह्वै सहु ने रंग रास ॥१४॥कु०॥
कहि आलिम कैसी परैं जी, तुम वीसासउ मन।
'लालचंद' कहै साभलो जी, वादल कहेज वचन ॥१५॥कु०॥

---

१ वड़उ २ अविचल ३ जो।

दूहा

मन माहि सके सुभट, पदमणि दीधी राय ।
जो छूटे नहिं तो रखे, दोन्यु स्वारथ जाय ॥१॥
तिण हेते लसकर तुमे, विदा करावो साहि ।
सहस पंच[1] राखो नखें[2] जो डर आणो मन माहि ।
इम सुनि कहइ उच्छक थको, काम गहेलो साह ।
कहो कुण थें हम डरइं, हम सूं जगत डराय ॥३॥
चतुर किहा तू चातर्यो, वर्के जु अइसी वात ।
हम सुं डरै जो सुर असुर, मानव केही मात ॥४॥
कूच तणो कीधो तुरत, आलिम साहि हुकम ।
लशकर के लोध्या[3] घणो, पाम्यो सुख परम ॥५॥
सहस च्यार साऊ सुभट, रहो हमारे पास ।
अवर कटक सब ऊपडो, ज्युं हिन्दु हुवै वीसास ॥६॥
सहस च्यार पासे रह्या, अउर चल्या ततकाल ।
कहै साहि कीधो कीयो, अब बादल कओल सुपाल ॥७॥
ढाल (१५) वलध भला छे सोरठा रे-एदेशी
लाख सोनइया रोकडारे लाल, सखर देई सिर पावरे सरागी ।
वादल ने आलिम कहे रे वेगउ पद्मिणी ल्याव रे स० १
वुद्धि भली वादल तणी रे लाल, देखी खेलइ दाव रे स० ।
ले लखमी घर आवियो रे लाल, माता हरख अपार रे सरागी ।
वले संकेत वणाइयो रे लाल, सुभटा ने समझाय रे ॥२॥वु०॥

१ चार २ सुभट ३ लोके सवइ ।

ले आवयो पालखी रे लाल, लारो लार लगार रे सरागी ।
खत्रीवट राखेजो खरी रे लाल, कमियन करजो काय रे ॥३॥वु०॥
इम कहि आघो चल्यो रे लाल, ले लारें सुखपालरे सरागी ।
आलिम देख्यो आवतो रे लाल, बूलायो दरहाल रे स०॥४॥बु०॥
वुद्धिवंत तो अधिको हुंतो रे लाल, राघव चेतन व्यास रे सरागी
सामीद्रोह पणाथकी रे लाल, छल न लखाणो तास रे ॥५॥वु०॥
कहे वादल आलिस भणी रे लाल, पदमणी वीनती एह रे सरागी।
अव हुं आई तुम घरे रे लाल, निवहड करेज्यो मेह रे ॥६॥वु०॥
साची माया मन सुद्ध सु रे, मान महत सोभाग रे स०
मउज एहिज मागु छछु रे लाल राखेज्यो मन राग रे स० ॥७॥वु॥
घरे महल तुम्ह कइ घणा रे लाल, खेल करउ मनखास रे स०
पिण पटराणी मुझ भणी रे लाल, करजो एहअरदास रे स०।८।वु०
आलिम कहे तुम ऊपरे रे लाल, नाखु तन मन उवारि रे सरागी
जीव थकी पिण वालही रे लाल, भावे तु मारि उगारि रे॥९॥वु॥
नारि एक करइ नहीं रे लाल, तुझ नख एक समान रे स०
तुम सेवक हरमा सवइ रे लाल, मइ वंदा सुलतान रे स० ।१०।
तुम कारण[1] हठ मै कीयो रे लाल, लोपी वचन ग्रह्यो राय रे सरागी
राणी ले आवो वादलो रे लाल, ढील न कीज्यो काय रे ॥११॥
एम कही पहरावियउ रे लाल, ले आयो वकसीस रे स०
प्रमुदित मन परिजन हुओरे, साहस वसि जगदीश रे ।स०॥१२॥

---

१ काजे ।

धोवत[1] पग थे आवियो रे लाल, इम सुभटां समझाय[2] रे सरागी
आयो वले आलिम कनै रे लाल, वारु वात वणाय रे ॥१३॥वु॥
परगट हुई पालखी रे लाल, सोवन[3] कलस सोहात रे सरागी।
वार वार विचमे फिरै रे लाल, वादल पदमणी वात रे ॥१४॥वु॥
होठ वुद्धि जेहने हुवइ रे लाल, दोहरी केही वात रे सरागी।
लालचंद कहि वुद्धि थकी रे लाल, वादल खेलइ घात रे ॥१५॥

दूहा

फिर फिर पदमणिरै मिसे, करतो वादल वात।
रह्यो पहोर दिन पाछलो, तेहवै पूगी[4] घात ॥१॥
लसकर पिण अलघो गयो[5], जूझण वेला जाणि।
वड़े वेर हम कुंभई, वादल[6] कहें ए वाणि ॥२॥
एक वार रावल ईहा, मुंकी हमारे पासि।
दोय च्यार वाता करी, आवूं तुझ आवासि ॥३॥
हाथें करि परणी हुंती, लोक तणें व्यवहार।
सीख करी पुंसली भली, आवण रो आचार ॥४॥
पदमणी बोल सुणी ईसा, सुणि वादल कहै राय[7]।
भली वात पदमिणी कही, हम खुशी हुआ मन माय ॥५॥

१ थोभत २ सीखाय ३ देखि आलम दुख जात रे ४ पुहती
५ रहयो ६ सुनि वीननि सुलतान ७ साहि।

ढाल— (१६) सदा रे सुरंगा थे फिरो आज विरगा काय ए देशी

साची कही ए पदमणी, जेहमे एहवो सुविचार रे लाल।
आलिम वले वले इम कहै, धन भगतिवती भरतार रे लाल॥
वुद्धि करी रे वादलैं, भलो सामी ध्रम प्रतिपाल रे लाल॥वु०॥१

तुरकें तुरत हुकम कीयो, जावो वादल आज रे लाल।
रावलजी छोडाय ने, हम मेलो पदमणी राज रे लाल॥२॥वु०॥
हुकम लेई नें आवीयो, जिहाछै रतनसेन महराण रे लाल।
करी तसलीम ऊभो रह्यो[1], राय कोप चढ्यो असमान रे लाल ३

फिट रे वैरी वादला काई, सामीद्रोही कीध रे लाल।
खत्रीधर्म खोयो तुमे, मो साटै पदमणी दीध रे लाल॥४॥वु०॥
निरमल कुल मइलो कीयो, मूडी खरीय लगाई खोड़ि रे लाल।
ते निसत्त हुया डर मरणरइ, मुम्ह लाजगमाई छोड़ि रे लाल॥५॥
वलतो वादल वीनवैं, ए अवर अछै आलोच रे लाल।
भलो होसी तुम भागस्यु, स्यु आणो मन मे सोच रे लाल॥६॥
भूप चाल्यो मन समझि नइ, तव आलिम भाखें एम रे लाल।
राय आणो पदमणि मेलि नें, जिम सीख समपुं हेव रे लाल॥७॥
पदमणी दिशि राय चालीयो, वैठो पालखीया माहि रे लाल।
तव वात सहु साची लखी, वादल री वुद्धि सराहि रे लाल॥८॥
वेला नहीं वातां तणी राय हुउ हुसियार रे लाल।
पालखीया री सेन मे, होय पहुंतो गढ रै पार रे लाल॥६॥वु०॥

---

१ जिस्यै।

गढ मे पहुंचि वजाडयो, जागी ढोल निसाण रे लाल।
थे[1] पहुंता म्हे जाणस्या, साचो ए सहिनाण रे लाल ॥१०॥वु०॥

वात सुणि हरखित थयो, तुरत गयो गढ माहि रे लाल।
कुशले छूटा कष्ट थी, जाणे सूरिज मूक्यो राह रे लाल ॥११॥

आणंद मन माहि ऊपनो, मन हरषित पदमणी नारि रे लाल।
गढ मे रंग वधामणा, धवल मंगल जय जय कार रे लाल ॥१२॥

पदमणी शील प्रभाव थी, वले वादल वुद्धि प्रमाण रे लाल।
'लालचंद' कहै जस घणो, कुशले छूटा श्री राण रे लाल ॥१३॥

दूहा

सहनाणी पूरण भणी, हरषित तणो सहिनाण।
नोवति[2] ढोल वजाड़िया, घणा घुरइ नीसाण ॥१॥

सुणि वाजा गाज्या सुभट, उठ्या योध अनम्म।
नवहथा जित भारथा, माणस रूपी जम्म ॥२॥

राघव मुख कालो हुओ, नवि लिखीयो परपच।
कूड़ घणो कीधो हुंतो, सीधो काम न रंच ॥३॥

सामी काम हणमंत[3] जाणयो, गोरो गुणह गंभीर।
अरिदल देखी उलस्यो, सूरातनह सरीर ॥४॥

सुभट धस्या हुइ सामठा, मुखि गोरउ रिम राह।
अंग अंगरखी सजी, वगतर सबल सन्नाह ॥५॥

---

१ तब २ जागी ३ हनुमानसो।

ढाल—(२०) नाथ गई मोरो नाथ गई ए देशी।

दिल्ली का नाथ, हिव तु देख हमारा हाथ मिया ऊभो० ।
ऊभो रहैं रे ऊभो रहै, ऊभो रहैं
ऊभो रहे मत छोड़ पाउ, जो पदमणी परणेवा चाह ॥१॥
मीया जी ऊभा रहो ।
अस ऊभा तुम हुती खंति, पदमणि परणेवा वहु भंति ॥२॥मी०॥
मैं आणी छै जे तुम काज, ते हिवै तुझ देखाउं आज । मी० ।
राणी जाया च्यार हजार, सूर सबल मोटा जूझार ॥३॥मी०॥
दोड़या ले हाथे करवाल, धूम मचायो माड्यो ढक चाल ॥४॥
दीठा ते दिली रे नाथ, सगलो वूलायो निज साथ ॥मी०॥५॥
रे रे वादल कीधो कूड, सगलो लसकर[1] मेल्यो झूड॥मी०॥५॥
रिण रसीयो आलिम रंढाल, हलकारया जोधा जिम काल ।
करी किलकी जिम दोड्या देत, कायर प्राण
तजे[2] निकसी जैत ॥मी०॥६॥
कठत करें मीलिया दल होइ, जाणे जलहर[3] घन अति धोइ ।
आई जोगणी जाणे आडंग, जुड़सी आलिम वादल जंग ॥७॥
भुजा[4] वले आलिम सु एम, वोले वादल गोरो जेम[5] ॥मी० ।
दिली सु चढि आयो साहि, हिवैं भिड़तो भागै मति जाय ॥८॥
मुंडीयो तो हिव जासी माम, माटी छै तो करि संग्राम ।मी०।
कहै आलिम क्या करै खुदाय, तैं तो हम सु खेल्यो डाय ॥६॥

१ कारिज २ निकास्यइ लेत, ३ जलद कालाहणि होइ ४ मूकि
५ हेव ।

माहो माहि माड्यो जोध, ऊछलीयो सूरातम क्रोध । मी० ।
छूटण लागा कुहकबाण, हथनालां करती घमसाण ।। मी०।।१०।।
सर छूटइ करता सणणाट, वकतर फोड़ि करै वे फाट ।।मी० ।
ध्रुव वाजें वरछी धीव, भाजै कायर लेई जीव ।। मी०।।११।।
ऊडी रज आकाशे जाय, रवि जिण थी मालिम न थाय ।।मी०।।
घोर अंधारे जाणे घोर, गाजे वाजै नाचै मोर । मी० ।।१२।।
धड़ धड़ वलय धारू जल धार, चमकै वीजल जिम जलधार ।
तूटें सन्नाहे तलवार, ऊडइ तिणगा अगन सुझाल ।।मी०१३।।
खल हल खलक्या लोही खाल, पावस रित जाणे परनाल ।मी०।।
रुहिर माहि पंपोटा[1] थाय, दोड़ी[2] जोगणी पात्र भराय[3] ।।१४।।
करवाला धड़ फूटै घाव, छंछउ छलि कीधो भिड़काव ।।मी० ।
रुहिरज[4] प्रगटउ परिकास, नाच्यो नारद कीधो[5] हास ।।१५।।
गुडीया जाणे[6] जेम पहाड़, सूर भिडता थाए आड ।।मी० ।
मस्तक विण धड जूझइ अपार, करि करवाल करंता मार ।।१६।।
खीजे वाह्यो सुरइ खग्ग, आधउ तूटि रह्यउ सिरि नग्ग । मी० ।
फावइ सिर ऊपरि खुरसाण, सूर लहयो
जाणइ स्वर्ग विमाण ।।मी०।।१७।।
झड ओझड वाहइ रिणघोर, जूझइ राणी जाया जोर । मी० ।
'लालचंद कहै समझें सूर, दोन्यू दल वीरा रस पूर ।।मी०।।१८।।

---

१ पखोटा २ जाणे उधा ३ तिराय ४ सधिर ५ हासउ हास
६ गयवर ।

दूहा

ऊभी जय जय ऊचरैं, ले वरमाला हाथ।
अपछर आरतीया करै, घालै सूरा वाथ ॥१॥

डिम डिम डमरू वाजता, साथे भूत वहु प्रेत।
रुंड (तणी) माला संकर रचै, सिलो करै रिणखेत ॥२॥

जासक पीवें योगणी, भरि भरि पात्र रगत।
डडकारा डाकणि करै, जिण दीठइ डरै जगत ॥३॥

ढाल (२१) कडखा री—गच्छपति गायइ हो जुगप्रधान जिनचद

जूझै महाभिड़ मुगल हिन्दू सवल सेन सनूर।
तिण माहि माझि आइ जुडीया नाखि फोजा दूरि ॥१॥
गोरिल्ल गाजियो रे अरि गजा भाजन सिंह।
वादल वाचिड हो भारत (में) भीम अवीह ॥२॥गो०॥
आलिमपति अलावदीनह मुगल्ल मीर मसत्त।
रावत गोरिल्ल वीर वादल जानि मैंगल मत्त ॥३॥गो०॥
धूजियो धड़ हड़ मेरु पर्वत चढी धरणी चक्र।
जम वरुण जालिम डर्या दिगपति संकीया मन सक्र ॥४॥गो०॥
है कंप हूआ नाग वासिक ईश ब्रह्मा रूप।
मुख करै ऊंचो वेलि रै मिस देखि डरइ अकूप ॥६॥गो०॥
वाहइ जलोह छछोह हाथे करइं कंध कड़क
घण घणा हार्थे हण्या घण घण पड़े योध पड़क[1] ॥७॥गो०॥

---

१ दड़क।

विहूं वाथ घालै वाव घालै डला होवैं ढोय।
सनाह तूटै रगत फूटै पुरज पूरजा होय ॥८॥ गो०॥

चुचूइं धारा वहै सारा माचीयो झड़ झूझ।
छिन छिन्न धाए लोह लागा रह्या माहि अलूझ ॥९॥गो०॥

वड वड़ा सामंत योध जालिम भिड़ै[1] वादो वाद।
अति अधिक सूरातन वसै आवै न खेड़ा आदि ॥१०॥गो०॥

गुड गुडंत गुहीर नीसाण गाजै देखि लाजै मेह।
घाव पड़ै तिण घाव नाचै धाम धूमी देह ॥११॥गो०॥

रिण चाचरैं रजपूत कूदैं करै हाको हाक
कूट कुटे कीया कण कण मुगल आया[2] नाक ॥१२॥गो०॥

आलिम अरेरे अकलहीणा अंध साचा ढोर।
इम कही खड़ खड खड़ग वाहे तडातड़ि रिण घोर ॥१३॥गो०॥

हुसीयार हुओ हथीयार वाहो रही दिल्ली दूरि।
किहां अकलि[3] हीणा एह वभणा अकलि दीधी कूर ॥१४॥गो०॥

गृह मात तात अर भ्रात वंधव नेह नाण्यो कोइ।
चितारीया नहिं माल मिलकत सुक्ख नारी कोय ॥१५॥गो०॥
होइ लोह गोला मुगल दोला जोर जुड़ीया जंग।
हैवरा गलि गज गाह वधै रह्या[4] विडद अभंग ॥१६॥गो०॥
वाजीया सिंधु राग वारू भलो मारू भेद।
जिहा भाट चारण ध्रुव वोलइ विड़द मनह उमेद ॥१७॥गो०॥

---

१ भिडइ, २ आण्या, ३ वुद्धि ४ वह्या।

साभलें चीला वाप दादा सूरमा न समाय ।
जूझता सुभटा खैंच निज रथ अर्क देखैं आय ॥१८॥गो०॥
तिण[1] अओसर गोरिल वीर धसीयो जिहा आलिम साहि ।
वाही वारू घाव[2] घालै खड़ग सेवलो ताहि ॥१६॥गो०॥
आगोज भूंडो लेय पाघड़ साहि मुहूडै मूक[3] ।
गोरिल वोलै फिट्ट तुझ नें जाति थारी[4] मे थूक ॥२०॥गो०॥
भाजता नइ घाव घाल्यउ जाय क्षत्री धर्म
वीनवइ वादल छोड़ि काका जाण ट्यो वेशर्म ॥२१॥
उपरि ऊभा किलो देखे रावल भाण रतन
सहु मिली भाखइ धन वादल गोरिल धन ॥२२॥गो०॥
धन सामीधर्मी वीर वादल कहै पदमणि एम ।
जिण विना माहरो पुरुष[5] इण भव छूटतो कहो केम ॥२३॥गो०॥
तू जीवज्ये कोडाकोडि वरसा माहरी आसीस ।
दिन दिन ताहरो चढत दावो करो श्री जगदीस ॥२४॥गो०॥
खल हण्यो खत्रीवट लीक राखी, जगत साखी नाम ।
गोरिल रावत रिणे रहीयो, कीयो साचो[6] नाम ॥२५॥गो०॥
लूटीयो ल्हसकर आप वसि कर छोडियो आलिम ।
जीत्यो पवाडो धर्म आडो आवीयो कृत कर्म ॥२६॥गो०॥
केई न्हासी छूटा मरी खूटा कीया अरीअण जेर ।
जीवतो मूक्यो साहि आलिम वालि सवल घेर ॥२७॥गो०॥

---

१ इण २ वाय ३ मुक्क ४ माहि चक्क ५ दुक्ख ६ साको ताम ।

कहै साहि सुण सामंत बादल कीयो तैं उपगार
जीवीदान दीधो सुजस लीधो झालि गढ रो भार ॥२८॥गो०॥
बादल आगै हारि खाधी सीख मागइ साहि।
एकलो आयो आप असुरां दला बूजत साहि ॥२९॥गो०॥
वीजली[1] मुहें खल खेत्र वेड़े जैत्र पामी जंग।
पूरो पवाडो किलें गोरिल सूर बादल संग ॥३०॥गो०॥
अन्याय मारग जैति न हुवें, जोइ सवलो होई।
एकलें डीलै गयो आलम, एह परतख जोई ॥३१॥गो०॥
नीति मारग जइति पामइ, रहइ राज अखंड।
कह लालचन्द जगत्ति ऊपर, नाम तेज प्रचंड ॥३२॥गो०॥

दूहा

दोय दिना के अंतरैं, आलिम एक खवास।
निसा साम वेला जई[2] पहूंता ल्हसकर पास ॥१॥

ढाल— (२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोडीचा। राग-मारू

ल्हसकर माहि मु कीयो राजेसर
करिवा खवरि खवास रे राजेसर
ऊमराव आया वही दीह्रीसर
मुगल पाठण उल्लास रे राजेसर ॥१॥ह०॥
करी तसलीम ऊभा रह्या राजेसर वेकर जोड़ी ताम रे दि०।
वूझै आलिम साहि सु रा० कटक गयो किण काम रे दी० ॥२॥

१ विजड़ी २ थई।

भूखा त्रिसीया एकला रा० दीसे ए कूण हवाल रे दी० ।
किहा पदमणी परणी तिका रे रा० ए तो दीसै छै ख्याल रे दी०।३।
कहै पतिसाह कीधो घणो रा० बादल हम सु कूड रे दी० ।
सइतानी सवली करी रा० ल्हसकर मेल्यो धूलि रे दी० ॥४॥ल्ह०॥
पदमणी रे मिसि पालखी रा० कीधी पाच[1] हजार रे दी०
तिण मे दोय दोय नीकल्या रा० योध करंता मार रे दी० ॥५॥
कहर जूझ हम सु कीयो रा० कटक कीयो कचघाण[2] रे दी०
हम है या तौ ऊवरे रा० मया करी रहमान रे दी० ॥६॥ल्ह०॥
हम भी भूले मोह[3] तै रा० कछु कीनो पदमणी टौन रे दी०
तोही हम आगइ टिके रे रा० नहितर हिन्दू कौन रे दी० ॥७॥
इम कही असवारी करी रा० नाक मुंकीनइ साहि रे दी०
ज्यू आयो तिणही परइं रा० पहुंतो दीली माहि रे दी० ॥८॥
आलिम महल पधारिया रा० आई हरम अनेक रे दी०
विनो करी पाए पड़ी रा० विनती करै सुविवेक रे दी० ॥९॥ल्ह॥
देखावो वे पदमणी रा० हम कु देखण हुस रे दी० ।
कैसी चतुराई अछै रा० रूप जोवा[4] कैसी रूंस रे दी० ॥१०॥ल्ह॥
पदमणी का मुंह काला किया रा० हम खैर करी है खुदाय रे दी०
करीई खमा वीवी कहै रा० हम लागो तुम वलाय रे दी० ॥११॥

दूहा

कहि[5] ममा वैठो तुमा, धरो मन मइं ग्यान ।
धरा पालो अविहड थे, हीइं खुदाय धरि ध्यान ॥१॥

---

१ दोइ २ कतलान ३ गरव मइ ४ जु ५ कहि मामा बेटा तुमां राखउ बहुत गुमान । नारि काज कलमथ करउ घरउ न मन मइ ग्यान ।

इन्द्र चद्र नागेन्द्र सब, जस सेवें सुर नर गाय।
तिण रावण राज गमाडीयो, नारी तणें पसाय ॥२॥
वेटा काहे कुं फिरो, करते आप कलेस।
वैठा जौख कहो इहा, दिल्ली गढ निज देश ॥३॥
हिव वादल की वारता, सुणयो देई कान।
पातिसाह न्हाठा[1] पछें, रिण सोध्यो वादल जाण ॥४॥
जग मे जस पसस्यो घणो, खाट्यो वड़ो विरुद।
गढनी पोलि उघाडीया, लोक कहैं जसवद[2] ॥५॥

ढाल (३३)

करडो तिहा कोटवाल एदेशी राग—खभाइती जाति सोलाकी या मारू

रावल रतन सुजाण, सनमुख आए सामेलो करे।
सिणगास्था वाजार, हय गय रथ पालखीया वहु परेजी ॥१॥
मिलया श्री महाराज, वादल सेती नेह घणैं करी जी।
ले आया गढ मांहि, वैसाणी गज छत्र सिरइ धरी जी ॥२॥
देई देश भंडार, वादल नइ कीधो अधराजीयो जी।
तैं राखी गढनी लाज, आज पछैं ए जीव तुमे दीयो जी ॥३॥
तुं जीवे कोड़ि वरीस, धनमाता जिण तुं गरभें धस्थो जी।
द्यै पदमणी आसीस, तैं उपगार अम[3] थी वहु कस्थो जी ॥४॥
मस्तक तिलक वणाय, भरि भरि थाल वधावै मोतिया जी।
निज वंधव करि थाप, पहुंचावै निज घरि उछव किया जी ॥५॥

१ चाल्या २ सद्द ३ वड़ो अमने।

आवंतां निज गेह, चउहटइ च्यारों दिश नारी मिली जी ।
वोलइ कीरति वाल, मोतिया वधावै गावइ मन रली जी ॥६॥
इम आयो निज गेह, सयण सवंधी परजन सहु मिली जी ।
प्रणमै जननी पाय, माताजी आसीस दीइं भली जी ॥७॥
सझि करि सोल श्रृंगार, अधर विंव[1] निज नारिया जी ।
आवी आणंद पूर, धवल मंगल करती सुखकारीया जी ॥८॥
हिवें गोरिल की नार, पूछै तुम काकौ रिण किम रह्यो जी ।
कहो किम वाह्या हाथ, किम अरियण मार्‍या किम जस लह्यो जी
कहै वादल सुणो वात, केहो वखाण करा काका तणो जी ।
ढाह्या गैंवर घाट, मुंगला सुभटां संहार कीयो घणो जी ॥१०॥
राख्यो आलिम एक, तुरका सकल सेन मारी करी जी ।
तिल तिल हूओ तन, हुओ प्राहुणो अमरापुर वरी[2] जी ॥११॥
राखी गढ री लाज, उजवाल्यो कुल गोरेजी[3] आपणो जी ।
इम सुणी गोरिल नारि, रोम रोम जाग्यो तन सूरापणो जी ।१२
विकसित वदन सनेह, भाखै सुणि वेटा रिण वादला जी ।
वहैलो वारि म लाय, दोहरा वैठा ठाकुर एकला जी ॥१३॥
विच छेटी वहु थाय, रीस करेसी अमने श्री राय जी ।
काकी ठाम लगाय, ढील कीया हिवमइ न खमाय जी ॥१४॥
सुणि कहै वादल वात, धन धन माताजी ताहरो हीयो जी ।
सतवंती तूं साच, धन तें आपो आप सूधारीयो जी ॥१५॥

१ आमोफ्ल ले २ खरी ३ गोरिल ।

खरचै धन नी कोड़ि, तुरंग[1] चढि सिणगार सहू सभी जी।
अगनी कीयो प्रवेश, उचरति मुख श्री राम राम जी ॥१६॥
पहूंती प्रीउ नै पासि, अरध आसण दीधो आणद थयो जी।
जग पसर्यो जस वास, 'लालचंद' कहै दुख दूरइं गयो जी ॥१७

दूहा

सूर कहावै सुभट सहू, आप आपणै मन।
दाव पड्या दुख उधरै, ते कहीये धन धन ॥ १ ॥
सामीधर्म वादल समो, हुओ न होसी कोय।
युद्ध जीत्यो दिल्ली धणी, कुल उजवाल्या दोय ॥ २ ॥
रावलजी छोडाईया, नारी[2] पद्मणी राख।
विरुद वड़ो खाट्यो वसु, सुभटा राखी साखि ॥ ३ ॥
चैंन राज चितोड़ को, कीधो वादल वीर।
नव खंडे जस विस्तर्यो, सामीधर्म रिणधीर ॥ ४ ॥
निरभैं पालै राज निज, रतनसेन महाराव।
सेवक वादल सानिधें, पद्मणि शील पसाव ॥ ५ ॥

ढाल (२४)

राग—धन्यासीइ, चाल—लोक सरूप विचारउ आतम हितभणी

सती शिरोमणि साची थई[3] पद्मणि लहीयइं रे
सुख लहीइं सिरदार
पाल्यो कष्ट पड्या जिण शील सुहामणो रे
तन मन वचन उदार ॥ १ ॥

---

१ तुरीय २ राणी ३ सलहीइं ।

श्री रावलजी छूटा मोटा कष्ट थीरे, सुख हुवो गढ़ें जेह।
बड़ो पवाड़ो खाट्यो गोरे वादलें रे, शील प्रभावें तेह ॥ २ ॥
शील प्रभावैं नासैं अरि करि कंसरी रे, विषधर जलण जलत।
रोग सोग ग्रह चोर चरड़ अलगा टलें रे, पातिग दूर टलंत[1] ॥३॥
श्रीसुधर्मासामि पाट परंपरा रे, सुविहित गच्छ सिणगार।
श्री खरतर गच्छ श्रीजिनराजसूरीसरू रे, आगम अरथ भंडार ॥४॥
तस पाटि उदयाचल दिनकरुरे, श्री श्रीजिनरंग वखाण।
रीझवियौ जिण साहजहाँ दिल्लीसरू रे, करिदीधउ फुरमाण ॥५॥
तास हुकम संवत सतर छीडोतरे, श्री उदयपुर जाण।
हिन्दूपति श्रीजगतसिंह राणो जीहा रे, राज करैं जग भाण ॥६॥
तास तणी माता श्री जवूवती रे, निरमल गंगा नीर।
पुण्यवत पट दरसण सेव करइ सदारे, धरम मूरति मतिधीर ॥७॥
तेह तणे प्रधान जग में जाणिइं रे, अभिनव अभयकुमार।
केसरी मत्री सुत अरि करि केसरी रे, हसराज हितकार ॥ ८ ॥
जिणवर पूजा हेतइ जाणि पुरंदरू रे, कामदेव अवतार।
श्रेणिकराय तणीपरि गुरुभगता सही रे, सिंह मुकट सणगार ॥९॥
पाट सात पाछइ जिण देस मेवाड़मइंरे, थाप्यो गच्छ थिरथोभ।
कटारिया कुलदीपक जग जस जेहनउ रे,
श्रीखरतर गच्छ शोभ ॥१०॥
तसु वधव डुंगरसी ते पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भाण।
विनयवंत गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, वड़ दाता गुण जाण ॥११॥

---

1 पुलंत।

तसु आग्रह करी संवत[1] सतर सतोतरे रे, चेत्री पूनम शनिवार ।
नवरस सहित सरस[2] संबंध रच्यो रे, निज बुद्धि ने अनुसार ॥१२
श्री जिनमाणिकसूरि प्रथमशिष्य परगड़ा रे विनयसमुद्र वड़ गात ।
तास सीस वड़वखती जगमइं वाचियइ रे,
श्रीहर्षविशाल विख्यात ॥१३॥

तास विनेय चवद विद्या गुण सागरु रे, वाणी सरस विलास ।
जस नामी पाठिक श्रीज्ञानसमुद्रजी रे परगट तेज प्रकाश ॥१४॥
साध शिरोमणि सकल विद्या[3] करि सोभतारे,
वाचक श्री ज्ञानराज ।
तास प्रसादे शील तणा गुण संथुण्या रे,
श्रीलब्धोदय हित काज ॥१५॥
सामिधरम ने शील तणा गुण सामल्या रे, पूरै मननी आस ।
ओछो अधिको जे कह्यो कवि चातुरी रे, मिच्छादुकड़ तास ॥१६॥
नव निधनै वलि अष्ट महा सिद्ध संपदा रे, दूर मिटै दुख दंद ।
लब्धोदय कहै पुत्र कलत्र सुख संपजै[4] रे,
शीयल सफल सुख कद ॥१७॥

गाथा दूहा ढाल आट सै अतिनंद
सीअल प्रभावे संपदा इम जंपइ लब्धानद ॥१॥

---

१ चैत्र सुकल तिथि पचमी मृगशिरनै बुधवार २ नवउ ३ गुणेकरि
४ सपदा ।

इति श्री शील प्रभावे पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा वंधे श्री रतनसेन रावल तास सुभट गोरा बादल रिण जय प्रतापैः तृतीय खण्ड सम्पूर्णम्

सकल पण्डितोत्तम प्रवर प्रधान शिरोवतंस पंडित श्री ५ श्री कल्याणसागर गणि तच्छिष्य पंडित श्री ५ हर्षसागर गणि तत्शिष्य पंडित श्री सकल सभा शृङ्गार शिरोमणि रत्न पंडित श्री १९ श्री हीरसागर गणि · ·· · · · श्री ५ श्री गुणसागर गणि। तच्छिष्य पुण्यसागरेण लिखितेयं ॥ सं० १७६१ वर्षे आशु वदि १० भोमे दड़ीवा मध्ये लिखितं ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री भद्रमस्तु ॥ शुभ भूयात् श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

प्रति नं० ३८१४ (वं० ८२) श्री अभय जैन ग्रन्थालय वीकानेर। पत्र २० अंतिम पत्र १ तरफ खाली। पंक्ति १५ अक्षर ५९-६० प्रति पंक्ति। अतिम पत्र थोडा नष्ट।

(२) इति श्री पद्मिनी चरित्रे ढाल भाषा बंध उपाध्याय श्री ५ ज्ञानसमुद्र गणि गजेन्द्राणा शिष्य मुख्य विद्वद्राज श्री श्री ज्ञानराज वाचकवराणा शिष्य पं० लब्धोदय विरचिते कटारिया गोत्रीय मन्त्रिराज हसराज म० श्री श्री भागचन्द्रानुरोधेन श्री गोरा वादल जयत प्रापणो नामस्तृतीय खण्ड ॥ तत्समाप्तौ समाप्तमिदं श्री पद्मिनी चरित्र तद्वाच्यमान श्राव्यमान चिरं नदतादाचन्द्रार्कं यावत् लिपि कारिता च सुश्रावक पुण्यप्रभावक

॥ संवत् अठारेसै १८२३ वर्षे मिती भाद्रवा बद ८ दिने लिपी कृतं। वाचणवाला कुं धरमलाभ छै। लिखतं मकसुदावाद मध्ये लपि कतं ॥ श्री ॥ श्री ॥ [पत्र ४८ जैनभवन, कलकत्ता

(३) गाथा दूहा सोरठा, सोल अधिक सै आठ।
कवित दूहा गाथा मिल्यां, सुणो सुगुरु मुख पाठ ॥१॥
ढाल सरस गुणचालसुं श्लोक तणी संख्या एकादश शत अधिक छै, पंचासत नइ सात, अनुमाने लालचंद कहइ ॥

इति पद्मिनी चौपाई संपूर्णम्। सकल पंडित शिरोमणि पं० श्री १०५ श्रीराजकुशल गणि शि० ग० ऋषभकुशल लिखितं आमेट नगरे संवत १७५८ वर्षे।

[ओरियण्टल इंस्टीच्यूट बडौदा प्रति न० ७३३ की नकल गुलाबकुमारी लाइब्रेरी कलकत्ता में]



गोरा बादल कवित्त

गज बदन गणपति नमूं, माहा माय वुधि देय।
गुण गूंथूं गोरल का, जस वादल जंपेय ॥ १ ॥
चहुआणा कुलि ऊपना, गोरउ अरु गाजन्न[1]।
चित्रकोटि गढ उदया, राउ रत्नसेन मनि रंग ॥ २ ॥
सउहड सिरोमणि निम्र्मयउ, गाजन मूअ वादल्ल।
वरस वीस त्रणि अग्गलउ, भड सूरतांणा सल्ल ॥ ३ ॥
दल असंख जिणी गंजीया, असपति मोड्या माण।
राखी सरण पद्मावती[2], वंध छोडायउ राण ॥ ४ ॥
काका भत्रीजा विहुं, गोरउ अरू वादल्ल।
पद्मनी काजि भारथ कीउ, हडमत जिम सर मल्ल ॥ ५ ॥
सोहड सुभट वादल करी, असी न करसीं कोय।
सोहड़ा सोह चढावीय, गोरा वादल दोय ॥ ६ ॥
गढ डीली अलावदी, चित्रकोट गहलउत।
पद्मणि कारिज साधीयउ, कहसूं तेह चरित्र ॥ ७ ॥

कवित्त

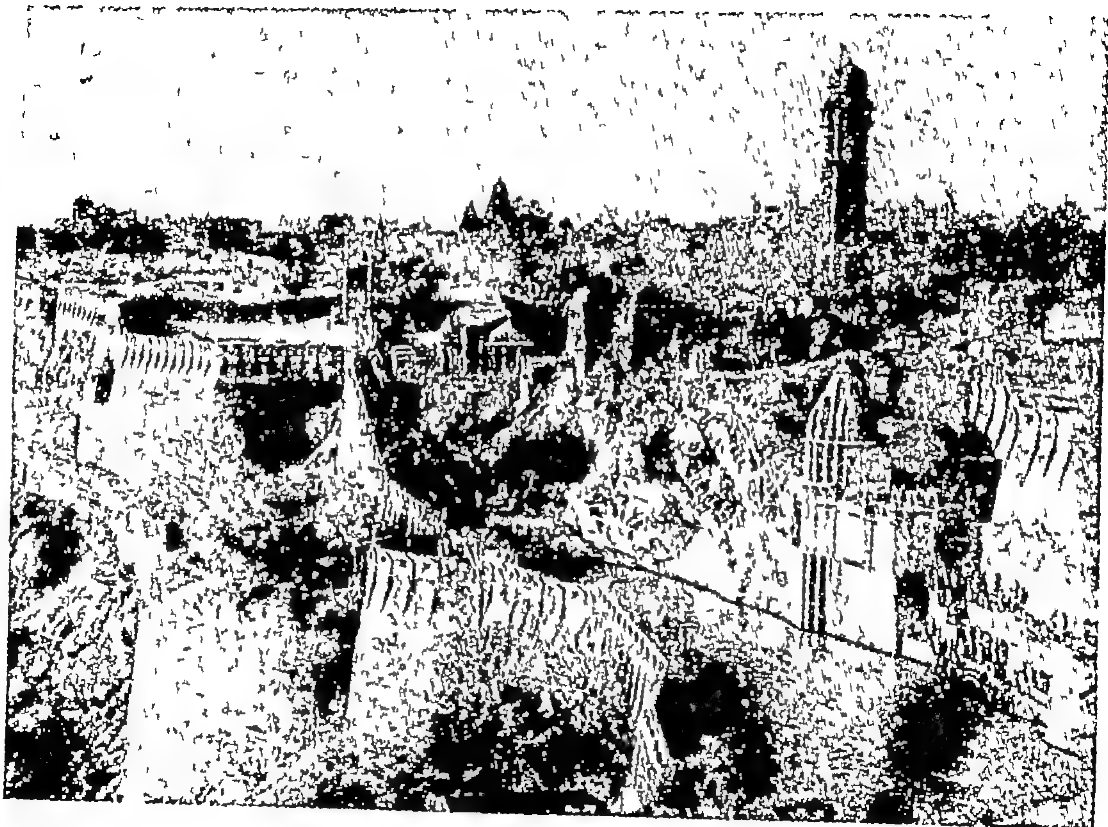
चित्रकोट कैलास, वास वसुधा विख्यातह,
रत्नसेन गहलोत, राय तिंहा राज करंतह।

---

1 वादल। 2 पद्मणि काज भारथ कीयउ।

कहइ न वात कछु अवही, कवही कर द्रव्य मिलिही मुझ,
कहइ न वात जनारदार, मइ सवद सुनीय तुझ।
काल कोस फकीर, तीर सायर फिरि आवहि,
निखुता नाहि निलाट, लख्या नहीं कोरी पावहि।
तव कोप कलंदर कहइ, क्या किताव दुनिया दीया,
संक्यउ स विप्र संसहि पड्यउ, एह योगनि तइं क्या कीया ॥१५॥
तव योगिन मन धरीय, करीय सेवा मइ कच्चीय,
वचन सौध नवि लहूं, वाच नह पालइ सच्चीय।
वचन शुद्धि तउ लहइ, भक्ष जउ मोरउ जाणइ,
वेगि जाउ दरवेस कहुं जउ मंखण आणइ
इहां राति किहा मंखण लहुं, तव वीउ लेउ करि संचर्यउ
अल्लावदीन सुरतांण को, सीस छत्र तुझ सिरि धर्यउ ॥१६॥

तव कोप किलंदर कहइ, क्या तुफाना उठायउ
तू वोलइ सव झूठ, राज मुझ पइं किहा आयउं
एह वात सुणइं सुरताण, करइ टुकटुक तन मेरा
करइ नहिं कछु विलंव, अउर सिरि कट्टइ तेरा।
उच्चरइ विप्र दरवेस सुं, अलख लिख्या सो पइं कहुं,
जउ सीस छत्र तुझ कउं मिलइ, क्या इंनाम हुं भालहूं ॥१७॥
तव खुसी भयउ दरवेस, कर्म करतार करहि जव
तोहि हइ गइ पाइक, करइ तसलीम तोहि सव
तखत तलइ मेरइ तुं ही, तुं हि दिलीवइ जांणू
कहे तुहि सव साच अउरका कह्या न मानु



नयनाभिराम चित्तौड़ दुर्ग

[फोटो—सावजनिक संपक विभाग-राजस्थान]

तुरीय सहइस पंचास, होय[1] सइं महगल मंता,
राजकुली छत्तीस, सोहइ भड सेव करंता।
प्रधान लोक विवहारीया, राजलोक सहुअे सुखी,
च्यार वरण गढ महि वसइ, जती मुनी नहीं कोय दुखी ॥८॥

एक दिवस गहलउत, राय वइठउ भूंजाई,
सतर भख्य भोजन्न, मूंधि हस कर लेइ आइ।
के खारा के मीठ, केइ कहु स्वाद न आवइ,
तव पटरानी कहइ, वेग पद्मनी क्यों न लावइ।
धरि मछर संचलि सांचरयउ, नेव जीत कन्या वरी,
पद्मनी ज आणि परण करि[2], राय रत्नसेन अइसी करी ॥९॥

विप्र एक परदेस थी, फिरत आयउ तिण ठायह,
सभा मझि जव गयउ, नयण पेख्यउ तव रायह।
फल कीवो तिण भेटि, वयण आसीस पयासइ,
विद्यावाद विनोद, वांणि अमृत गुण भासइ।
राघव सभा जव रिजवी, तव राजिन मन भाइयो,
हुउ पसाव कीन्ही मया, आपस पास रहावीउ ॥१०॥

रत्नसेन राघव, रमति कारणि एक ठायह,
जीतो डांण तिहा राव, डांण संगीउ सूभायह।
चल्यो विप्र तव कोप, राय मनि मछर कीउ,
लंड्यो ए अस्थान, देव देसउटउ दीउ।

१ पंच। २ थति।

उचरइ विप्र ऐरिसह वयण, राउ एक प्रतिज्ञा हूँ करू,
पइहराउं लोह तुम्ह पय कमल, तव चित्रकोट बोहड फिरू ॥११॥
चित्रकोट तव छंडि चित्त एह वयण विचार्‌यउ,
करवि होम आउध,[1] सबद[2] अइसउ संभार्‌यउ।
बीस भवन महसाण, मंत्र योगिनी आराधी,
कहो नइ देव कुण काज, आज ए विद्या साधी।
उचरइ विप्र[3] स्वामिनसूणि, एह भेद मुझ अपीइ,
आगम निगम सहुइ लहूँ, तउ वाचा दे थर थपीइ ॥१२॥
तव तूठी योगिनी, हुई प्रसिद्धि[4] प्रसनी,
ब्रह्म रुद्र करि वाच, वाच निश्चल करि दीन्ही।
जिहा हकारइ मोहि,[5] , तोहि साचउ करि जाणइ,
आदि अन्त उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछानइ।
आस्थान आप जोगिन हुइ, विप्र पथ आश्रम कर्‌यउ,
आणद अंग ऊलट घणइ, तव डीली[6] गढ संच र्‌यउ ॥१३॥
वचन कला उतपन, पवन छतीस मिल्या तिहा,
राय राणा मडलीक, खान ऊ वरे[7] खडे तिहाँ।
मन सकेत पूरवइ, जेह कछु मन माहि इछइ[8],
जे धन कारन धाय, आय विप्रन कूं पूछइ।
बात सुनी सूलतान एह, वे वजीर सचा कहउ,
दरवेश वेस अलावदी आय पडहंतउ विप्र पोह ॥१४॥

१ आहुत्त। २ मंत्र। ३ रांघव कहइ। ४ परतक्ष। ५ सोहि।
६ ढिल्ली। ७ ऊमरा। ८ अच्छइ।

अल्लावदीन सुरताण की, सीस छत्र काइम रहइ,
दरवेस वेस कहि विप्र सुणि, तुंहि म्हि मागइ सोभी लहइ॥१८॥
फेरि वेस सुरताण, ताम निज मंदिर आयउ,
ऊग्यउ सूर परभात, तवही बंभण बुलायउ।
सभा मध्य जव गयो, चित योगिणि समरतउ,
छत्र सिघासण सहित, साह नयणे निरखतउ।
संक्यउ सु विप्र असपति सहित, निसचरिज रयणी फिर्यउ।
मगइ सु मंगि असपति कहइ, वाचा मोहि ऊरण करउ॥१९॥

दूहा

तव सुरतांण निवाजीयु, राघव वहुत उछाह,
जे मनि चीतइ सोइ करइ, वसि कीधउ पतिसाह॥२०॥
मल्ल भाट सुरताण पय, आयउ मंगण कज्जि।
मुहुल तलइ जइ द्वा करइ जिहा खडे असपति सज्जि॥२१॥

कवित्त

एक छत्र जिण प्रथीय, धरीय निश्चल धरणि परि,
आण किद्ध नव खंड, अदल किद्धउ दुनि भितरि।
अनिल नलणि विभाड, उदधि कर माल पखालिय,
अंतेवर रही रंभ, रूप रंभा सुर टालीय।
हेतम दान 'कवि' मल्ल भंणि उदधि खंध वे वखत गुनि,
दीठउ न कोई रवि चक्र तलि, अल्लावदीन सुरतान धनि॥२२॥
मम पढि भट्ट कवित, बुद्धि खोजुं देइ पूरउ,
सुख सवाद करि रोस, सिद्धहर मजलगि सूरउ।

किहां सुणी पद्मिनी सेसधर अंती सोहइ,
सुरनर गुण गंध्रव, देखि मुनिवर मन मोहइ।
सुखिनी सवे सुरताण घरि, कोप हूउ वेजन कसइ,
लावत मारि खोजा निसुणि, पतिसाह मुरके हसइ ॥२३॥

दूहा

वंदण प्रतइ अलावदी, कहि सु वयण विचार।
कटारी सहिनाण लइ, राघव वेग हकारि ॥२४॥

कुण्डलीयउ

आलिमसाह अलावदी, पूछइ व्यास प्रभात।
सयल परीक्षा तु करइ, स्त्री की केती जाति ॥२५॥
स्त्री की केती जाति, कहि न रावव सुविचारी,
रूपवंत पतिव्रता, मूध सोहइ सुपियारी।
हस्तनी चित्रणी कर सखिनी, पुहवी वड़ी पद्मावती,
इम भणइ विप्र साचउ वयण. आलमसाह अलावदी ॥२६॥

कवित्त

इम जंपइ सुरताण, सुनि वे राघव इक वातह,
जाति च्यार की नारि, केम जांणीइ सुचित्तह।
गंध रूप सद्भाव, केस गति नयण निरत्ती,
वयण वाणि तसु अग, कहु किशि तखत किसि भंती।
हस्तिनी चित्रणी कइ संखिनी जाति तीन दीसइ घणी,
पातसाह अरदास सुणि, दुनी पियारी पदमिनी ॥२७॥

दूहा

राघव वयण इम उच्चरइ, साभल साह नरेस।
त्रीया लखणे बूझीयइ, कोक तणइ उपदेस ॥२८॥

सलोक

पद्मिनी पद्म गधाच, अगर गधाच चित्रणी।
हस्तिनी मद्य गंधाच, खार गधाच संखिनी ॥२९॥
पद्मिनी पुष्प राचंति, वस्त्र राचति चित्रणी।
हस्तिनी प्रेम राचति, कलह राचति सखिनी ॥३०॥

कवित्त

गहिर महिर अलावदीन, राघव हकारीय,
नयण नारि निरखेवि, देखीइ हरम हमारीय।
हसगमण गजचलणि, साहिजादी अनुरत्ती,
सुरत्ति सुर नर, स्त्रीया पेखि हस्तीनी,
चित्रणी क संखिनी क, किती साह घरि पदमिनी ॥३१॥
साह आलिम एक वयण, विप्र उच्चरइ सुमिट्ठउ,
लोयण ते हेतम कीय, जेणि परि रमणि मुह दिठ्ठउ।
कहइ एम सुरताण, कहु कइसी परि किज्जइ,
काच कुंभ भरि तेल, मुहुल माही रास रचिज्जइ।
इक संग रग ठाढी रहइ, सजे सिणगार सवि कामिनी,
प्रतिबिंब निरखि राघव कहइ, सो कहुं साह घरि पदमिनी ॥३२॥
पातिसाह राघव, आय तिण ठामि वइठा,
काच कुंभ ढालेइ, भरीय जस तेल गरिठा।

सजे सिंणगार सवि कामिनी, भूयण सिरि छज्जइ ठढी,
के स्यामा के गोर, केह गुण गाहा पढी।
निरखंति वयण मुख मज्झि नव, एह बात चित्तह गुणी,
दोइ जाति नारि दीसइ घणी, सु नही साह घरि पदमिनी ॥३३॥
रोस भयु सुरताण, खान अर पान न भावइ,
वेला इत मारि लवार, वेग पदमिणी दिखलावहि।
ले किताव कर धारि, करइ वंदिन वीनत्तीय,
सघलदीप समुद्र, अछइ पदमिण बहु भत्तीय।
हुसीयार होइ अरदास करि, एक अधू पेखइ जिहा,
संभली समुद्र ससइ पड्यउ, कोइ खुदीय खुते तिहा ॥३४॥
असपति कीयउ आरम्भ सु दिन साधीयउ दखिण धर,
पातिसाह कोपीयउ, कुंण छुट्टइ संघल नर।
दल गोरी पतिसाह, जुडइ सग्राम सुहड भड़,
नव लख त्रिगुण तुरंग, चउद सहस मइंगल थड।
सूर्ज खेह लोपनि गयउ, पातालइं वासग डुड्यउ,
चिहु चक्करायसासइ पड्या, पातिसाह किसपरि चड्यउ ॥३५॥
चड्यउ चंचल सुरताण, खेडि दख्यण तटि आयउ,
सेन सहू उत्तरी, तिवही बंभण बोलायउ।
चेतकरी चेतन्न, एम जंपइ खूदालम,
मई कताव तोही दीयउ, भयु सु दुनीयां मालम।
असपति कहइ चेतन सुनि, अब वेगइ संघल संचरउ,
जिसी भांति पदमिनी कर चढइ, सोइज मित्र चित्तह धरउ ॥३६॥

पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर,
करउ मंत्र चेतन्न, कटक लंघीइ रिणायर।
सुणि आलम वीनती, नीर कउ अंत न जाणउ,
संघलदीप पदमिनी, घरहि घर अधिक वखाणउं।
भंजउ सु कोट असपति कहइ, देखि दाउ तिसकुं दिउ,
ग्रहे खग्ग सीस राजा हणउ, पकडि ग्राह पदमिणि लिउ ॥३७॥

हठि चड्यउ सुरताण, खणवि धरणि तलि पिल्लउं,
वेगि ल्यावि पदमिणी, सेन सवि साइर घल्लउं।
मिलि वइठा मंत्रवी, कहा हम पदमिणी पावइ,
वे वंभण तूं कूड, झूठ वातइं इहा ल्यावइ।
राघव कहइ तुम्ह मति डरउ, हुं करउं मत्र मनि भाईयउ,
सुलताण ताम समझाइ करि, वाहुडि ढिल्ली लाईयउ ॥३५॥

सलहिदार हथियार, लेइ आगइ अवधारीय,
सभाले सवि सेल, माहि भेजे चिति धारीय।
वीवी तव पूछीयउ, साह पदमिणि किहीं आणी,
च्यारि त्रीया घरि नही, किसी तिस की सुरताणी।
खुणसि भई सुरताण मनि, तव अदेसा किधा वहु,
सघल दल जे पठया हई, वे राघव पद्मिणि कहु ॥३६ ॥

तव राघव चिंतवइ, वयर पाछिलउ संभारयउ,
कहुँ जिहा पदमिनी, साह जु चितइ धारउ।
गढ चितोड हिंदुआण, राण गहिलोत भणिज्जइ,
रत्नसेन घरि नारि, नारि सिंघली सुणिज्जइ।

उचरइ विप्र एरिस वयण, लोग त्रिण्हि जीता तिरी,
इसी नही रविचक्र तलि, मइं नव खंड देख्या फिरी ॥ ४० ॥

लाख तूल पल्लिंग सउडि पिणि लख मिलइ तस,
अतह पुड सइ पंच, अम्बर गिंदूया सहस जस।
तसु ऊपरि ओछाड, रंग बहु मूलइं लीधा,
अगर कपूर कुमकुमा, कुसम चंदन पुट दीधा।
अलावदीन सुरताण सुणि, चेतन मुख सचउ चवइ,
पदमिणी नारि सिणगार करि, राय रत्नसेन सेजइ रमइ ॥४१॥

पलाण्यउ अलावदीन, जल थल अकुलाणा,
राय राणा खलभल्या, पड्या दह दिसि भंगाणा।
हय गय रथ पायक, सेन काईं अंत न पावइ,
जे मोटा गढपती, तेह पणि सेवा आवइ।
तब कोप करवि बल मुंछ धरि, कहइ साह विग्रह करउ,
मारउ देस हींदुआण कु, त्रीया एक जीवत्त धरउं ॥४२॥

वकउ गढ चित्रकोट, सकति सुरताण न लिज्जइ,
ऊठि आई मुसाफ, बोल जस राय पतिज्जइ।
डड डोर नवि दिउ, देस पुर गाम न गाहूँ,
नाही गढ सुं काज, राजकुंअरी न व्याहु।
राघव कहइ असपति सुणि, कहि राजा मारिन आहुडउं,
रत्नसेन मुझकुं मिलइ, तउ नाक नमिणि करि बाहुडउ ॥४३॥

कुंडलीउ ॥

दल समझवे सुरताण, आग्र चित्रकोट विलिज्जइ,
भेजउ वेगि विसेट, वात मिलणे की कीजइ।
दीजइ कर की वाच, जेम 'गहिलोत' पतीजइ,
हम तम विचइं खुदाइ हइ, लेइ मुसाफ आदड धरउ,
चितोड देखि वेगइं फिरउं, वाचा देइ थाप्यउ खरउ ॥४४॥

दूहा

वेग विसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मझार।
सभा सहित राय भेटीयउ, बोलइ वयण विचार ॥४५॥

कवित ॥

वात करी तव मिठ, राय तस वयण पतिनउ,
जिण परि कही विसेट, सोइ परि राजा किन्हउ।
राजकुली छत्रीस, सहूति सभा भणिजइ,
असपति आवणु कह्यउ, कहु किणपरि वुधि कीजइ।
मिली प्रद्धान इम चीतवइ, सेन सहु दुरिहिं पुलइ,
जण वीस सहित आवइ ईहा, तु पतिसाह राणा मिलइ ॥४६॥
ढिधी पोलि चिटकाइ, डस्या गढ तुरक नभाया,
गोरी गोधउ मड, साथि लस्करह सवाया।
अव तु मेलु भयो, राय जिमणार कराया,
त्रीस सहस मेली गया, साथ लसकरह सवाया।
खाणाज खाइ जव उठीया, पकड़ि वाह राजा लीया,
वात ज करत लंघीय पोली, तव रतनसेन काठा कीया ॥४७॥

कीयो कूड सुरताण, सामि मोरउ ग्रहि वंध्यउ,
पदमणि द्यु तु जाउ, काजि कारणह समंधउ।
भलो न कीयो किरतार, केम गहिलोत वधीजइ,
कीयो मंत्र मंत्रीया, राय राखवि त्रिय दीजइ।
तदिन जीभ खंडवि मरउं, योगिणीपुर नवि दिखसउं,
पदमिणी नारि इंम उचरइ, अब कह सरणागति पइठिसिउं ।४८।
दुख भरी पदमिणी. एस परिपंच विचारइ,
कोई संसारि समरथ, सूर मोहि सरणि उवारइ।
जे गढ माही रावत, तेह सवि हीणु भाखइ,
इसउ न देखु कोइ, मोहि सरणागति राखइ।
उचरइ नारि विलखी हूई, सरण एक हरि संभरउं,
पणि राजलोक माहि चंदन रचे, सखी वेगि जमहर करउं ।।४६।।
सखी एक कहु तोहि, मोहि जउ वयण पतिज्जइ,
मनावउ गोरल्ल, दुख सहु तास कहीजइ।
वरस पंच तस विखउ, राउ सु कुरखे चलइ,
ग्राम ग्रास नवि लीइ, कुण गुण मोहि उथलइ।
सुणि राउत्त कुलवट्ट तस, जिण सिर सूप्यउ परकज सउं।
पदमिणी नारि इंम उचरइ, तु वादल सरणि पइठसिउं ।।५०।।
चडे संघासण ताम, करह करि कमल उघास्यउ,
जीहा गोरउ वादल, पाउ पदमिणी ताहां धास्यउ।
गग उलटी पच्चिम प्रवाह, भणइ इम गोरउ रावत्तह,
ए तुम्ह कुं बूझीइ, देत आइस हम आवत्तह।

पदमिणी नारि इंम उचरइ, तुम्ह लगइं कीजंति वल,
कर ऊसु करइ ज सामि कज्ज, करउ कित्त जिम हुइ कलि ॥५१॥

तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज दल माही वडउ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुंहीज मोरउ भाईडउ।
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तुहीज दल वडउ छजइ,
तुं ही रावत्त गोरल्ल, तु ही देखवि राय गज्जइ।
सुणि गोरल्ल पदमिणि कहइ, मोहि दासी करि सुरताण दइ,
कइ अल्लावदीन सु खग धरि, कै राउ रत्नसेन छोडावि लइ ॥५२॥

सुहुड सुभट गोरल्ल, तांम गहगह्यउ सुचित्तह,
दल भंजउं सुरताण, नाम तु थु रावत्तह।
सांमि कजि अणसरउं, नारि पदमिणी उवेलउ,
गढ राखउ भुज प्राणि, मारि असुरा दल पिल्हउं।
कहइ गोरल्ल सुणि सामिनी, जाउ तुम्हे गाजन्न घरि,
अवतार पुरूप विधना रच्यो, सु वीडउ चु वादल करि ॥५३॥
लीन्ह पान वादल्ल, रयण हूँ ते गढ भींतरि।
सत्ति तुम्हारइ साहस्स, साह भजउ खिण अंतरि।
दोइ कुल भेटउं लाज, तु नाम वादल्ल कहाउं।
गोरी दल विन्नडउं, कूटि करि वाधव ल्याउं।
जिम राम कज्ज हनुमत करि, महिरावण वध्यउ तिखिणि।
काटउ ज वध राउ रत्न के, तु साहस भजउ साह हणि ॥५४॥
चाड कूड विन्नयउ, मंत्री कउ मंत्र भुलाणउ,
रतनसेन वधेवि लीय, गढह चिहुं दिसि अहिराणउ।

कायर झखइ आल, राणी दे राजा लिज्जइ,
अल्लावदीन सुरताण सउ, केस करि खग्ग धरिज्जइ।
इम कहइ चाड रावत सुणि, हीइ मत्रि निचल धरइ।
गढ रहइ राउ छूटइ सही, त्रीया देई इतउ करइ ॥५५॥

वयण सुणी रावत्त, रोस करि खरा रीसाणा।
दोय चढीया अति कोप, दोय अति चतुर सयाणा।
रिण माही अणुसरया, सीस वड समुहा वक्षी।
मोल मुहुगा लहइ, चडइ कुंजर सिर तक्षी।
गोरउ गरिष्ट वादल विषम, दोय साहस समुहा सख्या।
फुट्टउ सु हीयो जिह्वा गलउ, जिणि पदमिणि देणा कख्या ॥५६॥

आवि माइ तिणि ठाय, पासि वादल इम ढहीय,
तोहि विण पुत्र निरास, तुह चल्यु झुझण कसीय।
नयण मोरउ वादल्ल, वयण वादल्ल भणावीय,
प्राण मोरउ वादल्ल, वार वारई समझावीय।
आवती माय अत्र पेखि करि, उठि वादल्ल प्रणाम कीय,
वालक पुत्र जगि जगि जयो, किणइ कुमित्र कुमत दीय ॥५७॥

हुं कित वालउ माय, धाइ अचल नहि लगउ,
हुं कित वालउ माय, रोय भोजन नही मग्गउं।
हुं कित वालउ माय, धूरि धूसर नही लिट्टउं,
हुं कित वालउ माय, जाइ पालणइ न घुटउं।
वालउ ज माय मुझ क्यु कहइ, अवर राय रखउं जीउ,
सुलताण सेन विनडउं नही, तव रे माय फुट्टइ हीउ ॥५८॥

रे वाले वादल्ल, मनह अपणइ न बुझिसि,
रे वाले बादल्ल, केम करि साम्हु झ़ूझिसि ।
गढ वीट्यउ सब ठाय, असुर दल देखउं भारी,
तुं नान्हु वादल्ल, केम करि खग्ग संभारी ।
इंम कहइ माय वादल्ल सुणि, वयण एक मोहि चिंत धरि,
साहण समुद्र सुलताण का, कुण सुबच्छ अगमिसि भर ॥५६॥

हुँ कित वालउमाय, गहिवि गयन्दतउ खेलउं,
हुँ कित बालउ माय, सेसफण विसुहा पिल्हउ ।
वालउ वासिग कान्ह, नाथि आणीयु भुजा वलि,
वलि चाप्यु धर पीठ, वेणि दिधउ स्वामी छल ।
बाली वाला पउरस घण, दुरजोधन बंधवि लीयु,
बादल्ल गयंद इम उचरइ, तव सुणवि माय पिछित कीउ ॥६०॥

माय जाय पठवी, वेग तिही नारिज आई,
कुच कठोर कटि झीण, रूप जण रंभ सवाई ।
कोकळा कामिनी, पेखि त्रिभुवन मन मोहइ,
प्रेम प्रीति अग्गली, अगिं लक्षण जस सोहइ ।
बादल देखी जब आवती, तव सुचित विसमु भयु,
लालच्च नारि निरखु हवइ, तु मोहि सूर साहस गयो ॥६१॥
तव कमलिणि विस तरंग, नयण सू नयण न मेलिग,
वयण वयण न हु मिली, अहर सुं अहर न पिल्हिग ।
अति भुज पवन प्रचंड, कठिण कुच कमल न भिडिग,
रहिसेन फरसेग अंग, त्रीय घाए नह पिठिग ।

सुख सेजन माणी तनउं, कंता वाले फल कीय हुय,
संग्रांम सामि किम झुझस्यउ, कहुन कुंमर गाज्जन सुय ॥६२॥
लोअण तेह खिसि पडउ, केय पर त्रीय उल्हासी,
चरण तेह गलि जाउ, जेण रिण पाछा नासी।
हीयो तेह फुटीयो, जेण मन कीयो दुमंन्नउ,
श्रवण तेह सधीइ, जेण हरि सुण्यउ विमंन्नउ।
वादल्ल कहइ रे नारि सुणि, असुर सेन त्रिणवडि गिणउ,
नीपजे न सरवर सेन, जु न साह सनमुखि हणउं ॥६३॥

कुंडलीया

कंता झुझिसि कवण परि, किम करवाल ग्रहंति,
पेखि सागि अणी अग्गला, किम करवर झालंति ॥६४॥
किम करवर झालति, कुंत अणी अग्गल फुट्टइ,
खग्ग ताड वाजंति, सुहुड़ अधो धड तुट्टइ।
जु प्रीय कायर होय, पेखि गय जूह् गजता,
तु मोहि आवइ लज्ज, जु तुं रिणि भजिसि कंता ॥६५॥
हय सूं हय नरदलउं, हस्ती सू हस्ति पछाड़उं,
कुंतकार सुं कुंत, खग्ग सुं खग्ग विभाडउं।
छत्र छत्र छिनि छिनि, चमर आडंबर तोडउं,
तु जायु गाजन्न. साह् समहरि चडि मोडउं।
वादल्ल कहइ रे नारि सुणि, तव्र ही तुझ सेजइं सरउं,
चीतोडि रांण पद्मावती, हूं वादल एकत करउं ॥६६॥
सुणि स्वामी वीनती, कयण एक कहुँ सु मिठउ,
मो सिरि चडइ कलंक, चाह् ककण नहि छुट्टउ।

पूरि आस पदमिणी, मोहि निरासी किज्जइ,
आप हाणि घरि होइ, अवर कारणि जीउ दिज्जइ ।
इंम वहइ नारि कंता निसुणि, सेन सहुय एकत हुअ,
गोरल्ल पुठि समहर चडइ, रहु न कुंअर गाजन्न सुय ।।६७।।
अथग पवन जु रहइ, वहइ गगा पच्छिम मुह,
मेर टलइ मरजाद, जाइ नवखण्ड रसातल हु ।
सेस भारजु तजइ, चलइ रवि चन्द दखिण धर,
सुर असुर सहू टलइ, संक नह धरइ अप्पसर ।
एतला बोल जउ सहू हुइ, हूँ वयण सच्चउ करउं,
वादल्ल गयद इंम उचरइ, तुहि न नारि पाछउ सरउ ।।६८।।
गोरउ अर बादल्ल, आय दोय सभा वयठा,
जे गढ माहीं रावत, तेह सहू मिल्या एकठा ।
करउ मत्र विचार, वुधि छल भेद करीजइ,
देणी कहु पदमिनी, जेम सुरताण पतीजइ ।
डोली कीजइ पंचसइं, सुहड सवे सन्नाहीइ,
एकेक डोली आठ आठ जण, इम परिपंच रचाईइ ।।६९।।
रची एम परिपच, वेगि तव दूत चलायो,
खवरि करउ सुरताण, हुं तु पदमिणी पठायो ।
जे दासी अगरक्ख, हरम सवि डोलइ घल्लउं,
हीर चीर सोवन्न, लेई तुम्ह साथे चल्लउं ।
इंम कहइ नारि पदमावती, पातिसाह अरदास सुणि,
जिस घड़ीय राय छुट्टइ सही, हुँ न रहुँ ईहां एक खिणि ।।७०।।

तब खुशी भयउ सुरताण, वेगि फुरमाण चलायउ,
सुणि गोरे वादल्ल, साथि करि पदमणि ल्याउ।
जे तुम्ह कहउ सोई करउ, राउ की वेरी कट्टउं,
वाद गस्त हूं करउं, ईहा रहि नीर न घुट्टउं।
पहिराइ राइ तेजी दिउ, वोल वंध दे पठवउं,
इंम कहइ साह वादल्ल सुणि, तोहि निवाजि दुनिया दिउं ॥७१॥

कीयउ कूड वादल्ल, आय डोले सपत्तउ,
तस माहि रख्यउ वाल:, नाम पदमिणी कहंतउ।
हूउ हरख सुरताण, जब ही आवत सुणी नारी,
गोरी तब पूछीउ, वोल वोलीयउ विचारी।
अल्लावदीन सुरताण सुणि, एक वात मेरी साभलउ,
पदमिणी नारि इंम ऊचरयउ, एक वार राजा मिलउं ॥७२॥

वादल्ल तिहा पठयु, राय जिहा वधन वंधीय,
गहीय राय पय कमल, काज अप्पणउ इंम किधीय।
हूउ कोप राजान, वडर तइं साध्यउ वयरीय,
रे रे कुवुद्धीय कुड, नारि किम आणी मोरीय।
वादल्ल ताम इम उच्चरइ, खिमा करउ स्वामी सही,
मइं वालक रूप पदमिणि करी, राउ नारि निश्चइ नही ॥७३॥

वादल्ल तव लेइ चल्यउ, राउ चकडोल सरसीय,
खगधारी सनमुख, भड्यउ सुरताण सरसीय।
करी पारसी मुगल्ल, हींदू सव कूड कमाया,
लंकामणि उद्धस्यउ, अतुल वल सेन सवाया।

मारि मारि करि उठीया, बादल्ल तिहा संमुह सख्यउ,
जब लगइ झूझि दल पति हूउ, तब लग हइंवर पखरव्यउ ।।७४।।
हुई हाक दल माहि, भई कलकली वृंबारव,
गय गुडिय हय पखरिय, सुहड सन्नाह करइ तव ।
एको सिर त्रूटंति, एक धड धरिणी लुट्टइ,
खग्ग ताल बाजंति, बांण सींगणि गुण छुट्टइ ।
इम भग्गउ सेन असपति सरस, पातिसाह विलखउ भयउ,
गोरइ गयंद दल कुट्टायो, बादल्ल राउ तव लेई गयउ ।।७५।।
करी पइज बादल्ल, नारि ऊगारी बलहि छल,
मंनि संक्यउ सुरताण कज्ज करि आयउ भुजा बलि ।
असपति मोडउ माण, सामि आपणउ उवेल्यउ,
भजे गय घण थट्ट, मीर मुगला सत मेल्हाउ ।
इम सुणवि माइ आणंद कीय, पुत्त परदल भजीयउ,
उवरी बात बादल्ल की, सो पदमणी कंत उवेलीउ ।।७६।।

कुंडलीया

गोरल्ल त्रीया इंम ऊचरइ, सुणि बादल तोहि सत्ति,
मो प्रीउ रिण माहि झूझीयउ, कहि किम वाह्या हत्थ ।।७७।।
कहि किम वाह्या हाथ, वत्थ वइ सुहुड पाछाडीय,
भंजी गय घण थट्ट, पाव दे सीस विभाडीय ।
हय गय रथ पायक, मारि वल्लीयउ बोरिल्ल,
वेग माइ सत्ति चडउ, एम रिण पड्यउ गोरिल्ल ।।७८।।
कहिं धड़ कहिं सिरि कहीं कमंध, कहिक पजरही पडीउ,
कहीं कर कहीं करमाल कहि कहि मरवि छुडीयउ ।

कहीं एकावली हार, कहिक धरणी धंधोलिय,
कहीं जम्बुक किहीं अत मस गिरधण विछोडीय।
गढ छल त्रीय छल सामि छल, त्रिहुँ छल भिड्यउ सुकवि कहइ,
गोरह्ल सूर भेटण चली, सु खिण एक रवि रथ खंचे रहइ ॥७९॥
जे सिर पड्यउ धर पिट्ठ, धरा देई इंद्र पठायउ,
इंद्र हथ थल स्यु, सोइ सिरि त्रिभिण उठायउ।
गिरिधण कर छुटेवि, पड्यउ गंगाजल मज्ज,
गंगाजल उत्त ग, हुओ अंमृत सिरि छज्ज ।
इम अंमीय गाह नयण चंदण चृड, तव कंदल मंड्यउ घणउ,
गलि रूंडमाल गुंथेवि लीय, तो सर सिद्धि गोरल तणउ ॥८०॥
जे वादल्ल जंपति, विरद वादल अरि गंजण,
संकडि स्वामि सन्नाह, असुर भारथ अरि गंजण।
कीयउ जुद्ध सुरताण हण्या हसती मय मत्तह,
आयउ मोरउ कंत, तहिज दिद्धउ अहि वातह।
पदमिणी नारि इंम ऊचरइ, तोहि धन्य धन्य अवतार हूअ,
आरती ऊतारउ हो वर तुरिणि, जे वादल्ल जपंति तूअ ॥८१॥
अचल कीर्ति श्री राम, अचल हनुमन्त पवन सुअ,
अचल कीर्ति हरिचंद, अचल वेली पुहवी हुअ।
अचल कीर्ति पाडवा, जेण कइरव दल खंडीय,
अचल कीर्ति अहिवन्न, जेणि चक्रावहु मंडीय।
विक्रम कीर्ति जिम अचल हूअ, भोज अचल जुग जाणीइ,
तिम अचल कीर्ति गोरल तूय, बादल कीर्ति वखांणीयइ ॥८२॥

॥ इति श्री गोरा वादल कवित्त सम्पूर्ण ॥

रत्नसेन-पद्मिनी गोरा बादल संबन्ध खुमाणो रासो

षष्ठ खण्ड

॥ श्री माऊ अवाय नम. ॥

गाहा

ओंकार मंत्र अंबा, जगज्जननी जगदंबा ।
लच्छ समप्पो लबा, दलपति तुह चरण अवलंबा ॥२५॥

दूहा

कमला मात करो मया, मुझ उर वसिइं वास ।
आपो दोलत ईश्वरी, वाणी वयण विलास ॥२६॥

कवित्त रांणां री वंशावलिका

राण प्रथम (ह) राहप, पाट नर सुर नरपत्ति ।
दिनकर हर सुरदेव, रतन जसवंत नृपत्ति ॥
अनतो अभयो रांण, प्रबल पथवीमल पूरण ।
नाग प्राणग जेंसिंघ, जेंत जगतेश उधारण ॥
जयदेव रांण जो नंगसी, भारथ पारथ भीमसी ।
गढ़पति मुगट गढ गंजणो, गाहड़मल गढ़ लखमसी ॥२७॥

जग असपति जसकरण, नवल विजपाल नरेसुर ।
नागपाल नरसीह, राण गिरधर राजेसुर ॥
पीथड पुंनोपाल, मल्ल मोहण मय मत्तह ।
सीहडमल भीमक्क, राण भाखर रण रत्तह ॥
लुणग्ग करण लाखा दलां, मोड मंडल श्री लखमसी ।
अरसी हमीर खेतल खगां, अवनी सहु लीधी इसी ॥२८॥

चौपाई

राणो रतनसेन गहिलोत, देसपती मोटो देशोत ।
राज करें नृप गढ चीतोड, राजकुली सेवें कर जोड़ ॥२९॥
एक दिन नृप बैठो वेसणें, पटरांणी सुं पेमे घणें ।
भोजन माहें स्वाद न कोय, चतुराई तुम माहें न कोय ॥३०॥
राध न जाणा भोजन भणी, परणो थे सींघल पदमणी ।
अंजस करे राणो नीसर्‌यो, गढ़ चीतोड़ थकी ऊतर्‌यो ॥३१॥
अश्वें चढीयो राण उलास, सार्थे लीधो खान खवास ।
राणा ने सेवक पूछियो, आपें केथ पयाणो कियो ॥३२॥
आपा जास्या सींघल देश, तिहां जाए पदमण परणेस ।
अगुवो लीधो सार्थे भाट, ते सींघल री जाणे वाट ॥३३॥
रांणो दरियारें तट गयो, जालिम सिद्ध जोगी दरसियो ।
जोगी जंपें रतन नरेश, थे किम आया कवण विसेस ॥३४॥
आयस सूं अधिपति वीनवें, पदमणी वरण जाऊँ हिवें ।
पार उतारो मुझ गुरदेव, सींघल ले जावो सुज हेव ॥३५॥

कर ऊपर दोई असवार, नृप सींघल मुंक्यो तिणवार।
आयस कीधो ए उपगार, परणण रो मुशकल व्यवहार ॥३६॥
वहिन अछें सींघलपति तणी, परतिख आप अछें पदमणी।
अभिग्रह लीधो एहवो नार, जीपें मुझ थी पासा सार ॥३७॥
अधिपति खाधी हार अनेक, जीपें तस परणु सुविवेक।
रमवा वेंठो रतन नरेश, हारवी पदमणि नें लघुवेश ॥३८॥
सींघल नृप व्याही पदमणी, दीधी परिघल पहिरावणी।
रह्यो केताइक दिन सासरें, चालणरी सीझाई करें ॥३६॥
सीख माँग चाल्या घर भणी, साथें लीधी नृप पदमणी।
घणे भाव वहु प्रीतें घणी, पहुंचाया सींघल रे धणी ॥४०॥
अनुक्रमें आया गढ चीतौड, रतनसेन मन अधिकें कोड।
राणी सुं जंपें राजान, म्हें परण्या पदमणि करि मान ॥४१॥
थे मोसो मानुं वाहियो, वोल कह्यो मो निरवाहि [इ] यो।
अहनिस गेंर महिल आवास, पदमण सुं सेझें करें रजास ॥४२॥
एक दिन आयो राघव व्यास, पदमणि नृप वेठा सुविलास।
राणो रतनसेन कोपिओ, पदमणि रूप व्रामण पेखियो ॥४३॥
आँख कढ़ावूं राघव तणी, इण दीठी निजरें पदमणी।
जीव लेइ नें भागो नींठ, अधिपति कोप्यो आकारीठ ॥४४॥
माणस लेइ गढ़ थी उतर्यो, दिल्ली नगर राघव संचर्यो।
वाचे राघव शास्त्र अनेक, वात वखाण करें सुविवेक ॥४५॥
जस विसतरियो दि [ल्] ली माँह, तेडाव्यो पंडित पतिसाह।
आलम ने दीधी आसीस, द [ल्] लीपत कीनी बगसीस ॥४६॥

राघव आलम पासें रहें, असपतिरी बगसीसा लहें ।
राघव कुवधि कियो मंत्रणो, कादु वैर हवें चोगणो ॥४७॥
रतनसेन ऊपर रिम राह, ले जाऊँ चित्रगढ पतिसाह ।
कोइक करस्यु हुं कलि चाल, रतनसेन भांजु भूपाल ॥४८॥
भाट एक सु भाईपणो, तिण सु कहीयो ए मंत्रणो ।
अंब खास बेंठो असप [न्] त, हंस पाँख ग्रही सुविग[त्]त ।४६।
यारो इस सु भी मकशूल, प्रथवी माँहें काइ अमूल ।
हजरत इस सु मेहरी खूब, महिला पदमणी हे महबूब ॥५०॥

गाहा

मान सरोवर मज्झे, निवसे कलहंस पंखिया वहवे ।
ताणंतो सुकमाला, इसा पंखी मम हत्थे ॥५१॥

चौपाई

पूछें आलम पदमणि जेह, सोही बतावो हम कुं तेह ।
अंदर हुरम परिक्खा करो, पदमणि हो सो आगें धरो ॥५२॥
हजरत दीधा खोजा साथ, देख्यो हुरम तणो सहु साथ ।
हस्तणी चित्रणी ते सखणी, इसमे कोई नही पदमणी ॥ ५३॥
किस थानिक है कहो हम भणी, सींघलद्वीप अछें पदमणी ।
जास्युं सींचल लेस्यु हेर, जिहा हुवें जिहा ल्याउं घेर ॥५४॥
सींघल ऊपर थया तियार, आलिमसाह हुआ असवार ।
ल्हसकर लाख सताविस लार, उदधि पास आव्या तिणवार ।५५।
दीठो आगें उदधि अथाग, मानव कोइ न लाभें थाग ।
उदधि ऊपर ह [ल्]ला करें, आलिम को कारिज नवि सरें ॥५६॥

जिहा जे वेसाड्या जूझार, वूडा उदधी में तिण वार।
जंपें आलम राघव व्यास, कीधो कटक तणो सहु नाश ॥५७॥
ओर वताओ कोई ठोड, कहें राघव पद्मण चितोड़।
लेत्ता ते मुसकल अतिघणी, सेसतणी दुरलभ जिम मणी ॥५८॥
रतनसेन वाको रजपूत, महा सुभट माझी मजवूत।
आलिम कहें हिन्दू का क्याह, गढ़ चीत्तोड चढु उच्छाह ॥५६॥
पदमणि गहि वांधु हिंदवाण, तोहुँ तखत वडो सुलताण।

दूहा

सुण रावव आलिम कहे, कह पदमणि सहिनांण।
करु ह(ट्) ठ तस ऊपरें, गढ़ घेरु घमसांण ॥६१॥
सुण हजरत राघव कहें, नवरस महि सिणगार।
नांम च्यार हें नायका, वरणव कहुं विचार ॥६२॥

कवित्त

सुन हो साह कहें व्यास, धरहुं रस पेम उकत्तह।
वाखानहुँ सींगार, सुन हो चित होय सुरत्तह ॥
किती भात नायका, कोन गुनरूप विलासह।
भाँत भाँत कहि भेद, करिहु निज बुध प्रकासह ॥
आलिम साह सुनीइं अरज, च्यार जात त्रिय के कहें।
नायका तीन सवके घरे, वखत वार पदमणि लहें ६३॥
कहें साह सुनि व्यास, करहो सवके वाखाणह।
रूप लच्छन गुन भेद, तुम हो सव वात सयाणह ॥

तनवि चित्रणी विचित्र, हस्तनी मस्त हसती।
संखनि कुचित सरीर, नार पदमणी छत्रपती ॥
संखनी पाच हस्तनी दसह, पनरह रूप सु चित्रणी।
कहें राघव सुलतान सुंन, वीस विशवा पदमणी ॥६४॥

दूहा

सुनि सव त्रिय के रूप गुण, इम जपहि सुलतान।
अव चित पाई पदमनी, करहुं विशेष वखांण ॥६५॥
पदमनि निरमल अंग सव, विकसत पदमणि [सुं] हेज।
प्रेम मगन ऐसी खुलें, ज्युं पकज रवि तेज ॥६६॥

छप्पय

चित चंचल वय स्याम नैन मृग भ्रोइ अलिगन।
तिल प्रसून तस समन सिहासन मुख अधर विद्रुमन ॥
अति कोमल सव अंग वयण सीतल अति हंस गति।
तन सूछिम कटि छीन प्रगटी दामनि देह द्युति ॥
आनंद चंद पूरण वदन, मन पवित्र सव दिन रहें।
आहार निमख इच्छित अमल, विमल ठोर पदमनि लहें ॥६७॥

दूहा

पदमणि चंपक वरण तन, अति कोमल सव अंग।
चिहुं ओर गुंजित भमर, निमखन छारत संग ॥६८॥

सवैया

बालस वेस रहें सबही दिन, मान करें न कछू दिन लाजें।
सेत सरोज सुं हेत धरे, अति ऊजल चीर सरीरहि छाजें।
वारिज कोस वन्यो मदन ग्रह वीरज नीरज वास विराजें।
देह लही मनमत्त निरंतर रंभा के रूप पदमणी छाजें॥६९॥

कवित्त

रूपवंत रतिरंभ, कमल जिम काय सकोमल।
परिमल पुहप सुगंध, भमर बहु भमे विलावत।
चंप कली जिम चंग, रंग गति गयंद समाणी।
ससि वदनी सुकमाल, मधुर मुख जंपें वाणी॥
चंचल चपल चकोर जिम, नयण कंत सोहें घणी।
कहें राघव सुलतान सुण, पुहवी इसी ह्वें पदमणी॥७०॥
कुच युग कठिण सरूप, रूप अति रूडी रांमा।
हसत वदन हित हेज, सेभ नित रमे सुकामा॥
रूसें त्रूसें रंग, संग सुख अधिक उपावें।
राग रंग छत्तीस, गीत गुण ग्यान सुणावें॥
सनान मंजन तंबोल सुं, रहे असोनिस रागणी।
कहें राघव सुलतान सुण पुहवी इसी ह्व पदमणी॥७१॥
वीज जेम झलकंत, काति कुंदण जिम सोहें।
सुरनर गुण गंधर्व, रूप तृभुवन मन मोहें॥
त्रिवली, मयतन लंक, वंक नहु वयण पयंपें।
पति सुं प्रेम अपार, अवर सुं जीह न जंपें॥

सास धरम ससनेहणी, अति सुकमाल सोहांमणी।
कहें राघव सुलतान सुण, पुहवी इसी हैं पदमणी ॥७२॥
धवल कुसुम सिणगार, धवल बहु वस्त्र सुहावें।
मुत्ताहल मणि रयण, हार हिदयेस्थल भावें॥
अलप भूख त्रिस अलप, नयण बहु नींद न आवें।
आसण रंग सुरंग, जुगति सुं काम जगावें।
भगति हेत भरतार सु, रहें अहोनिस रागणी।
कहें राघव सुलतान सुण, पुहवी इसी हें पदमणी ॥७३॥

चौपाई

पदमणि रा गुण सुणिया एह, जपें असपति सुंण अबेह।
करुं चढ़ाई गढ चीतोड, अब हींदू कुं नाखुं तोड ॥७४॥
पोरस आण लेऊं पदमणी, रतनसेन पकडुं गढ धंणी।
दोडाया कासीद सताब, तेड्या मुगल पठाण नवाब ॥७५॥
निरमल जोधा जें सम्भ किया, आधी राति दमामा दिया।
सबल सेन सु आलिम चढ्यो, धर धूजी बासिग धड़हड्यो ॥७६॥

कवित्त

हसि बोल्यो सुलतान, मांण कर मुंछ मरोड़ी
रतनसेन कुं पकड़, चित्रगढ़ नाखुं तोड़ी।
हय कंपें चक च्यार, थरकि जलनिधी अकुलाणों।
सरग इंद खलभल्यो, पड़्यो दस दिसींह भगाणों॥
फरवाण देस दिसहिं फटें, सब दुनियाण असी सुणी।
मारिहें रतन हिंदुआंणपति, साह पकड़िहें पदमणी ॥७७॥

चौपाई

गढ चीतोड तणी तलहठी, इण पर आयो आलिम हठी।
लाख सताविस लसकर लार, डेरा दीधा अति विसतार ॥७८॥

धूस नगारें धूजें धरा, गाजें गयण अनें गिरवरा।
हठियो आलम साह अलाव, गढ़ भंजण चित मन मे दाव।
रतनसेन पण रोसें चढ्यो, पींधो आलम आवी पड्यो।
सुभट सेन तेड़ाया सहू, वह से बलवंत आया बहू ॥७६॥

रतन सझ्यो गढ़ अवली बाण, छोडें नाल गोला नें बाण।
रतनसेन बोले गजखंभ, हींदू धरम तणो उत्तंभ॥
पतिसाही रणवट पाहुणो, भोजन जीमाडा खगतणो ॥८०॥

आ [व] ध नाना विध पकवान, आतस गोला खाग विधान।
खाठी भगत जिमाडो इसी, खग व्रत मद धारा [ना]
मोजसी ॥८१॥

इसो चखावो अजरोरु [क्] क, फिरें न लागें रणवट भु[क्] ख।
आपें पाखें अवर कुंण इस्यो, झेलें पाहुण आलिम जिस्यो ॥८२॥

उत अलाव इत रयण नरेश, हींदूपति ने पति असुरेस।
माहो माहे करें सग्राम, मुगल पठांण वहु आव्याकाम ॥८३॥

असपति कोइ न चालें जोर, रतनसेन राणो सिर जोर।
द्ये ऊपर थी भिड मारिका, असपत्ति सहिवें फाटा बका ॥८४॥

कोइक तोत तणा करि मता, रतनसेन पकडा जीवता।
वचन तणा दीजें वेंसास, विण फदे पाडीजें पास ॥८५॥

मू कीजें पक्का परधान, एम कहावें द्यो हम मान।
तेडी माह खवावो खाण, निजर देखावो आहीठांण ॥८६॥
पदमणि हाथें जीमण तणी, खाँत अछें म्हानु अति घणी।
काई न मागें आलमसाह, छडा साथ सु आवें माह ॥ ८७ ॥

कवित्त

हमहि पठाए साह, कहण कु कथ अवल्ली।
जो तुम मानों वाच, साह फिर जावें द [ल्] ली।
दिखलावो पदमनी, और सब गढ दिखलावो।
विग्रह को नवि करही, बाँह दें प्रीत वधावो।
गढ़ देख मिलहि सिरपाव दें, बहुत मया आलिम कर (ही)।
रतनसेन सुण (हो) बीनती, सुहर माह दुतर तरही ॥ ८८ ॥

चौपाई

बोल बंध द्यो साचा सही, वाच हमारी विचलें नही।
नाक नमण करि कोट दिखाय, पदमणी हाथें मुझ जीमांय ॥६०॥
माहों माह करे संतोष, हिव मेटो अति वधतो रोष।
वलता कहें रतन राजांन, मा [ह] रां कथन सुणो परधान ॥६१

कवित्त

सुणि वजीर कहें राव, राम सिर पर राखीजें।
वाको गढ़ चीतोड़, सगत सुलतान हलीजें।
म करहो हठ गुमांन, तुमहुं साहिब तुरकाणे।
रजधारी रजपूत, हमही साहिब हिंदवाणे।

क्यु' कहें वहुत श्री मुख वयण, हम रखही घर अप्पणो।
किरतार कियो न मिटें किण ही, त्याग खाग हिंदू तणो ॥ ६२ ॥
कहें वजीर सुनिराव, तुमही क्या ओपम दीजें।
तुम सूरज हिंदवांण साह कही एती कीजें।
दंड द्रव्य नहिं पेस देस तेरा नहिं चाहु'।
नहिं हम गढ री प्यास, राजकुमरी नहिं ब्याहु'।
करिहो न तुम्ह करहि फरक्क, राज महल नहिं आहडुं।
करि नाक नमण करीइ' रयण, देख कोट फिर वावडुं ॥ ६३ ॥
सुण हो वहुरि राजांन, इह हरजत फरमाया।
पूछें ग्यान कुरान, तिहा एता दिखलाया।
रतनसेन अ [ल्] लात्र, पुव्व जन्मंतर भाई।
म्हे तप किया असोच, तिण पतिसाही पाई।
तें किया पवित्र दिल पाक तप, हीं दूपत पायो जनम।
हम तुम तेरो समा कुल ही, करत प्रीत रहीइं धरम ॥ ६४ ॥

चौपाई

खेमकरण वेधक परधान, इम कही सघलि मेलीधान।
हिंदू सदा निरमल दिल हुवें, धोलो सहु दूध ज लेखवें ॥ ६५ ॥
तेडी राण तणा परधान, पुहतो जई पासें सुलतान।
दीधा वोल वाह सुलतान, हम तुम विचें ए छें रहमान ॥ ६६ ॥

श्लोक

मुख पय दला कारं, वाचा चंदन शीतलं।
हृदय कर्तरी तुल्यं, त्रिविधं धूर्त लक्षणम् ॥ ९७ ॥

चौपाई

राघव व्यास कियो मंत्रणो, रतनसेन ने झालण तणो।
नृप मन कोय नहीं छल भेद, खुरसाणी मन अधिको खेद ॥९८॥
घरभेदू विण घर नवि जाय, घरभेदू थी घर ठहराय।
घर भेदें लंकागढ़ गयो, राघव घरभेदूं हम कियो ॥९९॥
साह माहें पधारो राज, रतनसेन तेड़ें महाराज।
आलिम साथ किया असवार, सलह संपूरित तीस हजार २५००

कवित्त

चढ़यो गढ सुलतान, खान निवाब लीया संग।
तीस सहस असवार, सिलह नख चख ढ़कें अंग।
पडें धुस नीसाण, गिरंद चीतोड गडक्कें।
सहिर लोक खलभलें, धीर छूटे चित्त धडक्कें।
विहुरें रयण मेल्यो कटक, ठोड ठोड सामंत कसें।
मनुख देख गयंद मेमत घटा, मयंद कपोरिस डलसें ॥२५०१॥

चौपाई

आवि माहें हुआ एकठा, तव सगलें दीठा सामठा।
रतनसेन मन खुणस्यो सही, आयो आगण आलिम चही २५०२
नृप पण सेना सगली सार, असवारे मिलिया असवार।
तुंगे तुंग हूआ एकठा, जाणक वादल उत्तर घटा ॥ २५०३ ॥
... . आलिम पिण न सकें आंगमी।
आलिम ताम कहें सुण भूप, क्युं मेलत हो कटक सरूप ॥ ४ ॥

में लडणे कु आया नहीं, गढ़ देखण की हैं दल सही।
न धरो मन में खोटा खेद, मेरे मन नाही छल भेद ॥ ५ ॥

कवित्त

कहे रतन सुण साह, चूक करि लाह न खटी हु ।
रूक वाव वज्जही, वादल जिम तुम फट्टिहु ।
तन गुमांन मग धरहु ,करहु जिण कोइ कपट्टह ।
आए चली आंगणें, तास हम लाज निपट्टह।
गज गाह बाँध ऊभें सुहड, मूंछ मरोडी मगज भरि ।
हम हुकम होत सम फोज सिर, पड़िही कंस सिर वीजड़ि ॥ ६॥

चौपाई

आलम जंपें सुण राजान, घर आया वहु दीजें मान ।
थोडा होवें होवें घगा, भेली लीजे निज पाहुणा ॥ ७ ॥
धान तणो छें आज सुकाल, वणा घणा काइ करें भूपाल ।
हम मिलवा आवें ऊमही, लड़वा कु हम आवें नही ॥ ८ ॥
राय कहें साभल पतिसाह, भलें पधारो आलिम साह ।
वलि तेडावो जाणो जिके, पिण लघु वोल म बोली वके ॥ ६ ॥
बोलें बोल विहुं हुआ खुसी, हाथें ताली दीधी हसी ।
माहो माह हुओ संतोष, राय तणें मन मिटियो रोष ॥१०॥
करि दरगह वेंठो सुलतांन, आगें ऊभा सवे राजान ।
फेरवीजें घोडा गजराज, रूपक भेंट करें कविराज ॥११॥
रतन गया तव महिला भणी, भगत करावण भोजन तणी ।
पदमणि प्रति राजा इम कह्यो, आलम सु जिम तिम रस रह्यो ।१२।

भोजन भगत करो हिव इसी, जिम दल्लीपति होवें खुसी ।
पदमणि नार कहें पिय सुणो, हुं हाथें न करूं प्रीसणो ॥१३॥

खट रस सरस करें रसवती, प्रीसेसी दासी गुणवती ।
सणगारो सघली छोकरी, खात अछें जो तुम मन खरी ॥१४॥

पदमणी पास रहें सावधान, वीस सहस दासी रूप निधांन ।
रूप अनोपम रंभातिसी, काम नि सेना होवें जिसी ॥१५॥

आसण बेंसण नें विध किया, ऊपर छाया डेरा दिया ।
गादी मुंडा माहें अनूप, जरी दुलिचा अति हें सरूप ॥१६॥

ठोड ठोड ऊभा हुसियार, छडीदार प्यादा पडिहार ।
सवे महिल सिणगारी करी, चिग पडदा नाखी झालरी ॥१७॥

त्यारी हुई रसोडा तणी, माहे तेड़्या दल्ली धणी ।
देखी साह महिल सत खणा, जाण विमान अछें सुर तणा ॥१८॥

खुस खांणें बेंठो पतिसाह, बेठें खान निवाव दुव्वाह ।
पदमणि माहें अधिक पंडूर, दासी आय देखावे नूर ॥१९॥

इम मंडे पत्रावलि थाल, माडें एक कचोली थाल ।
इक झारी भरि हाथ धोवाव, ढ़ोलें चंमर वीजें वाव ॥२०॥

इक मेवा प्रीसें पकवान, साल दाल सुरहा घृत धान ।
विंजन विध विध प्रेम सुवास,
सुर पिण मोती [दा] ण कविलास ॥२१॥

भूलो साही कहें अल्लाह, यह हींदूवाण के पतिसाह ।
देखी दासी रूप विलास, आलिम चित मे हुओ उदास ॥२२॥

देख देख सूरत सव तणी, कहैं साह यह सव पदमणी।
ऐंसी महिरी एक अलाह, हमकु एक न दीधी नाह ॥२३॥

कवित्त

कहे व्यास सुण साह, हैं तारीफ पदमनी।
आफताव महिताव, जिसी वद [ल्] ल दामनी॥
सोवन्न वेल समान, मानसर जेही हँसनी।
जिन (ज) तन कमल सुवास, तास गुन सेवही
सुरधेन कलपवृछ जेहवी, मोहनवेल चिंतामनी।
कवि लघु अक लिइक हैं रसन, क्यूं त्रनही सोभा घणी ॥२४॥
लख दस लहैं पलंग, सोड सत लख सुणीजें।
गालमसूरया सहस, सहस गीदूआ भणीजें।
तस ऊपर दुपट्टी, मोल दह लक्ख लद्धी।
अगर चंदण पटकूल, सेझ कुकम पुट दीधी।
अलावदीन सुलतांन सुण, विरह विथा खिण नवी खमे।
पदमणी नार सिणगार सझ, रतनसेन सेझें रमे ॥२५॥

चौपाई

अवर न देखें पदमनि कोय, जे देखें तो गहिलो होय।
पदमनि पुन्य परखें किम मिलें, जिण दीठे अपछर ग्रव गले ॥२६॥
इम ते व्यास अनें सुलतान, वात करें छें चतुर सुजांन।
तिण अवसर पदमणी चिंतवें, आलिम केहवो जो इम चवे ।२७।
तितरें दासी जंपें एक, गोख हेठ वेंठो सुविवेक।
तसुमुख देखण तव गजगती, आवी गोखें पदमावती ॥२८॥

जाली माहें जोवें जिसें, व्यासें पदमणि दीठी तिसें।
ततखिण व्यास इसुं वीनवें, स्वामी पदमिण देखो हिवें ॥२६॥
रतन जडित जे छें जालिका, ते माहें बेंठी बालिका।
आलिम उंचो जोवें जिसें, पदमणि परतिख दीठी तिसें ॥३०॥
वाह वाह थारो पदमनी, रभ कि ना ए छें रुकमणी।
नाग कुमा [रि] र किना किन्नरी, इन्द्राणी आणी अपछरी ॥३१॥

कवित्त

कहें साह सुनि व्यास कहा मेरी ठकुराई।
में मदहीन गयंद मे बलहीन मृगपति।
में वद्दल जलहीन, (में हूँ) विजन विन लुहन।
में हीरा विन तेज, में हुं योगी विन मोहन।
विन तेज दीपक विण सूर दिन, कहा बहुत फिर फिर कहुं।
नही जाऊं दल्ली विन पदमनी, फकीर होय वन मे रहुं ॥३२॥

चौपाई

व्यास कहें साभल सुलतान, फोगट काय गमावो माण।
धीरज धरि साहस आदरो, अवर उपाय वली को करो ॥३३॥
रतनसेन जो पानें पडें, तो ए पदमणि हाथें चडें।
इम आलोची मेली घात, धीरपणा विण न मिलें घात ॥३४॥
इम करता जीम्यो सहु साथ, भगत घणी कीधी नरनाथ।
श्रीफल देइ धात तंबोल, माहो माह किया रंग रोल ॥३५॥
हिवें इम जंपें आलिम साह, मांहो माह झाली वाह।
परिघल दीधी पहिरावणी, जरकस नें पाटंबर तणी ॥३६॥

हाथी घोडा दीधा घणा, सतोष्या मगला पाहुणा।
तुम महिमानी कीधी घणी, कोट देखावो तुम हम भणी ॥३७॥
रतनसेन नृप साथें थया, आलिम गढ़ दिखलावण गया।
विषम विषम हुती जे ठांड, फरि देखाड्यो गढ़ चीतोड़ ॥३८॥
विखम घाट अति वाको कोट, माहें न[ही] देखै काई खोट।
गोला नाल वहें ढीकली, कदही कोइ न सकें नीकली ॥३९॥
गढ देख्या गढ़पति ग्रब गलें, एहवो कोट कही नवि भलें।
इम जपें ही आलमसाह, तुम हो रतन हमारी बाह ॥४०॥
काम काज केजो हम भणी, तुम महिमानी कीधी घणी।
आलिम रीझ दीइं गहगही, सीख दीए वलि ऊभा रही ॥४१॥
अधिपति कहें अघेरा चलो, मे र्द दार देखा रावलो।
एम कही आवो संचर्‌यो, राणो गढ बाहिर नीसर्‌यो ॥४२॥
नृप मन मे नहि को(इ) छल भेद, खुरसाणी मन अधिको खेद।
व्यास कहें ए अवसर अछें, इम मत कहियो न कहियो पछे ॥४३॥

यतः

खड सूका गोड मूआ, बाला गया विदेश।
अवसर चूका मेहडा, तू ठा कहा करेश ॥४४॥

चौपाई

असपति हलकार्‌या असवार, माहो माहें मिल्या जूझार।
राणो रतन झाल्यो ततकाल, विचली वात हुई असराल ॥४५॥

दूहा सोरठा

असपति अब सरीख, रुंखा पुरखा राजवी ।
मुह मीठा उर वीख, कहो दई केम पतीजिइं ॥४६॥
नरपति अरि नाहर तणा, को विसवास करेह ।
जे नर क [च्] चा जाणीइं, आलम एम कहेह ॥४७॥
वेंरी विसहर वाघ नृप, आसी गढ़पति आप ।
छलबल ग्रहीइं दाव सही, कोइ न लागें पाप ॥४८॥
तुम हम महिमांनी करी, अब तुम हम महिमांन ।
द्यो पदमणि छोडुं परा, रतनसेन राजान ॥४६॥

चौपाई

सुहड़ हुंता जे साथ सवेह, तियां चढ़ाई रजवट रेह ।
आंण्यो पकडे लसकर माह, रवि नें ग्रहियो जाणें राह ॥५०॥
वेडि घालि वेसाड्यो राण, जुलम अन्याय कियो सुलताण ।
राणो रतन हुंतो बलवत, पकड्या निबल हुओ ए तत ॥५१॥

यतः

अंगा गमु गते शत्रु, किं करोति परि [च्] छद[ः] ।
राहुणा ग्रहते चन्द्रे, किं किं भवति तारके ॥५२॥

चौपाई

सुणी सहू गढ माहें वकी, वात तणी चिनऊी वानकी ।
हलबल हुई सेहर बाजार, पकड़ाणो राणो सिरदार ॥५३॥
तेड्या सुहड दशो दिश वली, सेन्या सघली गढ़ मे मिली ।
कटक सझ्या घण हील किलोल, सबलज ढाई गढरी पोल ॥५४॥

कुमती रतन कहीए राण, तेड्यो गढ़ माहें सुलतांण।
गढ़ उतरे पहुँचांवण गयो, करे तोत रतन पकडीयो ॥५५॥

राजा तो पडिया तिण पास, असुर तणो केहो विस्वास।
पकड्यो नृप पदमणि पिण ग्रहें, गढ़ चीत्रोड हिवें नहीं रहें ।५६।

जसवंत बेंठां जुडि दरबार, जालिम तेड्या सह जुम्फार।
मांहो माहें करें आलोच, गढ़ मे हुओ सबलो सोच ॥५७॥

एक कहें लडां भूम्फागढ़ माह, एक कहे द्यो राती वाह।
एक कहें अधिपति सांकड़े, लडता जेहनें भारी पड़ें ॥५८॥

एक कहें नायक नहि माह, विण नायक हतसेन कहाय।
एहवो कोइ करो मत्रणो मान रहें हींदु ध्रम तणो ॥५६॥

इम आलेचे सामंत सहू, चित उपजी चित में वहू।
तितरें आयो इक परधान, हुकम करें छें इम सुरतान ॥६०॥

तेड्यो माहें नीसरणी ठवी, मंत्री माहें बुध जाणंग कवी।
इम जंपें छें आलम साह, तुमे कहो तेहनें द्यू वांह ॥६१॥

हमकुं नारि दीयो पदमणी, जिम म्हें छोड्डु गढ़ का धणी।
एम कहेनें गयो प्रधान, सवि आलोच पड्या असमान ॥६२॥

कहो हिवें पर कीजें किसी, विसमी वात हुई या जिसी।
जो आपा देस्या पदमणी, तो रिणवट न रहें आपणी ॥६३॥

विण दीधा सवि विगसें वात, पदमनि विन न मिलें कोइ घात।
ऐतो जोरें लेसी सही, जे आया छें इण गढ़ वही ॥६४॥

कवित्त

कहैं कुंअर जसवत, सुनहो उमराव प्रधानह।
रक्खहु गढ की मोभ, धरा रक्खहुं हिन्दवाणह॥
हैं राजा परवसें, नहे चल देखें भली।
देहुँ नार पदमनी, साह फिर जावें दिल्ली॥
गढ़ आय राण बैठहो तखत, चमर ढलाव हीतूक धर॥
सिल हेठ हाथ आयो सु तो, छल हिकमत काढही सीपर॥६५॥

चोपाई

सुभटे सघले थापी वात, हिवें पदमणि देस्या परभात।
इम आलोची ऊठ्या जिसे, पदमणि सवि साभलिया तिसें।६६।

कवित्त

कहैं पदमनि सुनि सखी, वात यह कुमर विचारें।
हम देई पतिसाह, धरा गढ राण उगारें।
मे सींघल उपन्नी, राजपुत्री कहेवानी।
गढ़पति रतन नरेश, भई ताकी पटरानी।
अव बहुरि नामह किण विध करहुं, म्हे कुळवती कामनी।
हिंदवांण वश लछन लगें, थूक थूक कहीइ दुनी॥६७॥
गढ़पति पकड्यो साह, राह जिम चंद गरासे।
विनु दोधे उगहेन, सुभट कइा ओर विमासें [ह]
भवसि जोग कछु सु यो मिट नही अवीतह
आप मुआ जुग बुडिहें, दुनीया नह उकत्तह।

मेर मरंत सबही रहीइ धरम, धर रक्खहि रक्खहिं धनी।
छूटहें हठ सुलतांन चित, जब मृत्यु सुनिहें पदमनी ॥६८॥
कहें पदमनि सुन स्याम, राम रघु सीता वल्लभ।
दशरथ सुन हो तु[ज्]भ्क,, तुमहि ल[ज्]ज्ञा कें ओठंभ।
औरन कोई इलाज, आज संकट दिन आयो।
धरही चितन मे दया, करहुं सतन को भायो।
असुराण राण पकड्यो रयण, चाहें मुझ मन मे चहू।
अनाथ नाथ असरण सर[ण्]ण, राख राख एती कहुँ ॥६६॥

सवैया

कैसें तुम मृगणी के गन निगणें भरथ,
कैसें तुम भीलणी कें झूठें फल खाये थे ॥
कैसें तुम द्रोपदी की टेर सुनि द्वारिका मे,
कैसें गजराज काज नाग पर धाए थे ॥
कैसें तुम भीखम को पण राख्यो भारथ मे ?
कैसें राजा उग्रसेन बंध थें छोराए थे ॥
मेरी वेर कान तुम कान बद बैठ रहें,
दीनबन्धु दीनानाथ काहि कु कहाए थे ॥७०॥

दूहा

पंखी इकलो वन्न मे, सो पारधी पचास।
अबके जऊहो उगरें, अ[ल्] ला तेरी आस ॥७१॥
सुभट भए सतहीन सब, आलिम पकड्यो राज।
साई तेरे हाथ हें, म्हो अबले की लाज ॥७२॥

चौपाई

अवसर इण हुओ छैं जेह, थिर मन करिनें सुणज्यो तेह ।
तिण गढ़ गोरो रावत रहैं, खित्रवट तणी विरुद भुज वहे ॥७३॥
तास भतीजो बादलराव, सर तानें भरिया दरियाव ।
ते वेवे छल बल रा जाण, वेवे रावत वे कुल भान ॥७४॥
पिण तेहनें नहि सुनिजर स्वाम, रोकड़ ग्रास नही को गाम ।
घरे रहैं न करें चाकरी, रतनसेन मुंक्या परहरी ॥७५॥
रावत वे जाता था जिसें, गढ रांहो मंडाणो तिसें ।
रुंधेगढ़ नवी जाइंतेह, जाता खत्रवट लागें खेह ॥७६॥
तिण [रे] कारण ग्रहिरहिया टेक, हिवें जास्या काइ हुआं एक ।
अंग तणो न तजें अभिमान, सूर महाबल जोध जुवान ॥७७॥
खत्री सोहि खत्रवट चलें, मरण हीए पिण नवि नीकलें ।
भुंडां भला पटातर जाम, खाया जेम हुवें खगजाम ॥७८॥
पिण तेहनें नवि पूछें कोय, जो पूछें तो इम काइ होय ।
जाणहार हुवें धरती जाम, सभ जोचंता राखे जाण ॥७९॥
चिंते चितमांहें पदमणी, गोरो बादल सुणीजें गुणी ।
त्यांसु जाय करु वीनती, बीजां माहि न दीसें रती ॥८०॥
इम आलोची पदमणि नार, सुखपालें बैठी तिणवार ।
आवी गोरल रें दरबार, साथें सयल सखी परवार ॥८१॥
गोरो सांमो धायो धसी, विनय करी नें आयो हसी ।
मात मया बहु कीधी आज, भले पधास्या दाखो काज ॥८२॥

सुभटें सगलें दीधी सीख, दया धरम री नहिं आरीख।
सीख दियो हिवें तुमें पिण सही, जिम असुरा घर जाऊं वही ८३
सुभट सवें हूआ सतहीन, प्रथवी खत्रीवट हुंई खीण।
सुभटे सगलें दाख्यो दाव, पदमनी दे नें लेस्यां राव ॥८४॥
हिवें तुमे सीख दिइयो छो किसी, कहोवात अधिकाई किसी।
गोरो जंपें सुण मुझ मात, होसी सघली रुडी बात ॥८५॥
जो तुम आया मुझ घर वही, तो असुरा घर जास्यो नही।
रजवट तणो नहीं संकेत, नारी देई कीजें जैत ॥८६॥
वलि मरवो रजपूतां भलो, आमों सामो करवो कलो।
स्त्री देइ ने लीजें राव, सकज न थाइ एह कुदाव ॥८७॥

कवित्त

तुं रजधर गोर [ल्] ल, तु ही सामंत सक [ज्] जह।
तु ही पुरस हिंदवाण, रांण धर सहु तुज भु [ज्] जह॥
वीरधीर वडवीर, तुँ ही दल वीडो झलें।
तुं मुझ दें अहेंवात, नारि पदमणि इम बोलें।
सुहडा अवर सतहीण सवे, यह जस तो भुजे हेंकिलो।
अलावदीन सुंखगांवलीं, हींदूपति छोडाविलो ॥८८॥

चौपाई

गोरो जपे सुण मोरी वात, गाजण हुंता वडा मुझ भ्रात।
तस सुत वादल छें वलवंत, तेहनें पण पूछों ए मत्र ॥८९॥
तव पदमणि गोरल ससनेह, पोहता जइ वादल रें गेह।
देख आवती थयो मन खुशी, वादल सांमो आयो हसी ॥९०॥

विनयवंत करि पग परिणांम, काका नें वलि कीध सलांम ।
गोरो जपें बादल सुणो, सुहडें थाय्यो ए मंत्रणो ॥६१॥
पदमणि देई लेस्यां राव, अवर न कोई चितें दाव ।
पदमणि आया आपण पास, आणी आफां मन विशवास ।६२।
हवें तु जेम कहे ते करां, नीचो देता लाजें मरां ।
आपें डीलें छां दो जणा, आलम साथे लसकर घणा ॥६३॥
कहो जीपेस्यां किम एकला, किला न होवें कदही भला ॥६४॥
तिण कारण तो पूछण भणी, आव्यो साथे ले पदमणी ।
हिवें करवो रणवट ने ठाह, आपें बेहु भुजे गजगाह ॥६५॥
पदमणि बादल सु इम कहें, सरण आवी हु तुम तणें ।
राखि सको तो राखो मुज्झ, नहि तर तेहिवां दाखो मुझ ॥६६॥
खाडु जीह दहुँ निज देह, पिण नवि जाउं असुरां गेह ।
लाखा जुहर करिनें बलु, पिण नवि कोट थकी नीकलु ॥६७॥
सील न खडु देह अखड, जो फिर उलटें देह अभग ।
सुहड करावें वलि भरतार, मुझ कुल नहीं हे ए आचार ॥६८॥
सील प्रभावें होसी फते, रिपुदल लागो झवों मते ।
रहें [अ] गढ़ नें छूटें राय, हुँ पिण रहुं सुजस जग थाय ॥६९॥
परमेसर पिण साहस साथ, अंत हथा करसी जगनाथ ।
लहो सोभाग दीधी आसीस, जीवो बादल कोड वरीस २६००

कवित्त

कहें पदमनि आसीस, अखें बादल अजरामर ।
तुं मुझ पीहर वीर, धीर चित मोरा चरावर ।

खग भाजड खुरसांण, माण रखहु हिंदवांगह ।
घुरें जेत नानाण, करे दुनीयाण वखाणह ।
संनाह स्याम सरण सुहड, एह विरुद तुझ भुज लहें ।
कर घालस्यां समुछां सुहड, तुज्झ अंक माथें वहे ॥२६०१॥

दूहा

अद धर बादल बोलियो, मरद जोस मयमत ।
गहके केहरी गाजियो, दूठ महा दुरदंत ॥२६०२॥
काका सुण बादल कहें, केहो कायर काम ।
रहा वेत सारा सुहड, एह असीणा नाम ॥२६०३॥
काका थे [का] चिंता म करो, अंग धरिहो उलास ।
तो हु बादल ताहरो, भत्रीजो स्याबास ॥२६०४॥
आलम भाजु एकलो, पाडं पिसुण खग रेस ।
कुलवट उजवालु किलो, आणु रतन नरेश ॥२६०५॥
बीडो झालयो बादलें, बोले इम बलवंत ।
तुं सत सीता दूसरो, हूं दूजो हनुमंत ॥२६०६॥
सती तुहारी सामिनी, मिलु महादल माण ।
घडि माहें आणु घरें, रतनसेन राजान ॥७॥
घरे पधारो पदमणि, मकरो आरत माय ।
बादल बोल्या बालड़ा, ते नवि झूठा थाय ॥८॥
प [च्] छिम सूर न ऊगमे, मेर न कपें वाय ।
सापुरसा रा बोलडा, फिरे न झूठा थाय ॥९॥

गोरो साभलि गहगह्यो, सूरिम चढी सरीर ।
कायर पूता कापवें. सूर धरावें धीर ॥१०॥

चौपाई

पदमणी घरें पधारी जिसें, बादल माता आवी तिसें ।
सुणल्यो सगलो ते संकेत, हिवड़ा माह न मावें हेत ॥११॥
नयण भरें मुकें नीसास, माता दीसें अधिक उदास ।
इण पर आवी दीठी मात, विनय करें पूछें सुत वात ॥१२॥
किण कारण तू माता इसी, कहो वात मन मानें तिसी ।
आरत केही छें तुम तणे, क्यूं ओ चित्त आमण दुमणे ॥१३॥
मात कहें सुण बादल बाल, मांडै कांय लीयो जंजाल ।
दूध दही तुं माहरे एक, तुम्ह विण कोई नहिं मुझ टेक ॥१४॥
वणा खाए मेगलिया ग्राह, सुहड रह्या छें तिकै विमाह ।
मासन वास नही नृप तणो, खरच खावाद्या निज गाठनो ॥१५॥
रिण विध किम जांणेस्यो सजी, घर विध वात न जाणो अजी ।
कहि कीधा छें तें संग्राम, अणजाण्या किम कीजें काम ॥१६॥
आलिम किण पर गज्यो जाय, आटें लूंण किसा नें थाय ।
बादल पूत अछें तूं बाल, रिण संग्राम तणो नहि ताल ॥१७॥
अलगा डुंगर रलियामणा, हुंस हुवें अण दीठा तणा ।
जुद्ध तणा मुख भला अदीठ, वात करंता लागे मीठ ॥१८॥

यतः दूहा

डुंगर अलगा थी रलियामणा, दीसें इसरदास ।
नेड़ा जाय निरखिजें जदी, कांटा भाठां नें घास ॥१९॥

चौपाई

सीह सबद सुण मेयगल घटा, नासें सगला तेपिण कटा।
जिम आलम भांजु एकलो, गढ़ चीतोड़ दिखाउं भलो ॥२०॥

दूहा

एक संहेस एकलो, एक एकला घणाह।
सींघ सहेसें चोटियो, जोखे जणा जणाह ॥२१॥

कवित्त

रे बादल कहें मात, बात तुं बीछ करारी।
परिहर मन अभिमान, बोल बोलहुं विचारी।
सुभट होयें दसबीस, तास वलि आरंभ कीज्यें।
आलिम साह अथाह, समुंद किम बाह तरीज्यें।
बालक गत ओछंछलि, जूझ बूझ जाणों नही।
सुझ वयण मान सुवसाय कर, तो सुपूत बादल सही ॥२२॥
हुं कित बालो माय, धाय आंचल नवी लगु।
हुं कित बालो माय, रोय नही भोजन मगूं
हुं कित बालो माय, धूलिढिग माँहि न लोटुं
हु कित बालो माय, जाय पालणें नही पोढुं।
जा जुल नाग आलम जुवन, जास जुद्ध छोड़ ग्रहें।
रण खेल मचाऊं बाल जिम, नही माय बालो कहें ॥२३॥
तव फिर जपें माय, बात सुन पूत अधीरह।
गढ रोक्यो असुराण, सुभट सबल ए अधीरह।

पकड्यो राव परहत्थ, कत्थ न हुं झूठ करीजें
नहि सामंत तुझ भीर, झूझ कहा मोभ लहीजें।
रढ़ चढ़ हुं लहु बालक जिम, कहें बालक दुख क्युं धरुं।
साह ए समु द सुलताण दल, भुजबलि जिम दुतर तरहुं ॥२४॥
कहें बादल सुण मात, कहा फिर फिर बाल (क) कह।
जेठी नट जूझार, दाम गायण हे पायकह।
वस्त्र सस्त्र कवि रुप, गयंद त्रिय गाह कवित्तह।
एते सब बालक्क [ह], मोल मुंगा जिन तन्नह।
बालुए कान काली दिख्यो, बाले गज देसीस दिय।
अरि सेन चाव बालक्क जिम, देखि ख्याल करी दृढ़ हिय ॥२५॥
कहें बादल सुण मात, देखी एह बात विचारी।
प्रथम सामी साकडें, कष्ट भुगतहि तन भारी।
असपती गढ़ विग्रहो, रह्यो न सुहडा धीर [ज्] ज।
राजकुमार बाल [क्] क, तास निज नाही स बीरज।
पदमणी मुझ पयठी मर [ण्] ण पेख्ख विचख्खन बात सब।
निज वंस अंश ऊज्जल करण, इह अवसर फिर मिलहि कब ॥२६॥

चौपई

सुतनो सूरपणो साभली, माता मन माहे कल मली।
वरज्यो वचन न मानें रती, तब गई मेली मेठलवती ॥२७॥
बात सहू बहूअरनें कही, जई राखो निजपति ने ग्रही।
म्हारी सीख न मानें तेह, रहेंसी भेट तुमारो नेह ॥२८॥

सवी श्रृंगार सझै मात्रता, पहिरी वस्त्र भला भावता ।
हाव भाव करें वचन विलास, जिण पर तिण पर पाडैं पास ॥२९॥
एम सुणि वहूअर नीकली, झबकती जाणें बीजली ।
सकुलिणी सझ सोल श्रृंगार, आवे वेगि जिहा भरतार ॥३०॥
रूपें रंभ जिसी राजती, मृगनयणी सुन्दर गजगती ।
नयणें निरमल देख्यो नेह, सामधरम दाखें ससनेह ॥३१॥
कोमल वदन कमल कामनी, दीपें दत जिमी दामनी ।
हस्त वदन बोलें हितकरी, स्वामी वात सुणो माहरी ॥३२॥
आलिम दूठ महा दुरदत, कहीनें किण पर जूझो कंत ।
अरि बहुला ने तु एकलो, इसें मतें नवी दीसें भलो ॥३३॥
ते हुं पुरख नही बादलो, जोए जिण पर माडु किलो ।
वलती अरज वली [ॐ] हसी, जात नहीं छे जोवा जिनी ॥३४॥
हींसे खेंग सींधुर सारसी, गलबल हूगल करे पारसी ।
सोखें खिण इक माहें तलाव, मुख मकड चित दुष्ट सुभाव ॥३५॥
भुरज उडावें दे दे ढूला, मास भखें वाणें अलगला ।
ऊडंता पंखीया हणें, बाले बाधी कोडी चुणें ॥३६॥
बादल बोलें वलतो हसो, तें ए वात कही मुझ किसी ।
हैंवर गेंवर पायक पूर, एकण हाक [क] रु चकचूर ॥ ३७ ॥

दूहा

इह त्रिय सुणि बादल वयण, जंपें तीय जुवान ।
त्रिया सैझ गजी नहीं, किम गंजसी सुलतान ॥ ३८ ॥

चौपाई

खडग युद्ध विसमों छें सही, कूडी रीस न कीजें कही ।
मुझ तन हाथ न घाली सको, भोगी स्वाद लहँ जे थको ॥३६॥
असपति घडि विसमा वींदणी, भमुह चढावें मेलें अणी ।
जरह कंचुकी भीडत अंग, विलकुलियो मुख रातो रंग ॥४०॥
मलपें मयमत नारी जेम, वचन विरस चित न धरे पेम ।
अमंगल सींधू नद गावती, छल धर ती डा कुल वावती ॥४१॥
पोरस तणो देखालिस तेज, तिण दिन आविस ताहरी सेज ।
जालिग पिसुण वखाणें नही, गुणीयण विरुद न द्यें उमही ॥४२॥
तां लग केहा सूर सधीर, वल्लभ मानें जेह सरीर ।
लोही सांटें चाढ़ें नीर, ते कुल दीपक वावन वीर ॥४३॥
जव नारी जंपें कर जोड, अवर नही को ता [ह] रें जोड ।
भलो भलो कहेंसी ससार, सामधरम रहेंसी आचार ॥४४॥
जिम वोलें छें तिम निरवहें, मत किण वातें जाए ढ़हें ।
लाज म आणो कुल आपणें, सामी साहस जूझें घणें ॥४५॥
जीवन मरण सदानु नाथ, हुं नवी मुंकुं प्रीतम साथ ।
घणो घणों हिवें कासु कहुँ, जिम करज्यो तिम हु गहगहुं ॥४६॥
कंत कहें साभल सुंदरी, मोटा वश तणी कुंअरी ।
वोल्या वोल भला तें एह, हित वाछें सोही ससनेह ॥४७॥
ओछा घर की आवें नार, कुमत दीए पूछ्या भरतार ।
तें कुलवंती नारी तणों, महीयल सुजस वधार्‍यो घणो ॥४८॥

अस्त्री आंण दिया हथियार, सभी आऊध उठ्यो तिणवार।
विनय करी माता पग वंद, चंचल चढ़ि चाल्यो आणंद ॥४६॥
गोरा पासें आयो गहगही, काका धीरप राखो सही।
एक वार देखु पतिसाह, देखु कुंअर तणो पिण माह ॥५०॥
कहें गोरो बादल सुण वात, मुझ तुझ एक अछे संघात।
तुं जावें हुं पाछें रहुं, ए वातें किम सोभा लहुं ॥५१॥
काका न कीजे काची वात, हुं जावुं छुं मेलण घात।
रिणवट्ट मुझ तुज्झ हें साथ, इण वातें मुझ देखण हाथ ॥५२॥
गोरो रावत राखें घरें, बादल चालो साहस धरें।
सुभट सहु मिलिया छें जिहा, बादल रावत आवें इहा ॥५३॥
सांमधरम सरणें साधार, रिम दल गाहण सबल अपार।
जाणें कुल कीरत धन धस्यो तेज-पूज सूरज अवतर्‍यो ॥५४॥
सभा सहू देंखी खलभली, सूरातम सामंत अटकलि।
बादल कबहि न आवें सभा, ग्रास न लाभें नहि घर विभा ।५५।
सकें तो काइ विमासी वात, गाजण सुत ए सूर विख्यात।
सुभट राय सुत बेठा जिहा, कियो जुहार आवी नें तिहा ॥५६॥
उठ सुभा सहू आदर दिए, बेंठा बादल तव दृढ़ हिए।
पूछें सुभा प्रयोजन आज, कहो पधार्‍या केहें काज ॥५७॥
बादल बोलें वहिसे इमो, कहो तुमे आलोचो किसो।
सुभट कहें बादल सभलो, सबल मंडांणो इण गढ किलो ॥५८॥
अडियो आलम अवलीबाण, गढ़पति ग्रहियो रतनीस राण।
गढ़पिण लेस्यें हिवडा सही, द [ल्] ली पत बेंठो हठग्रही ॥५६॥

दूहा

सुण साहिब आलम अरज, मैं पद्मणि का दास।
यह रुक्का हमकुं दिया, हैं इसमें अरदास ॥ ७९ ॥
जो मैं देखुं वदन छत्र, मेरे कुछु न चाह।
इन्द्रपुरी किह काम की, प्रीत नही जिम माह ॥ ८० ॥
रुक्का आलम हाथ सू, बाचत धर ऊछाह।
ताती बाती विरह तें, मेटत ही जल दाह ॥ ८१ ॥
निस बासर आठो पहर, छिन ही न विसरें मोह।
जिहा जिहा नयन पसारहुं, तिहा तिहा देखें तोह ॥ ८२ ॥
साह तुमारे दरस कुं, अरध रहयो जिव आय।
कहो क्या आग्या देत हो, फिर तन रहें कें जाय ॥ ८३ ॥
प्रीत करी सुख लेण कु, सो सुख गयो दुराय।
जेसें साप छछूंदरी, पकर पकर पछताय ॥ ८४ ॥
बाती ताती विरह की, साहिब जरत सरीर।
छाती जाती छार हुइ, ज्युं न वहत दृग नीर ॥ ८५ ॥

कवित्त

कहैं पदमनि सुन साह, वाह तुम रूप बडाई।
[अहो] काम रूप अवतार, अहो तेरी ठकुराई ॥
मुझ कारण हठ चढ़े, आप ग्रही खग उनंगें"।
पकड्यो राण रतन्न, वचन विसवास उलंघे ॥
अब बैठा है करि मोन मुख, कहा तुमारें दिल वसी ॥
जेही काज एतो कियो, सो क्युं न करहो खुशी ॥ ८६ ॥

में तेरी पग दास, में (हूं) तेरी गुण वदी।
तुम रहिमान रहीस, मे हुं त्रिय आव मगी दी।
में तो यह पण किया, सेज आलम सुख माणुं।
ना तर तजिहुं प्राण, अवर नर निजर न आणुं।
अब करिहुं [बहु] राज मानहुं अरज, हुकम होय दरहाल इह।
में आय रहुं हाजर खडी, छोडि देहो हिंदवाण पह ॥ ८७ ॥

चोपाई

जब भेजे आलिम परधान, द्यो पदमणि छोड़ें राजान।
सुहड कहें वलि मरसा सही, पिण पदमणि को देस्या नहीं ॥८८॥
मे समझाय सुभट सामंत, वीरभाण कुंअर जगजंत।
क्युं क्युं आज ठवें छेकान, तिण जाणु छूं विणसे बान ॥ ८९ ॥
पदमणि मुंक्यो हुं तुम भणी, विनय भगत विनवें घण घणी।
वलें जिका होवें छें वात, आवे कहेस्युं ते परभात ॥ ९० ॥
सीख दियो पत्री पढि सही, पदमणि पासे जाऊं वही।
जोती होसी म्हारी वाट, करती होस्यें अति उचाट ॥ ९१ ॥
विरह विथाकुल [न ख] मे विरहणी, काम पीड दाहें पदमणी।
तुम संदेस सुधारस जिसा, पाउ जाइ कहुं तिहा तिसा ॥ ९२ ॥

दूहा

असपति इण पर सांभली, पदमणि प्रेम प्रगास।
वयण बाण वेध्यो घणो, मुंकें सबल निसास ॥ ९३ ॥
पत्री वाची प्रेम सुं, चतुराई सु- विचार।
कागद कर मुंके नही, नयण लगाई तार ॥ ९४ ॥

पदमनि द्या तो छूट पास, नहितर गढ़री केही आस ।
गढ जाता कोई नवि रहें, वले करा जें तु कहें हिवें ॥६०॥
बादल बोले भलो मंत्रणो, तुम आलोच कियो छ घणो ।
पदमणी आप देस्या नही, गढपति नें छोडावा सही ॥६१॥
इम करता जे आवा काम, कुलवट रहसी नामो नाम ।
काया साटे कीरत जुडें, [तो] मोले मुंहगी नवी पड ॥६२॥

दोहा

सींह न जोवे चंदबल, नवि जोवें घर रिद्ध ।
एकलो ही भाजें किलो, जहा साहस तिहा सिद्ध ॥६३॥

चौपाई

सूरातन चित धीरज उगाह, परमेसर त्या आवे वाह ।
तिवें आदरज्यो सतध्रम तणो, सुहडा धीरज दीज्यो घणो ॥६४॥
हु जाउं छू लसकर माह, आवु बात सहू अवगाह ।
करि जुहार बादल अश्व चढ्यो, साहस सूर सूरातम चड्यो ॥
गढ़री पोल हुंती ऊतर्यो, बुद्धिवंत नें साहस भर्यो ।
निलवट दीपें अधिको नूर, प्रतपें तेज घणो बड पूर ॥६५ ।
सलहें अंग सझ्या सात्रता, पहिर्या वस्त्र भला फावता ।
आव्यो एकल मउ असवार, जाणे अभिनव इन्द्र कुंआर ॥६६॥
आवत दीठो आलम जिसे, ए आवें हें कारण किसे ।
पूछण मुक्या सामा दूत, क्युं आवत हें ऐ रजपूत ॥६७॥
आयन किमे पूछ्यो तेह, बोलें बादल अती सनेह ।
आव्यो एक कहेवा वात, पदमणि आंण देऊ परभात ॥६८॥

आलिम मांने मुझ मत्रणो, तो उपगार करुं हुं घणो।
जाय न किम आलम सुं कह्यो, इम निसुणि असपति गहगह्यो ६९

माहें तेडायो देइ मान, दीठो असपति भिड असमान।
तेज तेख दिनकर थी घणी, हुकम कियो खुस बैंसण भणी ॥७०॥

बेठो बादल बुद्धि निधान, असपति पूछें करि वहुमान।
क्या तुम नाम कसी का पूत, अब किसका हें ते रजपूत ॥७१॥

क्या तुमको हें गढ़ मे श्रास, को अब आए हो अब पास।
बोलें बादल वलतो हसी, रोम राय घट सहू उगसी ॥७२॥

अवसर बोली जाणें जेह, मांणस माहें जणावें तेह।
विनय करें कर जोड प्रमाण, करिहुं अरज पाऊ फुरमाण ॥७३॥

नाम ठाम सहू विगतें कह्या, महरबांन तब आलम थया।
बादल बोल्यो साहस धरी, स्वामी वात सुणो माहरी ॥७४॥

पदमणि मुंक्यो हुं परधान, सुहड न मेंलें निज अभिमान।
पदमणि देख्या तुम कुं हेठ, भोजन करता लागी देठ ॥७५॥

तिण दिन थी ते चिंते इसो, कामदेव वलि कहीइ किसो।
धन तस नारि तणो अवतार, जिसकें आलम हें भरतार ॥७६॥

विरह विथाकुल बेंठी रहें, अहनिस सुहिणें आलम लहें।
निपट घणा मु के नीसास, अवला दीसें अधिक उदास ॥७७॥

आलम आलम करती रहें, मुख करि वात न किण सुं कहें।
मुझ तेडी ए दाख्यो भेद, मुंक्यो करवा विरह निवेद ॥७८॥

कामण वाण कुण सहि सकें, दाभें सारी देह।
सुन्दर तणा संदेसडा, निपट वधारें नेह ॥ ६५ ॥
वार वार चुंवन करें, रुक्का कुं मुखलाय।
अजब पढी है पदमणी, खूब लख्या ए माह ॥ ६६ ॥
असपति थो अहि सारिखो, सही न सकंतो कोय।
खील्यो बादल गारुडी, पदमणि मंत्र परोय ॥ ६७ ॥

चौपाई

असपति बोलें बादल सुणो, तुं मेरें वल्लभ पांहुणो।
भगत जुगत केती कहजीइं, तेरी अकल वसी मुझ हीइं ॥ ६८ ॥
पदमणि सुं कहियो मुझ प्रीत, रुडी पर भाखें सहु रीत।
जो हम हाथ आई पदमणी, तो तुझ कुं द्यु धरती घणी ॥ ६९॥
सुभट सहू समझावें घणा, थिर कर थापै ए मंत्रणा।
तुझ नुं करस्यु देशज धणी, दूध डाग दिखलावे घणी ॥२७००॥
इस कही कर सुती निज नाह, पहिराव्यो बादल पत्तिसाह।
लाख सोनिया दीधा सार, हेंवर गेंवर देश अपार ॥ २७०१ ॥
रुक्का लिख देहुं तुम हाथ, माहें लिखहुं प्रीतम गाथ।
रुक्का ल्युं नहि आलम तणा, कोइ वाचें तो भाजें मत्रणा ॥ २ ॥
मुख सुं वात करुंगा घणी, विरह वात सहु आलम तणी।
मुझकु सीख दीयो सुपसाय, आलम साह दीयो पहोचाय ॥३॥
सोवन पांट हमाला सिरें, हय हीसें घंसारव करें।
इण पर आयां चित्रगढ माह, पूछें वात सहू परचाह ॥ ४ ॥

रीझ मोकली निज घर ज्यार, माता हरख थई तिणिवार ।
देखी साह तणो सिरपाव, देखी सूरातम दरियाव ॥ ५ ॥
गोरो रावत मन गहगहयो, करसी वादल सगलो कह्यो ।
हरखित नार हुई पदमणी, ए मेलवसी सही मुझ धणी ॥ ६ ॥
सुभट सहू चमक्या मन माह, वादल माहे अधिको आंह ।
सगत न छानी राखी रहें, वाधी अगन होवें तो दहें ॥ ७ ॥

दूहा

विधना ज्यां वुहि गुण दियो, नित दो मति मन मद ।
जे कुंडे किम छाइए, छिप्यो रहे कित चंद ॥ ८ ॥

चौपाई

वादल वम कीयो मंत्रणो, कहुं वात तें सहु को सुणो ।
वीस सहम सझ करो पालखी, वात न किणही जाई लखी ॥ ९ ॥
ऊपर अधिक करो ओछाड, पाखतिया वाधो पतिवाड ।
दो दो सुभट रहो मा माह, वाधी सस्त्र सलह संन्नाह ॥१०॥
लागे लार करो पालखी, कहमा माहें छें तसु सखी ।
विचें पालखी पदमणि तणी, परठी सोभ करो तिण धणी ॥११॥
साचो पदमणि रो स्रिंगार, ऊपर थापो भंवर गुंजार ।
तिण मे रावत गोरो रहो, वात रखें कोई वारें कहो ॥१२॥
छेटी विचें न राखो रती, लारो लार करो पागती ।
गढरी पोल ममीपें वार, सेन ममीपें आणो पार ॥१३॥
एम करी हिवें तुम आवज्यो, वेला वहुली पडखावज्यो ।
हुं विच जाय करुं छुं वात, मिलस्यां जिम तिम वातोधात ।१४।

हुं ले आवेसुं राजान, पोहचावेस्यु नृप निज थान ।
पछे करेस्या सबलो कलो, ए आलोच अछें अति भलो ॥१५॥
सुभटे सगले मानी वात, परठ करंता थयो प्रभात ।
भेद सहू समझावी घडी, चाल्यो बादल चंचल चडी ॥१६॥
पोहतो जाय लसकर माह, जहा बेंठो छें आलमसाह ।
जाए बादल करी सलाम, हरखित बोलें असपति ताम ॥१७॥
बादल साचा कह सदेश, बगसुं बोहला तोनें देस ।
बादल अरज करें परगडीं, स्वामी वात सिराडें चढ़ी ॥१८॥
कटक सहू समझावें नीठ, पदमणि आणी गढ़रें पीठ ।
सुहड सहू भाखें छें ऐह, निसुणी स्वामी विनती तेह ॥१९॥
पदमनि सुं ज्यो छें तुम काम, तो हिवें राखो मामो माम ।
अतरो हुवें हमकुं [वे] वेसास, पदमणी आणु जिम तुम पास ।२०।
असपति बोले वलतो एम, कहो विसवास हुवै तुम केम ।
बादल कहें श्री आलम सुणो, विदा करो लसकर आपणों ॥२१॥
सुहड सहू बोलें छें मुखें, वेही स्वारथ चूको रखें ।
पदमणि लेइ न छोडें राव, रखे उपावो असपति दाव ॥२२॥
पहिली पण कीधो छें कूड, तिण वैसास मिल्यो छें धूड ।
तिण कारण कहु आलम साह, लसकर सबही करो विदाह ॥२३॥
जो वलि बीहो तो असवार, पासें राखो सहस बे च्यार ।
अवर द्यो सहुं आगें चलाय, जिम विसवास अमां मन थाय २४
इम सुणीनें थयो उतावलो, बोलें आलम अति बावलो ।
हम अबीह बीहें किस थकी, बादल एसी तें क्या कथी ॥२५॥

हुकम कियो असपति हुंसियार, कूच कराव्यो लसकर लार।
सहस वे च्यार रहो हम पास, हींदू कुं होवें वैस्मास ॥२६॥
लसकरिया जव लाधो दूदुओ, हरख घणो मन माहें हुओ।
लसकर कूंच कियो ततकाल, चाल्या सुभट विकट विकराल ॥२७॥
मीर मुगल को [इ] खांन निवाव, मुगल पठांण घणी जस आभ।
पद्मणी सनम करें जे भणी, आगे चलाए दल्ली भणी ॥२८॥
विया विया जे जो रण कट्टा, एकेला भाजें गज घटा।
डाईल साह नांणें विस्वास, तिण कारण राखण भिड पास २६
सूरा सूरा सहस वेच्यार, असपति पास रह्या असवार।
आलिम वोले वादल सुणो, कहियो कीधो हैं तुम तणों ॥३०॥
वेग मंगाव्रो अव पदमणी, पालो वाचा आपापणी।
लाख महोर तव रोकड दिया, पहिरावणी वागा समपिया ३१
ते लेई वादल आवियो, हरख्यो माय तणो तव हियो।
तव सुइडा सुं कही संकेत, हवें जगदीस दियो जेंत ॥३२॥
तुमें संकेत रूडो राखज्यो, पालखी तुमे लेई आवज्यो।
मत किण वात हुओ आखता, रखे लगावो काई खता ॥३३॥
इम कहीनें आगो संचर्यो, पालखिया पूठें परवर्यो।
राघव व्यास जे वुद्धिनिधान, स्वामिद्रोह थी नाठी सान ॥३४॥
छलवल एन लिखाणी काइ, लुंण हराम तणो परभाइ।
असपति दीठो आवत वली, वादल वात करो निरमली ॥३५॥
साहिव साभल मुझ वीनती, पदमणि एम कहें गुणवती।
आवुं छुं हजरत तुम गेह, आलिम धरज्यो अधिक सनेह ॥३६॥

पण सोहागण मुझन करें, एह अरज मन मांहें धरे।
एम सुणि ने आलिम कहे, पदमणि आपें आदर लहें ॥३७॥
पदमणि नारि तणा नख एक, तिण सरीखी नहि नारी एक।
पद्मणि कारण म्हें हठ कियो, वयण लोपि रांणो ग्रहि लियो ३८
मुझ मन खात अछें तिण तणी, मानीती करस्युं पदमणि।
अवर हुरम करसी पग सेव, पदमण कुं पधरावो हेव ॥३६॥
एम कही वलि वादल भणी, परिघल दीधी पहिरावणी।
ते लेइ वादल आवियो, पदमणि नारी वधावियो ॥४०॥
सुभटा नें सहु भाखी वात, जई मेलावस्युं धातो धात।
तुम सहु वाह रहेज्यो इहा, वात रिखे को [इ] काढो किहां॥४१॥
आयो वादल असि पर चढ़ी, नव नव वात कहें मन घडी।
होठें वुद्धि वसें तेहनें, कसी उणारथ छें जेहनें ॥४२॥
वात कहंता लागें वार, फिरि वादल आयो तिणवार।
परगट आण धरी पालखी, आलिम देखें सहु सारिखी ॥४३॥
वादल विच विच में वलि फिरें, पदमणि [नें] मिस वाता करें।
रह्यो पहर दिन एक पाछलो, लसकर दूर गयो आगलो ॥४४॥
किला तणी जव वेलां भई, तव तिहा वादल बोलें सही।
हजरत एम कहें पदमनी, मुझ ऊभां थई वेला घणी ॥४५॥
म्हारी एक सुणो अरदाश, जिम हुं आवुं तुम आवास।
रतनसेन मुको इकवार, तिससें वात करूं दोय च्यार ॥४६॥
ले राजा आवु दरवार, जेम रहें कुलनो आचार।
आलम बोले सुण वादला, पदमनि बोल कह्या तें भला ॥४७॥

यह बोलें हम होवें खमी, पद्मणि न्याय कहीजें इमी ।
हुकम दियो आलम ततकाल, छोड्यो रतनसेन भूपाल ॥४८॥
बादल माहें छुडावण गयो, रांणो रूस अपूठो थयो ।
फिटरे बाद ल] मुह म दिखाल, सबल लगावी मुझनें गाल ॥४६॥
बेंरी बेंर घणो तें कियो, पदमणि साटें मोनें लियो ।
खत्रीवट मांहें नाखी खेह, खत्री निसत थया सवी गेह ॥५०॥

कवित्त

फिट बादल कहे राव, वाच चूको हिंदवाणह ।
खत्री ध्रम लज्जीयो, मिट्यो भिड मान गुमांनह ।
सांम ध्रम लोपीयो, लूण तामीर न कीनी ।
जीवत शमलें खाल, नारी असपति कुं दीनी ।
कहा करुं म्हें परवस पड्यो, वाच लोप आलिम भयो ।
सत छोड कितो अब जीवहें, तबहीं नीर उतर गयो ॥५१॥
कहें बादल सुनि राव, वाच हिंदवाण न चुक्कहीं ।
खत्री ध्रम ऊजलो, सुहड धीरज न मुक्कही ॥
सांम ध्रम रख्खहें, जग सबहीं कु प्यारो ।
मुगतिहो गढ चितोड, इला कीरत बिसतारो ॥
मकर [क्रो] सेव असपत्तरी, असपति साहिली मेलियो ।
महिमान मांन दीजें सदा, करहुं आद पुब्ब कह्यो ॥५२॥

दूहा

महिल अगनीत गढमधर, ग्रही तस राज गहिल्ल ।
उस आलम कित हीर सुं, सब विध होय सहेल्ल ॥ ५३ ॥

राख रजा सिर राम की, धरि मन उमग उछाह ।
राज पधारो चित्रगढ़, सब विध होसी [स] लाह ॥५४॥

कवित्त जात आदि अक्खरा

राव करहुं मन ग्यान, जवनपती हठ हमीरह ।
गुमर किए रस नहीं, ढ़लकी अजलियह नीरह ॥
परा लेखयो कछू धात, निम्यो निस छति रोस छड्डिइ ।
डाव विन घाव होवें नही, वाचहुं पढमख्खर हीइ ॥५५॥

चौपाई

भूप प्रीछ उठ्यो तिणवार, असपति बोलें चित्त अपार ।
पद्मणि ने मिल आवो जाय, पीछें सीख दीए हित भाय ॥५६॥
राजा चाल्यो पद्मणि भणी, सुखपाला देखी घण घणी ।
पेंठा माहिं जिसें पालखी, वाच सहू साची तव लखी ॥५७॥
वादल बोलें राणा सुणो, अवसर नही ए वाता तणो ।
एक थकी बीजी अवगाह, गढ लग पहुंचो मविका मांह ॥५८॥
स्वामी थाज्यो घणु सजेत, माहें जई कीज्यो सकेत ।
साचो कीनो ए महिनाण, दीज्यो डाका जेंत निसाण ॥ ५९ ॥
रतन तुंहारें वखतें सही, मत्र भेद पिण हुओ नही ।
सांमधरम नें सत परिमाण, गढ रहियो नें छूटो राण ॥ ६० ॥
एम सुणी राजा रंजिओ, साई सफल मनोरथ कियो ।
कुसल खेम पोहंता गढ़ माह, जाणक सूरज मुंक्यो राह ॥६१॥
कुसल तणा बाजा वाजिया, तव ते सुभट सहू गाजिया ।
नीसरिया नव हत्था जोध, माण दुसासन वेंर विरोध ॥६२॥

राघव तणो हुओ मुख स्यांम, कूड कियो पिण न सर्यो कांम
सामद्रोह पातिक परगट्यो, अकल गईनें पोरस मिट्यो ॥६३॥

साम काम समरथ अतिसूर, गोरो रावत अतिहिं गरूर ।
अरीदल देखी तन उलसें, सुभट सहू मन माहें हसें ॥ ६४ ॥

सूरातन चढ़िया सिरदार, ऊँचा खग जलहल जूझार ।
दलां विभाडण दूठ दुवाह, रुक हत्था दीपें रिम राह ॥ ६५ ॥

च्यार सहस निसरिया सूर, एक एक थी अति करूर ।
आगुवांणें बादल गेह, पूठें सांमंत थाट सबेह ॥ ६६ ॥
बाधट दीसें भिड घणा, सिलह टोप करी रुद्रामणा ।
धमिया छूटी ले तरवार, हलकारे लागा हलकार ॥ ६७ ॥
रे रे असपति ऊभो रहे, हिवें नासि मत जावो वहें ।
म्हे पदमणि आंणी छें जिका, तोनें हिव देखाडा तिका ॥ ६८ ॥
तोनें खांत अछें तिण तणी, पदमणि नार निहालण तणी ।
हठ हमीर जाणो तो सही, लडें असा सु अवसर अही ॥६९॥
इम कहंता भिड आया जिसें, आलिम दीठा अरियण तिसें ।
एहवी वात कहें पतिसाह, रिण रमियो उठियो रिम राह ॥७०॥
रे रे कूड कियों बादलें, हिंदू आय वाल्या साकलें ।
हलकार्‌या असपति निज जोध, धाया किलकी करि करि
क्रोध ॥७१॥

माहों मांह मंडाणो किलो, बोलें असपति सुं बादलो ।
पातिसाह मत छाडो पाव, तेरा कूड असीणा घाव ॥ ७२ ॥

कवित्त

सुणि वादल कहै साह, वाह तुम बोल भलाई।
मुख मीठा दिल कूड, इहैं हींदू न कराई।
पदमण करी कवूल, तुम्हें सिरपाव दराया।
छोड़्या राण रतन्न, सबे दल दूर वलाया।
अब लडिहां खग वुलहू अकथ, काफर गु डाई धरहुं।
हम सरिस चूक देखहुं सुतो, मुरख अण खूटी मरहुं ।।७३।।
कहैं वादल सुण साह, राह पहैंली तुम चूकें।
दे वाचा गढ़ देख, बहुर तुम राव ही रुक्के।
हम हींदू के मीर, निरख रखही कुलवट्टह।
पदमणी दे ल्यें धणी, इहे हम लाज निपट्टह।
अब करहुं जुद्धि जूठा न कहुं, कहा रह्यो रम हम तुमह।
ग्रही खग लडहु म धरहुं गरव, वर तस नहि अवसान इह ।।७४।।

चापाई

आलम ताम हुआ असवार, जोधा मुगल पठाण जुम्हार।
भिड्या खाग रिण मचियो दूठ, सुभट न दाखें कोई पूठ ।।७५।।
खेहाडंवर उड्यो इसो, सूरज जाणें वघुल्या जिस्यो।
वांण विछूट चिहुं दिश घणा, रुड्या नगारा सींधू तणा ।।७६।।
खडग झलक्क उ[जू] जल धार, जाणक वि[जू]जल घण अधार।
संन्नाहें तूटें तरवार, जागें झाल अगनि अण पार ।।७७।।
कुंत अणी फूटें सूमरा, तूटें कालज नें फेफरा।
उडें चूर वहैं रत खाल, गुंजें सी घा[म] घण असराल ।।७८।।

वहैं तीर चणणाट पखाल, झड मातो तातो वरसाल।
पडें मार गूरज गोफणी, फौजा फूटें तूटें अणी ॥७९॥
मार मार कहि वाहें लोह, रण लूथ्या सामंत छंछोह।
खान निबाव गड्डू थल खाय, हजरत करें खुदाय खदाय ॥८०॥
नारद कलकी करि करि हाम, गीरध मांश तणा ले ग्रास।
धड ऊपर धड ऊछल पडें, केता सामत सिर विण लडें ॥८१॥
रिण चाचर नाचें रजपूत, धुंकल माचवियो रण धूत।
धन धन कहैं सूरज धीरवें, अपछर माला कंठें ठवें ॥८२॥

दूहा

इत असपति तोबा वकें, इत हलकारें राण।
तिण वेला वादल तणा, अडिया भुज असमान ॥८३॥
कुण तोलें जल सायरा, कुण ऊपाडें मेर।
वादल तो विण सामरें, (हसु') कुण झालें समसेर ॥८४॥
दला विभाडण साहरा, ऊपाडें गज दंत।
तु (ज्) झ भुजा गाजण तणा, बलिहारी बलवंत ॥८५॥
जावें असपति रीझियो, मुहडा खमी सवाव।
खागें खान निवाव नें, तें ऊतारी आव ॥८६॥
हसियो आलम जाम सुणि, खग खसियो खत्रि सार।
तुं वेधालक वादला, अंगद रो अवतार ॥८७॥
वावा खान निवावरा, फाटा ऊभा फेह।
वाका सुणिया जग सिरें, वाजंतें डाकेह ॥८८॥
महि डोलें सायर सुसें, प(च्) छिम ऊगें भाण।

बादल जेहा सूरमा, क्यां चूकें अवसाण ॥८६॥
रिण डोहें फिर फिर खला, खडा धपावें धार ।
पारीसें पिडहार ज्युं, नह भूलें मनुहार ॥६०॥
घड पति साई बींदणी, मद जोवन मयमंत ।
मुझ मन परणेवा तणी, खरी चिलग्गी खंत ॥६१
सुण गोरा बादल कहें, तुं सामत सकज्ज ।
तुं दल नायक हींदुआ, तुज(झ) भुंजें रिण लज्ज ॥६२॥
तु सीध चाढ़ण सूरमा, उजवालण कुलवट्ट ।
तु बांधें पतिसाह सुं पेतों डर रणवट्ट ॥६३॥
बांधे मोड महाबली, बांधें अभि गज गाह ।
सिर तुलसी दल घालिया, डहियां खाग दुबाह ॥६४॥
केसरिया बागा किया, भुज ऊवांणे खाग ।
जांणक भूखो केहरी, जुड़वा नाखें खाग ॥६५॥
सूरज हुंत सलांम कर, वलि मुंछा वल घाल ।
सु पतीसाहा सम चढ़ें, आयो रणवट जाल ॥६६॥
भरे डांण दईवान भति, राम रांम मुख रट्ट ।
अकल तें रण ऊरियो, मामी लोह मरद्द ॥६७॥
रुडें नगारा सिंधूआं, रिण सूरातन र[स्] स ।
मद आयो गोरो मरद, अडियो सीस डरस्स ॥६८॥
आवें असपति आगलें, इसो उडायो खाग ।
पायर पाखल पाधरें, जाणें हणुमत बाग ॥६६॥

हाका करि किलकी हसें, डसें रिमा जिम नाग ।
तिण वेला त्रिजडा हथो, करें पकंदा घाव ॥२८००॥
आडा खल भाजें अनड, फुरलंतो गज्ज भार ।
आयो असपति ऊपरें, मुख कहतो हुँसियार ॥२८०१॥
तोलें खग तारा लगें, गोरे कीधो घाव ।
असपति जीव ऊवेलंता, पाछा दीधा पाव ॥२८०२॥
कहें बादल गोरा सुणो, सकजां एक सुभाव ।
आयोआम गिया पछें, कुण राणों कुण राव ॥२८०३॥
तोनें रिण वाही तणी, वदसी जगत विसेख ।
दलीसर परमेसरो, त्या सुं केहो तेख ॥२८०४॥
चण वट नेंजा घाव करि, लडें भडें लें वाह ।
गोरो रणवट पोढ़ियो, वाही वाह ए लोह ॥२८०५॥
खमा खमा कहि अपछरा, डर उडें सीर हाथ ।
गिलें डए भग ग्रीध ज्युं, जाव वहें दिन नाथ ॥२८०६॥
आवें वादल ऊपरें, करें हथेली छाह ।
दल पतिसाही डोलियां, भागी तुज भूजाह ॥२८०७॥
अइयो सूरातम तणा, अजे अथमाण अथाग ।
भुज वे वे रुंधा भला, इक मुंछा इक खाग ॥८॥
मुख देखे काका तणो, वांटें मुंछा वाल ।
वादल आयो साह सुं, चोरंग वंधें चाल ॥९॥
हलकारें भिड आपणा, वाकारें रिम थाट ।
पडिया कोसें वीस पर, भाडतो खग भाट ॥१०॥

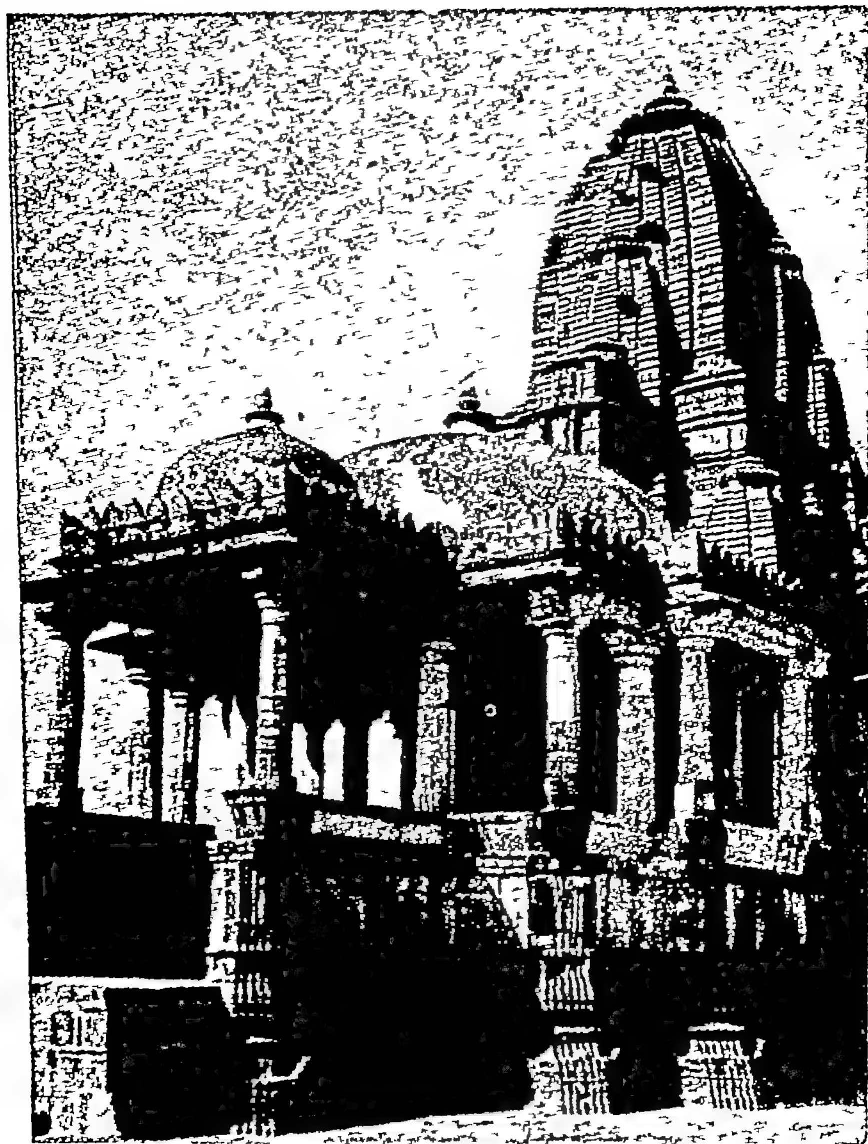
लोह छकारे ऊडये, इसा लगाया हाथ।
पोधर खेत पछाडियो, सारो असपति साथ ॥११॥
रह चवीं सागा कद [खु]; ऊभो असपति आप।
जा नवि खेस्यै बादलें करी गुजाहल ताख ॥१२॥
खल गलिया बादल खगें, पूर हसम खुरम्मांण।
सांमद जाणउ तान सुत, पीधा चळू प्रमाण ॥१३॥
पकड्यो असपति बादलें, एकल म [ल्] ल अबीह।
मेगल हदा मग दलें, गाल बजावें सीह ॥१४॥
फिर छोडे पकडें फिरें, नाच नचावें तेम।
रस लागो रामत रमे, भोला बालक जेम ॥१५॥

कवित्त

सुण बादल कहे साह, राह हीदू ध्रम रख्खो।
सांमधम्म सुरतान, अकल उसताद परख्खो॥
तु सांमंत सकज्जह, बुद्धि बल अकल दुबाहो।
तु ही ढाल हींदवाण, तु ही रावत खग वाहो॥
गोरिल सरगि अपछर वरी, तुम दुनी मे यस सुनहुं।
पतिसाही दला लाइछरा, बहू भई जब बस करहुं ॥१६॥

दूहा

ध्रम राख्यो राख्यो धणी, र(ख्)खी पदमणि पूठ [मे]।
अब रख्खहुं मेरी अदब, कहें आलिम सुण दूठ ॥१७॥
मेरे लाल [तू] झूझे बरो, ए दुनियाण उकन्न।
भातीजें काको भिडें, दीधो न्याव विगत्त ॥१८॥



मीरां मन्दिर, चित्तौड़

[फोटो—सार्वजनिक संपर्क विभाग-राजस्थान]

चोपाई

ऊभो रतनसेन राजांन, दीठो जुद्ध महा असमान ।
जोया वादल गोरा तणा, हाथ महावल अरिगंजणा ॥१६॥
पद्मणि ऊभी द्यै आसीस, जीवो वादल कोड वरीस ।
सामधरम साचव्यो सवेह, राखी वादल खत्रीवट रेह ॥२०॥
गोरो रावत रण मे रह्यो, आलम सेन सावें खग लह्यो ।
लूटाणो लसकर जूजुवो, साका वादित भारथ हुवो ॥२१॥
पातिसाह ग्राहें मुंकिओ, एह वले मोटो जस लिओ ।
साह कहें साभल वादला, किया पवाडा तें ही भला ॥२२॥
दीवत दांन दियो न्हो भणी, किसी करा हिवें कीरत घणी ।
आलिम नीसर गयो एकलो, गोरो वादल जीत्यो किलो ॥२३॥

दूहा

करि कागल वादल सवी, हजरत राखी पास ।
इक तेरें मुख मुछहे, अइ हींदू स्यावास ॥२४॥
पातसाह दिल्ली गए, भई दुनी सरवात ।
वादल भिड रण सोम्भियो, उवारी अखीयात ॥२५॥
हसम खजीनो लुटियो, ग्रह मुक्यो पतिसाह ।
वोल्यो तु निरवाहियो, अइयो भींचं दुवाह ॥२६॥
उघाड्यो चित्रकोट गढ़, सासा आया राण ।
मलियो वादल रतनसी, करे वखाण खुमांण ॥ २७ ॥
सामेलो आया सकल, घुरिया जैंत निसाण ।
वधायो गज मोतीया, गुनियन करें वखान ॥२८॥

चोपाई

महा महोछव माहें लियो, अरध राज बादल नें दियो।
पदमणि नार लिया वारणा, राख्या पण अम दंपति तणा ॥२६॥
इण पर आव्यो महिल मझार, वदीजन बोलें जयकार।
आवी लागो माता पाय, मात आसीस दिइ असवाय ॥३०॥
निज नारी ओढ़ी नवी घाट, सझि श्रृंगार कर तिलक ललाट।
अरघ अमोखों देई करी, मोती थाल भरी संचरी ॥३१॥
कीधा विविध वधावा घणा, कुसले खेमे आया तणा।
तव गोरिल री अस्त्री कहें, काको किण विध रण मे रहें ॥३२॥
कहो किसी पर वाह्या हाथ, केता मार्‌या आलम साथ।
बादल बोलें माता सुणो, किंसु वखाण काकाजी तणो ॥३३॥
असपति पिण पग पाछा दिया, जैंत तणा वाजा वाजिया।
बीछाया सब खान निवाव, के इसीसें कें पयताव ॥३४॥
ऊपर गोरो भिड पोढ़ियो, अवर सुजस तणो ओढियो।
तन बिखरायो तिल होय, मु छा मरट न मिटियो तोह ॥३५॥
कुल उजवाल्यो गोरें आज, सुहडा सीधा चढ़ावि राज।
रिण खेती गोरें भोगथी, में तो सिलो कियो पूठथी ॥३६॥
घटा वींदणी गोरें वरी, बाधे मोड महा रिण करी।
में तो जानी थकेह झुत्रिया, बिरुद भुजा छें गोरल लिया ॥३७॥

कुंडलियो

गोरल त्रिय इम उ [च्] चरें, सुण बादल समर [त्] थ।
पिउ मुझ रिण मे झूझतें, किम करि वाह्या ह [न्] थ ॥

किम करि वाह्या हत्थ, व [त्] थ भरि सुहड पिछाड़्या ।
भागा हय गय थट्ट, जाए नेंजें असि चाढ़्या ।
गिलिया खांन निवाव, सीस असपति झोरिल ।
कहें वादल सुण मात, रिण ही इम जुझ्या गोरिल ॥३८॥

चौपाई

इम सुणि नें कामनी तेह, विकसित वदन हुई ससनेह ।
रोम रोम सूरिम ऊछली, मुलकी महिला बोलें वली ॥३६॥
सावल वेटा हिवें वादला, ठाकुर दोहिला हुवें एकला ।
पछें पडें छें छेटी घणी, रीस करेसी मारो धणी ॥४०॥
वहिली होय म लावो वार, भेला होय काकी भरतार ।
एम सुणी वादल हरखियो, धन धन मात तुमारो हियो ॥ ४१ ॥
दान पुन्य तव वहुला करी, करि शृंगार चढ़ी भल तुरी ।
श्रीफल लेई हाथें धरी, जैं जैं रांम कही नीसरी ॥ ४२ ॥
ढ़ोल धुरो गूर्जें चीतोड, वाध्यो सुजस तणो सिर मोड ।
इण पर आसा उछालती, आवी खेतें रिण मलपती ॥ ४३ ॥
पूजी गवरी करी सनांन, पहिरी धवल वस्त्र परिधान ।
खमा खमा कहें धन भरतार, रिण समंद हिलोलण हार ॥४४॥
खट मंदिर पिय खोलें धरी, अगनिसरण कीधो सुंदरी ।
पति पासें जई पोहती विसें, अरध सिखासण दीधो तिसें ॥४५॥
अमरापुर वसीया उछाह, जय जयकार हुओ जग माह ।
चंद सूरज वे कीधा साख, गढ़ चीतोड दल्ली दल साख ॥४६॥

करी मृतकृत देही संसकार, आयो बादल निज घर बार।
रजपूता ए रीत सदाइ, मरणैं मंगल हरखित थाइ ॥ ४७ ॥

दूहा

रिण रहचिया म रोय, रोए रण भाजे गया।
मरणें मंगल होय, इण घर आगा ही लगें ॥४८॥

चौपाई

विरूद बोलावे बादल घणी, साम सनाह सुहडाई तणी।
इसो न को बलि हूओ सूर, कमधज वंश चढायो नूर ॥४६॥
पदमणि राख राण राखियो, गढ़रो भार भुजे जालियो[1]।
रिण भिडता राखावी रेह, बसो बसो[2] बादल गुण गेह ॥५०॥

कवित्त

जय बादल जयवंत, विरुद्द बादल अरिगंजण।
संकट सामि सनाह, भिडे पतिसाहा भंजण।
मलण मलीका माण, हणण हाथी मय मत्तह।
साम ब्रद छोडणो, दियण बहिनी अहि बंतह।
पदमणी नार श्री मुख कहैं, इस्यो अवर न कोई हुअ।
आरती उतारें वर तणी, जैं बादल जैंवत तुह ॥५१॥
कहे मात बादला, भलें सुभ उअर उपन्नो।
कुल दीपक कुल तिलक, रक घर रयण संपन्नो।
ग्रहि मोखण पतिसाह, रुक बल गंजण अरी दल।
जैत हत्थ जग जेठ, भुज बलिहार भुज बल।

१ लाजियो २ नमो नमो

मुख मुंछ तुझ कुल लज्ज तुही, सारी वेल किया भडा ।
चीतोड मोड वांध्यो सिरें, दल्लीपति छाडें तडां ॥५२॥
रांम तणें भिड्या जिम हणुमान, तेम वादल रतनसी राण ।
पदमणि सत्त सीता सारिखी, वादल भिड लंवाया रखी ॥५३॥
सेवा कीधी अपछर तणी, तिण सोभा वाधी घण घणी ।
करी दिखावें इसीक कोय, अवरा सुहडा आदर होय ॥५४॥
गोरा वादल नी ए कथा, कही सुणी परंपर यथा ।
सांभलता मन वंछित फलें, राज रिद्ध ल [छ] मी वहु मिलें ॥५५॥
सामधरम सापुरसा होय, सील दृढ कुलवंती जोय ।
हींदू ध्रम सत परिमाण, वाज्या सुज [स] तणा नीसाण ॥५६॥

इति श्री चित्रकोटाधिपति वापा खुमांणान्वये रांणा रतनसेन पदमणी गोरा वादल संवंध किंचित् पूर्वोक्त किंचित ग्रंथाधिकारेण पं० दोलतविजयग विरचितोऽयं अधिकार संपूर्णम्

इति श्री षष्ठ खंड सम्पूर्णम्

जटमल नाहर कृत

गोरा बादल चउपई

सोरठा

चरण कमल चितलाय, कैं समरूँ श्री शारदा,
मुझ अख्खर दे माय, कहिस कथा चित लायकै॥ १॥
जंबूदीप-मझार, भरतखड खंडा-सिरै;
नगर भलो इक सार, गढचितौड़ है विखम अत॥ २॥
रतनसेन जिहां राय, पाय कमल सेवै सुभट,
सूरवीर सुखदाय, राजपूत रजकौ धणी॥ ३॥
चतुर पुरस चहुवॉन, दाँन माँन दूनूँ दियै,
मंगत जिंन को माँन, आवै मंगत दूर तै॥ ४॥

कवित्त

एक दिवस नृप-पास आस करि मंगत आए,
च्यार चतुर वेताल, दृष्टि भूपति दिखलाए।
दे आसिका-असीस, वीस दस विरद सुनाए,
नरपति पूछत भट्ट, कौन देसा तै आए।
हम आए सिंघलदीप तै, कीरति सुनिकर तुम-तणी,
राजा रतनसेन चहुवांण है, गढ चितोड़ केरो धणी॥ ५॥

राय देय सनमाँन, पास अपने बैठाये,
कहो दीप की बात, जहाँ तें तुम चल आये।
क्या-क्या उपजत उहा, दीप सिंघल है कैसा,
कहै भाट सुनो राय, कहूँ देख्या है जैसा।
उदध-पार अदभुत नगर, सोभा कहि न सकू घणी,
ऐरापति उपजत उहाँ, अवर नार है पदमणी ॥ ६ ॥

दूहा

पदमावति नारी कसी, कहो ! भाटजी, बात,
भाट कहै, नरपति सुणो, च्यार रमण की जात ॥ ७ ॥
इक चित्रनि, इक हस्तनी, एक सखनी नार,'
उत्तम त्रीया पदमनी, तस गुण अपरंपार ॥ ८ ॥

चौपई

कहो भाट, पदमावति-लख्खन, गुणी सरस तुम बड़े विचख्खन,
रंग-रूप-गुण-गत्ति-मति दाखो, भाखा सकल मधुर-सुर भाखो॥६।

कवित्त

पदमावति मुखचंद, पदम-सुर वास ज आवै,
भमर भमत चिहुं फेर, देख सुर असुर लुभावै।
अंगुल इकसत आठ, ऊँच सा सुन्दर नारी,
पहुली सत्तावीस, ईस चित लाय सँवारी।
म्रगनैण, वैण कोकिल सरस, केहरि-लंकी कामनी,
अधर लाल, हीरा दसन, भुँह धनुप, गय गामनी ॥ १० ॥

दूहा

पदमावत के गुण सुणे, चढी चूँप चित राय,
विन देख्या पदमावती, जनम अख्यारथ जाय ॥ ११ ॥

चौपई

वसी चित्त-अंतर पदमावत, निसा नींद दिन अन्न न भावत,
इम रहताँ इक जोगी आयो, राजद्वार परि धूही पायो ॥ १२ ॥

कवित्त

सिद्ध बड़ो जोगेंद्र, देख राजा चित हरस्यौ,
ज्यूँ सरोज सर माँझि, सूर देखत ही विकस्यौ।
भगत-भाव बहु करी, जुगत कर जोग संतोख्यौ,
निसा बैठ नृप पासि, पत्र पंचामृत पोख्यौ।
संतुष्ट होइ रावल कहै, माग जु तुझ, कछु चाहिये,
राजा रतनसेन चहुवाँण कह, इक पदमण मोहि व्याहिये ॥१३॥
कहै ताम जोगेंद्र, दीप सिंघल पदमावत,
राज पाट तजि चलौ, भूप ! जे तुझ मन भावत।
कहै राय, करि कृपा, वेग यहु कारज कीजै
जो कुछ कहो सो नाथ, साथ सामग्री लीजै।
मृग त्वचा बिछाई सिद्ध तब, पढ़ो मन्त्र तव बैठ करि,
उड गये सिंघलद्वीपकों, (राजा) रतनसेन जोगेंद्र वरि ॥१४॥

दूहा

सुण रावत, जोगी कहै, करि रावल को वेस,
इक-सबदी भिख्या करो, यह मेरा उपदेस ॥ १५ ॥

कवित्त

दियो भेख जोगेंद्र, कान मुद्रा पहिराई,
कंथा सिंगी गले, अंग बभूत चढाई।
कपट जटा, करदंड, मोरपँख विड्मण झोलै,
वज्र कछोटो पहिर, अलख अगचर मुख बोलै,
कर-पंकज पात्र अनूप ले, राज द्वार जब आवियो,
नृप सुता निरख पदमावती, तव सु राज मुरझाइयो ॥ १६ ॥

दूहा

मन मोह्यो पदमावती, देख रूप अति राइ,
कहै सखी सुं नीर लै, रावल छंट उठाइ ॥ १७ ॥

कवित्त

छंट उठायो जोग आय, तिहाँ सखी विचख्खण,
रावल-रूप अनूप, अंग बत्तीसे लख्खण।
तब पदमावति हार, तोड़ नवसर दी भिख्या,
मुकताफल भरि थाल, नाथ पै लाई सिख्या।
कर जोड़ि गुरू आगें धरे, देख नाथ अैसे कहै,
जो जिस लायक होय सो, तैसी ही भिख्या लहै ॥१८॥
चल्यौ आप जोगेंद्र, चलित राजा-गृह आयो,
देख राय हरखियौ, सीस ले चरण लगायो।
आज पवित्र भया गेह, नेह धरि गरू पधारे,
आज सफल मुझकाज, बड़े हैं भाग हमारे।

तब सुनि आई पद्मावती, गुरू चरण ले सिर धरे,
आसीस देह रावल कहै, पुत्री तुम कारज सरैं ॥१६॥
कहे ताँम राजान, पद्म पुत्री सुखदायक,
वर प्रापत अब भई, नहीं कोई वर लायक।
हूं ल्यायो वर, राय, तोहि पुत्री कै कारण,
गढ़-चितोड़-राजान, दुष्ट-दुरजन-विड्डारण।
राजा रतनसेन चहुवाण है, तिस समवड़ नहि अवर नर,
परणाय देह पद्मावती, मान वचन तू सत्तकर ॥२०॥
गुरू-वचन राजान, माँन पुत्री परणाई,
रतनसेन के साथ, भई है भली सगाई।
दीन्हो वहु दायजो, लाल मुकताफल, हीरे,
पाटंबर, पटकूल, थाल भर कंचन नीरे।
रावल कहै राजान को, पदमावति मुकलाइयै,
चीतोड़-लोक चिंता करैं, राजा रतन चलाइयै ॥२१॥
राघव दीयो संग, वेग पद्मनी चलाई,
रोवत माता भ्रात, कुंवरि कों कंठ लगाई।
उडन-खटोला चढं राय, पद्मावति, जोगी,
राघव चेतन संग, उडवि आये गढ भोगी।
नीसाण वजे पंच-सवद तहाँ, गोरी मंगल गाइयो,
राजा रतनसेन पद्मावती, ले चितोड़गढ़ आवियो ॥२२॥
तजी रानि सब और, राव पद्मावति रातो,
रैंन-दिवस रह पास, अंग आणंद मदमातो।

नेम नीर को लियो, वीन देख्याँ पदमावत,
महा-मोह-वस भयो, रहै अैसी विध रावत।
जब निसा रही इक-दोय घड़ी, तब सिकार-उद्दम कियो,
राजा रतनसेन असवार हुय, राघव चेतन सँग लियो ॥२३॥

दूहा

वन के भीतर खेलताँ, तृखा वियापी तेम,
विन देख्याँ पदमावती, जल पीवण को नेम ॥२४॥

कवित्त

तब राघव चित लाय, सरस पूतली सँवारी,
त्रिपुरा की कर कृपा, रूप पदमावति नारी।
भेख भाव बहु करी, जंघ पर तील बनाया,
देख राय भयो रोस, पाप मन भीतर लाया।
विना रम्याँ पदमावती, तील स क्यूकर जाणियो,
मारूँ न विप्र, काढूं नगर, यह सुभाव मन आणियो ॥२५॥
घरि आयो राजान, विप्रकुं दिया निकारा,
राघव तिसही समै, वेस वैरागी धारा।
भगवें वेस सरीर, नीर भर लिया कमंडल,
जंत्र बजावै जुगत, जोग-तत रहै अखडल।
दिल्ली सु आय प्रापत भयो, रह उद्यान वन खंड सिर,
पातसाह तिहां अलावदी, करै राज सिर नर सुथिर ॥२६॥
एक दिवस सीकार साह खेलत तिहाँ आयो,
राघव तिसही समै जुगत कर जंत्र बजायो।

म्रग सब तज वनवास पास राघव के आए,
सुणे राग धर काँन साह म्रग कहूँ न पाए।
आयो सु तहाँ अल्लावदी, देख चरित अचरज्ज भयो,
उतर तुरंग से साह तब, राघव के आगे गयो ॥२७॥

दूहा

रीझ्यौ साह सुराग सुनि, राघव को कह ताँम,
दिलिपति हम तुम सौं कहै, चलो हमारे धाम ॥२८॥
हम वैरागी, तुम ग्रही, अर प्रथवी पतिसाह,
हम तुम ऐसा संग है, जैसा चंद कुं राह ॥२९॥
हठ कीनो पतिसाह तब, राघव आन्यौ गेह,
राग रंग रीझ्यौ अधिक, दिन दिन अधिक सनेह ॥३०॥

कवित्त

एक दिवस नर काढ, ससा जीवत ग्रह ल्यायो,
पातिसाह ले तब्ब, गोद ऊपर बैठायो।
ता पर फेरै हाथ, अधिक कोमल रोमावल,
यातैं कोमल कछु, कहो राघव गुण-रावल।
तब हाथ फेर राघव कहै, यातैं कोमल सहस गुण,
पदमावति-देह, विप्र उचरैं, पातसाह धरि कान सुण ॥३१॥

दूहा

व्यास बुलाए अलावदी, पूछत बात प्रभात,
सास्त्र विधि जाणो सकल, त्रियकी कितनी जात ॥३२॥

राघव कहै नरिंद सुन, त्रीय जाति है च्यार,
चित्रन हस्तन संखनी, पदमनि रूप अपार ॥३३॥

(*अथ पदमनी वर्णनम्*)

पदमनि के परस्वेद सें, कसतूरी की वास,
कमलगंध मुख तें चलें, भमर तजत नहिं पास ॥३४॥

कवित्त

पदमगंध पदमनी, भमर चहुंफेर भमत अत,
चद वदन, चतुरग, अंग चंदन सो वासत।
सेत, स्याम अरु अरन, नयन-राजीव विराजत,
कीर चुंच नासिका, रूप रंभादिक लाजत।
गुणवंत दत दाडिम कुली, अधर लाल, हीरा दसन,
आहार पान कोमल अधिक, रस सिंगार नव सत वसन ॥३५॥
पान हुते पातरी, पेम-पूरण सू लाजत,
भुज म्रणाल सुविसाल, चाल हंसागति चालत।
चंपावरण सुचग, सूर ऊजासी भालै,
पदम चरण तल रहै, निरख सुरनर मुनि भालै।
हर लंक, अंग चंदन-वरन, नार सकल-सिर मुगटमणि,
अल्लावदीन सुरताँन सुण, पदमन लच्छन एह भणि ॥३६॥

(*अथ चित्रणी वर्णनम्*)

चपल चित्त चित्रणी, चपल अति चंचल नारी,
कँवल-नैन कटि भीन, वेण जू नागन कारी।

पीन पयोहर कठिन, वचन अमृत मुख बोलै,
जंघा कदली-खंभ, गिडत गैवर गति डोलै।
संभोग-रीत जाँनत सकल, नित सिंगार-भीनी रहै
अल्लावदीन सुलतान सुन, कवि चित्रन-लच्छन कहै ॥३७॥

(अथ हस्तनी वर्णनन्)

हेत वहुत हस्तनी, केस अति कुटिल विराजत,
द्रिग देखत मृग नैन, चपल अति खंजन लाजत।
कनकलता कामनी, बीज दाड़िम दसनावत,
पहुप वेस पहरंत, कंत अति हेत सुहावत।
अति चतुर, कुच कंचन कलस, काम केलि कामिन करें,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन हस्तन धरैं ॥३८॥

(अथ सखनी वर्णनम्)

जटा जूट जोखता, वदन विकराल विकल अति,
सुकर देह, सरोस, स्वाँन जूं सदा घुरक्कति।
गर्दभ-गति, गुनहीन, परै ढरि पीन पयोहर,
संछ-गंध, तन मलन, चुल्ह समतूल भगंदर।
अति घोर निद्र, आलस अधिक, अति अहार, गज अंखनी,
अल्लावदीन सुलतान सुण, ए लच्छन त्रिय संखनी ॥३९॥

श्लोक

पद्मिनी पद्म मध्येषु, कोटि मध्येपु चित्रणी,
हस्तनी सहस्र मध्येषु, वर्त्तमानेषु संखनी ॥४०॥

पद्मिनी पान राचंति, मान राचंति चित्रणी,
हस्तनी हास राचंति, कलह राचंति संखनी ॥४१॥
पद्मिनी पद्म गंधेन, मद गंधेन चित्रणी,
हस्तनी पुहप गंधेन, मच्छ गंधेन संखणी ॥४२॥
पद्मिनी पोहर-निद्रा च, द्वै पोहर निद्रा च हस्तनी,
चित्रनी चमक निद्रा च, अघोर निद्रा च संखनी ॥४३॥

(अथ पुरप जात च्यार वर्णनम्)

दूहा

अथ सिसा लखण

मूख सकोमल, तन, वचन, सीलवंत, सुर ग्याँन,
रति विनोद अति रुच नहीं, ससा करत वहु साँन ॥४४॥

अथ मृग लछन

मधुर-वचन, मृग मध्य-तन, चपल वुद्धि अति भीर,
चतुर, साध, अति हसत मुख, कामी, कनक-सरीर ॥४५॥

अथ वृषभ

वृषभ जात भारी पुरुष, दाता, क्रूर-सुभाव,
कपटी कछ लंपट हठी, काम केल वहु चाव ॥४६॥

अथ तुरंग

तन दीरघ दीरघ चरन, दीरघ नख सिख अग,
सुभर-तरुनि-सँग रति-रवन, आलस अधिक तुरंग ॥ ४७ ॥

कवित्त

ससिक पुरुष-संयोग, नारि पद्मावति लोडै,
मृग नर सु चित्रणी, प्रेम पूरण सूं जोड़ै।
वृषभ पुरुप हस्तनी, भोग अत ही सुख पावै,
अश्व पुरुष संयोग, नार सखनी सुहावै।
मृग ससिक वृपभ अरु अश्व पुनि, जाति च्यारि पुरुषा तणी,
अल्लावदीन सुरताण, सुणि, जात च्यार नारी तणी ॥ ४८ ॥

दूहा

नारि जाति सुण पातिसाह, राघव लियो बुलाय,
दोय सहस मुझ हुरम है, देखि महल मे जाय ॥ ४६ ॥
राघव कहै नरिंद सुनि, गरमहल मे न जाय,
छाया देखू तेल मे, नारी देऊँ वताय ॥ ५० ॥

कवित्त

हुकम कियो पतिसाह, नारि सिंगार वनावहु,
तेल-कुंड भर धरो, आय दीदार दिखावहु।
हुरमा सकल निहार, तवै राघव यूं भाखै,
हंस गमन, मृग नैन, रूप रंभा कौं राखै।
चित्रन, हस्तन, संखनी, पातसाहजादी घणी,
सरस त्रिया मे सुन्दरी, नहीं साह घर पदमणी ॥ ५१ ॥
कहै ताम सुलतान, वेग पदमनी वतावहु,
जहाँ होइ तहाँ कहो, जो कछु मांगो सो पावहु।

पदमन सिंघलदीप, उदध-पै-पार, पयंपै,
देख समुद्र, सुलतान, हिया कायर का कंपै।
यू सुनवि चढ्यौ सुलतॉंन, तब आय उदध ऊपर पड्यौ,
पदमनी कहाँ राघव कहो, पातसाह अत हठ चढ्यो ॥ ५२ ॥

सोरठा

राघव लह प्रस्ताव, पातसाहपै यूं जपै।
पदमनि नैड़ी ठाँव, रतनसेन चहुवाणपै ॥ ५३ ॥

दूहा

सुणवि चढ्यौ सुलतॉंन तब, चलियो गढ़ चीतोड़।
ढिया ढमामा दिल्लिपत, भई राय पर दोड़ ॥ ५४ ॥
कॉंपे सगले राण, चिहूँ चक्क खलभल भई।
खुर-रज छायो भाण, चोट नगारै जब दई ॥ ५५ ॥

छंद जात रेसालू

चढे चिहूँ दिसि साह के दल, धरै धीरज कौन ? ।
अभिमान-आणंद अंग उपजौ, गिणै लगन न सौन ॥ ५६ ॥
असवार त्रय लख साथ अदभुत, पाखरे ज तुरंग।
ताजी स तुरकी औ अराकी, सब्रज नीले रंग ॥ ५७ ॥
कम्मेत, काले, हासिले, सामुद्र, अर तबरेस।
अवलक, सुजॉम, सुबाहिरे, सबज नीले नेस ॥ ५८ ॥
मारंग, केहर अरु सरौजी, भले पंच कल्याण।
नाचंत पातर ज्यू तुरंगम, रतन-जड़ित पलॉंण ॥ ५९ ॥

लग्गास सोवन मुक्ख सोहै, जेर वंध सु पाट।
अव रेसमी कसि तंग ताणे, लटकणा के थाट ॥ ६० ॥
गजगाह घूघरमाल वमकै, तवल वाज वणाव।
कलंगी भली जरकसी पाखर, भलौ परचौ भाव ॥ ६१ ॥
हलकै पचावन साथ हाथी, ढलक नेजा ढाल।
अति घटा सावण मास जैसी, झरै मद परनाल ॥ ६२ ॥
वग-क्राति कांति सपेद सुंदर, गाजते गजराज।
पहिराय पाखर साह राखे, फोज आगे साज ॥ ६३ ॥
रथ अर पयादे अवर असवार, गनि सकै कह कोण।
उमडी चली आतस्सवाजी, खलभले त्रय भौण ॥ ६४ ॥
डेरा पड़ै दस कोस ताँई, करै नाहि मुकाम।
आइकै गढ़ चीतोड़ उतरे, दिया डेरा ताम ॥ ६५ ॥
ताणे तहाँ पचरंग तंबू, फरहरे नीसाँण।
फूले पलास वसंत आगम, वदै कविजन वाँण ॥ ६६ ॥

दूहा

गढ-रोहौ करकै रह्यो, अलावदीन सुलतान।
रतनसेन माँनै नहीं, चलै गढनसू प्रॉन ॥ ६७ ॥
अंव लगाये ठौर तिहँ, फल पाके तव जान।
वारा वरस वैठो रहौ, अलावदीन सुलतान ॥ ६८ ॥

कवित्त

कहै ताम सुलतान, कह्यौ राघव क्या कीजै ?,
गढ़ चितोड है विषम, जोर तें कवहु न लीजै।

राघव कहै, सुलताँन, सुनो इक फंद करीजै,
उठाइयै मूसाफ, जेण कर राय पतीजै।
भेज्यो खवास सुलतान तब, रतनसेन-द्वारै गयौ,
ले हुकम-राय दरवाँन तब, खोलि प्रोलि भीतर लियौ ॥६६॥

कहै ताम सुलताँन, मान तू वचन हमारा,
कहै फेर सुलताँन, करूं तुझ सात हजारा।
बहिन करूं पदमनी, तुझै भाई कर थप्पूँ,
देखू गढ चीतोड़, अवर बहु देस समप्पूँ।
गल कठ लाय, ठहराय कै, नाक नमण कर बाहुड़ौं,
राजा रतनसेन, सुलताँन कह, पहुर एक गढपरि चढौं ॥७०॥

मान वचन सुलताँन, आन मूसाफ उठायौ,
महमानी बहु करी, गढ्ढ सुलताँन बुलायौ।
लिये साथ उमराव, बीस दस सूर महाबल,
बहुत कपट मन माँहि, गए सुलताँन वहाँ चल।
बहु भगत-भाव राजी करी, साह कहै भाई भयौ,
पदमनि दिखाव ज्यू जाँह घर, दुरजन दुख दूर गयौ ॥७१॥

दूहा

रतनसेन चहुवान कहि, बहिन करी सुलताँन।
वदन दिखावो वीर कों, दिया साह बहु माँन ॥७२॥
चेरी एक अति सुंदरी, दे अपनौ सिणगार।
वदन दिखायौ साह कू, गिरयौ सीस कै भार ॥७३॥

राघव कहै, सुण पातसाह, यह पद्मनी न होय ।
कहा देख के तुम गिडें, अति सुंदर है सोय ॥७४॥

कवित्त

लाख लहै ढोलियो, सवा लख लेह तुलाई,
अर्ध लाख गीदुवो, लाख त्रय अग लगाई ।
केसर अगर कपूर, सेझ परमल पर भीनी,
ता ऊपर पदमनी, रामरस-रूप-नवीनी ।
अल्लावदीन सुलताँन सुण, पदम गंध है पद्मनी,
चन्द्रमा वदन, चमकंत मुख, रतनसेन-मनभावनी ॥७५॥

दूहा

बोल्यो तब, अल्लावदी, पकड़ राय कौ हाथ ।
दिखलावत हो और त्रिय, कपट कियो मुझ साथ ॥७६॥

कवित्त

कहै ताम सुलतान, कहो पदमन-प्रति ऐसो,
मुख दीखावो वेग, कपट माड्यो है कैसो ।
मुख काढ्यौ पद्मनी, ताम बारीकै बाहिर,
निरख गिर्‌यौ सुलताँन, थभ लीयौ तसु थाहर ।
खिन एक संभाले आपकू, साह कहै, डेरै चलौ,
क्या सिफत करु में राव की, रतनसेन भाई भलौ ॥७७॥
फिर्‌यौ ताम सुलताँन, प्रोल पहिली जब आयौ,
रतनसेन भयो साथ, लाख बकसीस दिवायौ ।

चल्यौ ताँम सुलतान्न, प्रोल दूजी जब आयौ,
और दिये दस गढ्ढ, राय अति बहुत लोभायौ।
इम लेवै बगसीस, तबह कपट कर फंदियो,
राजा रतनसेन अति लोभकर, ग्रहि सुलतान सुबंधीयो ॥७८॥

सोरटा

रहे प्रोल जड़ लोक, सोर सकल गढ मे भयौ।
राजा ले गयो रोक, कपट कियो सुलतान तब ॥७९॥

कवित्त

सदा मरावै साह, राय कोरड़े लगावै,
कहै, देह पदमनी, जीव तब ही सुख पावै।
गढ के नीचे आँण, सहम भूपति दिखलावै,
लै राखै लटकाय, लोक सबही दुःख पावै।
मारतें राय कायर भयौ, पदमावत देऊँ सही,
भेजौ खवास मारौ न मुझ ले आवै जब लग ग्रही ॥८०॥

सोरठा

भेज्यो राय खवास, कहै, देय पदमावती।
मुझ जीवन की आस, विलम न कीजै एक खिन ॥८१॥

कुंडलियो

कह राँनी पद्मावती, रतनसेन राजाँन,
नारि न दीजै आपणी, तजियै, पीव, पिराँन।

तजियै, पीव, पिराँन, और कू नारि न दीजै,
काल न छूटै कोय, सीस दै जग जस लीजै।
कलंक लगावै आपको, मो सत खोवै जाँन,
कह रानी पदमावती, रतनसेन राजाँन ॥८२॥
पाँन लियो पदमावती, गई बादल के पास,
राखणहार न सूझही, इक बादल तोहि आस ॥ ८३ ॥
बार बरस को बादलो, हाथ ग्रहे चौगान,
ले आई पदमावती, बादल खावौ पान ॥ ८४ ॥
कह बादल सुन पदमनी, जा गोरा कै पास,
पान लियो मैं सीस धर, न करि चित, विसवास ॥ ८५ ॥

कवित्त

भई आस, तब लियो सास, गोरा पै आई,
पड्यौ स्याँम सकडै, करो कछु अब्ब सहाई।
मंत्र कियौ मंत्रिया, नारि पदमावति दीजै,
छूटाइयै नरेस, विलम खिन एक न कीजै।
अवस तिहारे आप हूँ, ज्यूं भावै त्युँ राय करि,
बीड़ौ उठाइ गोरो कहै, जाइ, बहन, अब बैठ घरि ॥ ८६ ॥

दूहा

गोरा बादल बैठ के, दिल में करै विवेक,
साह साथ कैसे लड़ाँ, लसकर अमित अनेक ॥ ८७ ॥

कवित्त

बादल बोल्यौ ताम पाँचसै डोला कीजै,
तिन में बैठे दोइ च्यार कै काँधै दीजै।
तिन मे सब हथियार अश्व कोतल करि आगै,
कहे. देह पदमनी, तुरक नेड़े नहिं लागै।
कटियै बन्धन राय के भुजबल परदल गाहिजै,
दीजिय न पूठ द्रढ़ मूठ करि खग्ग साह-सिर वाहिजै ॥ ८८ ॥

दूहा

बादल मंत्र उपाइयौ, सबके आयो दाय,
याहि बात अब कीजिये, बोले राणाँ राय ॥ ८६ ॥

कवित्त

तुरत बुलाये सुत्रहार, डोले संवराए,
तिन ऊपर मुखमली, गुलफ आछे पहिराए।
बैठाये बिच सूर, सूर कै काँधै दीजै,
तिन-मह सब हथियार, जरह अर जोर न ईजै।
अैराकी साज, सवार कै, बादल मंत्र उपाइयौ,
वक्कील एक रावल मिलन, पुह सुलताँन पठाइयौ ॥ ६० ॥

दूहा

रावल देवत पदमनी, आज तुझै, सुलताँन,
भेट इसी बहु भाँति सों, खुसी भयो सुलताँन ॥ ६१ ॥
कहै ताम अल्लावदी, सुणि वकील, चित लाय,
वेग ले आवो पदमनी, बादल सुं कहो जाय ॥६२॥

आयो हुकम ज साह को, वादल भयो तयार,
सुनो, रावतो, कान धर, अैसी करियो मार ॥६३॥

कवित्त

प्रथम निकस चकडोल, तुरत चढि तुरी धसावो,
नेजा लेकर हाथ जोर, दुसमन सिर लावो।
जब नेजा टुट्टवै, तबहि तरवार उठावो,
जब तूटे तरवार, तबे तुम गुरज उड़ावो।
जब गुरज तूट धरणी पड़े, कट्टारी सनमुख लड़ो,
बादक कह हो रावतां, स्यांम काम इतनो करो ॥६४॥

दूहा

वादल जूझन जब चल्यो, माता आई तांम,
रे वादल तैं क्या किया, ए वालक परवांन ॥६५॥

कवित्त

रे वादल वालक्क, तुंही है जीवन मेरा,
रे वादल वालक, तुज्झ विन जुग अंधेरा।
रे वादल वालक्क, तुज्झ बिन सब जग सूना,
रे वादल बालक्क, तुज्झ बिन सबहि अलूना।
तुज्झ विन न सूझै कछू, तूटि वांह छाती पड़ै,
छुट्टंत तीर वंका तहाँ, केम साह-सनमुख लड़ै ॥६६॥

दूहा

माता वालक क्युं कहो, रोड न मांग्यौ ग्रास।
जो खग मारूं साह-सिर, तो कहियौ सावास ॥६७॥

सीह, सिँचाणो, सापुरुष, ए लहुरे न कहाय ।
वड़े जिनावर मारि कै छिन में लेय उठाय ॥६८॥
सिंह जोन तें निकसतै, गय-घड़ दीठी जाँम ।
तुट्टवि गज मसतक लड्यौ, आइ रह्यौ महि ताँम ॥६६॥

कवित्त

बादल कह, सुण माय, सत्त तुझ साहस मेरा,
लडू साह के साथ, करूं संग्राम घणेरा ।
मारु सुभट अपार, स्याम के बंधन काट्टूँ,
जो सिर गयो त जाहु, सीस दे जग जस खाटूँ ।
जिम राम-काज हनुमत कियो, मार्यौ रावण एक खिण,
गैवर गुडाय तोडौं तवर, साह चलाऊँ खग्ग हण ॥१००॥
बालक तो परवाँण, जाँम गैवर-घड मोडूँ,
बालक तो परवाँण, पकड पिलवॉन पछोडूँ ।
बालक तो परवाँण, स्याम के बंघन कट्टूँ,
बालक तो परवाँण, साग असवार पलट्टूँ ।
मारूं तो खग साह-सिर, गयवर दलूँ, सत्य चढूँ,
जननी लजाऊँ तुझ कू, जे बाग मोड़ पाछो मुडूँ ॥१०१॥

दूहा

जैसा, बादल, तैं किया, तैसा करै न कोय ।
माता जाइ आसीस दै, अब तेरी जै होय ॥१०२॥
माता जबही फिर चली, बहुवर दिवी पठाय ।
मेरो राख्यो ना रह्यौ, अब तुम राखो जाय ॥१०३॥

कवित्त

नव सत सज्झै नवल, नारि बादलपै आई,
अज हुं न रम्यौ मुझ साथ, चल्यौ तू करण लड़ाई।
अजहुँ न माँणी सेझ, घाव-नख नाहि चमंके,
कुचन चोट नहि सही, सहै क्युं सांग वमंके।
छुट्टंत नाल गोला तहाँ, तुट्टवि धड़ सिर उप्परै,
नारि कहै हो राव, इम मता देखि दलतैं मुडै ॥१०४॥

दूहा

कंता रिण मे पैसताँ, मत तू कायर होइ।
तुम्हे लज्ज, मुझ मेहणो, भलो न भाखै कोइ ॥१०५॥
जो मूवा तो अति भला, जो उबर्‌या तो राज।
वेहुँ प्रकारा हे सखी, मादल घूमै आज ॥१०६॥
कायर केरै माँस कों, गिरज न कबहुँ खाइ।
कहा डंख इन मुक्ख को, हम भी दुरगति जाइ ॥१०७॥

कवित्त

मेर चलै, ध्रू चलै, भाण जो पच्छिम ऊगै,
साधु वचन जो चलै, पंगु जो गिर लगि पूगै।
धरण गिड़ै धवलहर, उदध मरजादा छोडै,
अरजन चूकै बाँण, लिखत वीधाता मोड़ै।
बादल कह, री नार, सुण, एहवो जो होतव टलै,
न्हासूँ न, पूठ देऊ नहीं, बादल दलसूँ ना चलै ॥१०८॥

दूहा

त्रीया, तुझकों क्या दिऊँ, सती हुवै मुझ साथ।
जूड़ो दीनो काटकै, नारी-केरै हाथ ॥१०९॥
. ...।
ताके ऊपर अरगजा, भमर भमैं चिहुं फेर॥ ११०॥
सुखपालां सझ पांचसै, सोभा घणी करेह।
गढ़ तैं डोले उतरे, साह न पायो भेद॥ १११॥
गोरा बादल दोइ जण, आप भए असवार।
आय मिले पतिसाह सूँ, किए सिलाँम तिवार॥ ११२॥
ले आए संग पदमनी, दोड़न लागे मीर।
लाज जु लागै हम तुमै, बहुत भया दिलगीर॥ ११३॥
साह ढंढोरो फेरियो, मत कोई देखो ऊठ।
गरदन मारू तास कौं, लूँ सब डेरा लूट॥ ११४॥
भी भिर आये साह पै, एक करै अरदास।
रतनसेन कूँ हुकम हुइ, जाइ पदमन कै पास॥ ११५॥
मिल बिछुरे संग पदमनी, तुमको दीजै आँन।
हुकम कियो पतसाह तब, यह विधि मन में जाँन॥ ११६॥

कवित्त

बादल तिहा आवियो, राय तिहाँ बाँधण बाँध्यो,
लेइ मस्तक आपणौ, चरण ऊपर तस दीधो।
हुऔ कोप राजाँन, वैर कीधो तै, वैरी,
कीधो भूँडो काँम, नारि आणावी मेरी।

वादल ताँम हँसि वोलियो, कृपा करो साँमी, सही ।
वालक रूप-पद्मावती, राव नारि तेरी नहीं ॥ ११७ ॥

दूहा

ले आए संग राव को, मन विच हरख अपार ।
डोलै भीतर पैसताँ, आगे वीच लोहार ॥ ११८ ॥
वेडी काटी तुरत तिन, राय कियौ असवार ।
तवल वाज तिनही समै, निकढे सुभट अपार ॥ ११९ ॥

सोरठा

रण वाजै रणतूर मारू गावै मंगता ।
उमग तिहाँ चित सूर, कायर के चित खलभले ॥ १२० ॥
ढमकै जंगी ढोल, सुरणाई वाजै सरस ।
घुरै दमामां घोर, सिंधूड़ा ढाढी चवै ॥ १२१ ॥
साह-कटक पड्यौ सोर, ओरू की ओरू भई ।
रही पदमनी ठोर, रण आये रजपूत रट ॥ १२२ ॥
तीन सहस रजपूत- खाय अमल, घूँमै खड़े ।
पड़े क्रपन के पूत, रॉम रॉम मुख ते रटै ॥ १२३ ॥
जुड़ आये रजपूत, भूत भये कारण भिडण ।
परिहरि जोरू-पूत, खत्री आये खेत पर ॥ १२४ ॥
हवक ग्रहे हथियार, हलके हाथी साज के ।
अंबाड़ी-असवार, पातसाह आयो प्रगट ॥ १२५ ॥
गोरा-वादल वीर, सिर फूलाँ को सेहरो ।
केसर छिटके चीर, सूरे-मीना सापुरस ॥ १२६ ॥

छंद वीरारस

जुडाये जंग, उलसे अग।
गोरा वादल, ताने तग ॥ १२७ ॥

छंद जात रसावलू

कर खंग लिय करि करि, विहंड भुजदंड दिखावै,
पाडलियै पाखरी उलट, अपने दल आवै।
निज साँम-काज भूपत लड़े, काट-काट लावै कमल,
गोरा लगावत जिहाँ खड़ग, तिहाँ पाड़ करै दोइ धड़ ॥ १२८ ॥

छंद पद्धरी (मोतियदाम)

लडै जव गोरल बाँवन वीर, कमाँणक चोट चलावत तीर।
न चूकत रावत एकण चोट, लड़ै, गज लोट सपोटालोट ॥१२९॥
ग्रहै बरछी जब गोरल राय, सु नागन ज्यूँ नर ऊडत खाय।
फोड़त पाखर साथ पलाँण, सु जातन का सिर सुंदर माँण ।१३०।
तजै बरछी, पकड़ें तरवार, घणी खुरसाण सो बीजलसार।
चलावत मीर उतारत सीस, उडावत एक चलावत बीस ॥१३१॥
तजै तरवार गुरज्ज भिड़ाय, दुरज्जन चोट दड़व्वड़ ल्याय।
करै चकचूर गयंद-कपाल, सकै उमराव न आप संभाल ॥१३२॥
कहै मुख मीर ज आयो काल, डरै नर, दे हथियार संभाल।
ग्रहे त्रिन्ह दंत वड़े-वड़े मीर, न मारहु गोरल राव सधीर ॥१३३॥
चल्यो एक मीर ज चोट चलाय, पड्यो धर ऊपर गोरल राय।
पुकार पुकारत गोरल नाँम, करै जब वादल ऐसो काँम ॥१३४॥

कवित्त

सुभट सुभट सुं लड़ग, पडग तिहाँ खड़ग भड़ाभड़,
जुड़ग-जुड़ग जहाँ जुडग, जुडग तहाँ खड़ग धड़ाधड।
मुड़ग मुडग तहाँ मुड़ग, मुडग कोउ अंग न मोड़ग,
गहर गहर गल दंत, भुजे भूपति गह तोड़ग।
संग्राम राम-रावण-सुपरि, जुड़े ज्वान ऐसी जुगति,
सलसलै सेस, सायर सलल, धड़हड़ कंप्यौ धवलहरि ॥ १३५ ॥

कवित्त

चावक चंचल लाइ, उलट अपने दल आवैं,
नेजा लेकर हाथ, जोर दुसमन—सिर लावैं।
नाठे तवहि गयंद, तोफ झीड़ा फड़ पड़ियो,
मारे मुगल अपार, वाल वादल इम लड़ियो।
खुर-खेह सूर झंपत लियो, रैन-दिवस समसिर भयो,
छुटकाय वंध, चाढिय तुरिय, राय भेज घर को दियो ॥ १३६ ॥
भारथ भयो अपार, साट सूरों के तूटे,
मारे ते रिण माझ, जिनाँ के कालज खूटे।
वहुत मुए रजपूत, तुरक को अंत न लहिये,
चले रुधिर के खाल, तीन लोकन मे कहियैं।
भागत मतंग-गज-थाट जब, अपछर मंगल गाइयो,
रणजीत, राय छुटकाय कैं, तव वादल घर आइयो ॥ १३७ ॥
वादल की आरती आय, पद्मनी उतारैं,
मुकताफल भर थाल, भरी सिर ऊपर वारैं।

बहुयड़ दे आसीस, जीव तूं कोड वरीसा,
सूरवीर वंकडा, तूझ गुण गावै ईसा।
वलिहारी तस नांव पर, जिण कत हमारो मेलियो।
गोरा गयंद बादल विकट, धन धन जननी जनमियो ॥ १३८ ॥

दूहा

बादल सुँ नारी कहे, हूं वलिहारी, कंत।
तैं खग मार्यो साह-सिर, दे चरणाँ गजदंत ॥ १३९ ॥
पिय मुख पूँछत प्रेम सुँ, धन बादल भरतार।
बोल निवाह्यो आपणों, सूर जपं जयकार ॥ १४० ॥
काकी बादल सों कहै, गोरल नायो काय।
भिड मूवो कै भाजि कै, सो मुझ बात सुणाय ॥ १४१ ॥
गोरा गिर सू धीर, भिड़ै न भाजें भूम तें।
मार चलावें मीर, मगर चलावै तीर तें ॥ १४२ ॥
जाके लाए अंग, रंग निकासे ते जड़ग।
मारे मनुख तुरंग, गोरा गरजै सिंघ ज्यूं ॥ १४३ ॥
भला हुआ जे भिड़ मूवा, कलंक न आयो कोय।
जस जंपै श्री जगत मे, हिव रिण ढूढ़ो जोय ॥ १४४ ॥
रिण ढूढे नारी तहाँ, साथे सगला लोइ।
सीस न पावै, सो कहा, अंबर वाणी होइ ॥ १४५ ॥

कवित्त

गोरे का सिर ताँम, तुरत तिण गिरझ उठायो,
मुखतै छूटो गिरझ, ताँम देवँगना पायो।

देवँगना तें छूटि, सोइ सिर गगा पडियो,
गगा तें लियो संभु, रुंडमाला में जड़ियो।
सो सोह गोरल भरतार इम, सापवित्र मस्तक भयो।
यो जूझै परकाज-पर, सो गोरो सिवपुर गयो ॥ १४६ ॥

दूहा

नारी इम वाणी सुणी, पिय की पघड़ी साथ।
सती भई आणंद सू, सिवपुर दीनो हाथ ॥ १४७ ॥

गोरा बादल की कथा, पूरण भइ है जाँम।
गुरू-सरस्वती-प्रसाद करि, कविजन करि मन ठाँम ॥ १४८ ॥

सोलैसै असियै समै, फागण पूनिम मास।
वीरा रस सिणगार रस, कहि जटमल सुप्रकास ॥ १४६ ॥

छंद *रिसावला*

वसै मोछ अडोल अविचल, सुखी रइयत लोक,
आणंद घरि-घरि होत ऊछव, देखियत नहिं सोक ॥ १५० ॥

राजा जिहाँ अलिखाँन न्याजी, खान-नासिर-नंद,
सिरदार सकल पठान विच है, ज्यों नखत्रे चद ॥ १५१ ॥

धर्मसी को नद, नाहर जात, जटमल नाँउ,
जिण कही कथा बनाय कें, विच संवला के गाँउ ॥ १५२ ॥

कहताँ तहाँ आनन्द उपजैं, सुन्याँ सब सुख होय,
जटमल पयंपै, गुनि जनो, विघन न लागै कोय ॥ १५३ ॥



लब्धोदय कृत पद्मिनी चरित्र चौ० में प्रयुक्त देशी-सूची

खण्ड—१

(१) चौपाई—रामगिरी

(२) योगनारा गीत री, राग-मल्हार

(३) करता सुं तो प्रीति सहु हूँसी करै रे

(४) सिहरा सिहर मधुपुरी रे, कुमरा नन्दकुमार

(५) ढुढणीयां मेवाड़ी देशी—मेवाड देशे प्रसिद्धास्ति

(६) ता भव बन्धण थी छोड़ हो नेमीसर जी

(७) जाइ रे जीयरा निकसि के, तथा—वात म काढो रे व्रत तणी

खण्ड—२

(१) वागलिया री

(२) राग गौड़ी—मन भमरा रे

(३) ढाल-अलवेल्यानी, कहिनइ किहां थी आविया रे लाल

(४) राग मारू—वाल्हा ते विदेशी लागे वालहो रे, ए गीत नी

(५) राग मल्हार—सहर भलो पण साकड़ो रे नगर भलो पण दूर

(६) कोई पूछो वाभण जोसी रे, ए देसी अथवा यतनी

(७) मनसा जे आणीं

खण्ड—३

(१) भणइ मन्दोदरी दैत्य दसकन्ध सुण (राग-आसा सिधु कड़खारी)

(२) चरणाली चामुण्डा रण चढै

(३) वात म काढो व्रत तणी, काची कली अनार की रे

(४) तिण अवसर वाजै तिहा रे ढंढेरा नो ढोल, २ मेवाड़ी दरजण री

(५) अलबेल्या नी

(६) हसला नै गल गूघरमाल कि हंसलो भलो

(७) रागमारु—पंथी एक संदेशड़ो, कपूर हुवे अति ऊजलो रे

(८) मेवाड़ी राजा रे चितोड़ी राजा रे

(९) एक लहरी लै गोरिला रे

(१०) राग मारु—नाइलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे

(११) मधुकरनी

(१२) श्रेणिक मन अचरज थयो

(१३) नदी यमुना के तीर उड़ै दोय पंखिया

(१४) म्हारा सुगुण सनेही आतमा

(१५) सइ सुख हुं न सकु कही आडी आवै लाज

(१६) वन्दना करूं वार-वार ए ढेसी प्राहुणा री

(१७) सावजी भले पधार्यां आज

(१८) वलध भला छे सोरठा रे

(१९) सदा रे सुरंगा थे फिरो, आज विरंगा काय

(२०) नाथ गई मोरी नाथ गई

(२१) गच्छपति गाइयइ हो युगप्रधान जिनचन्द

(२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा

(२३) करड़ो तिहा कोटवाल, राग-खमाइती सोला की या मारु

(२४) धन्यासी—लोक सरूप विचारो आतम हित भणी

विशेष नाम सूची

(३) बात म काढो व्रत तणी, काची कली अनार की रे

(४) तिण अवसर वाजै तिहां रे ढढेरा नो ढोल, २ मेवाड़ी दरजण री

(५) अलवेल्या नी

(६) हसला नै गल गूघरमाल कि हंसलो भलो

(७) रागमारु—पंथी एक संदेशड़ो, कपूर हुवे अति ऊजलो रे

(८) मेवाड़ी राजा रे चितोड़ी राजा रे

(९) एक लहरी लै गोरिला रे

(१०) राग मारू—नाहलिया न जाए गोरी रे वणहटै रे

(११) मधुकरनी

(१२) श्रेणिक मन अचरज थयो

(१३) नदी यमुना के तीर उड़े दोय पंखिया

(१४) म्हारा सुगुण सनेही आतमा

(१५) सइंमुख हुं न सकु कही आडी आवै लाज

(१६) वन्दना करूं वार-वार ए देसी प्राहुणा री

(१७) साधजी भले पधार्या आज

(१८) वलध भला छे सोरठा रे

(१९) सदा रे सुरगा थे फिरो, आज विरंगा काय

(२०) नाथ गई मोरी नाथ गई

(२१) गच्छपति गाइयइ हो युगप्रधान जिनचन्द

(२२) वाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा

(२३) करड़ो तिहा कोटवाल, राग-खमाइती सोला की या मारू

(२४) धन्यासी—लोक सरूप विचारो आतम हित भणी

